नई किरण
हिंदी पाठमाला
7

नई किरण

हिंदी पाठमाला

7

Franklin PUBLICATION

Creation helps the mankind

Designed By :

Editone International Pvt. LTd.

Copyright Reserved © Editone International Pvt. Ltd.

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or copied in any material form (including photo-copying or storing it in any medium in form of graphics, electronic or mechanical means and whether or not transient or incidental to some other use of this publication) without written permission of the copyright owner. Any breach of this will entail legal action and prosecution without further notice.

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner therefrom.

- Publisher

आमुख

विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल एवं स्पष्ट माध्यम भाषा है। भाषा में सम्मिलित कौशलों की सहायता से विचारों का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शैक्षिक प्रणाली का अहम योगदान होता है। इस प्रणाली में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल का समावेश होना आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक में भाषा के चारों कौशल–श्रवण, वाचन, पठन, लेखन के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पर बल दिया गया है। पुस्तक में चिंतन-मनन (Thinking), विश्लेषण (Analysis), कल्पनाशीलता (Imagination), रचनात्मकता (Creativity), मूल्यांकन (Evaluation) को भी समाहित किया गया है। इसमें निर्धारित मानक वर्तनी का प्रयोग किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों की भाषा में बारीक समझ को विकसित करने में सक्षम है। इस पुस्तक में पाठ नियोजन करते समय विद्यार्थियों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं खोजबीन प्रवृति का विशेष ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक की पाठ्य-सामग्री बच्चों के स्तरानुकूल, सरल, सहज एवं रोचक रूप में प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तक में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 को ध्यान में रखकर सभी मूल्यों को तार्किक रूप से अपनाया गया है। रचनात्मक लेखन के अंतर्गत–कविता, कहानी, चित्र-कथा, संवाद, यात्रा-वर्णन एवं पत्र-लेखन आदि को शामिल किया गया है ताकि भाषा प्रयोग पर विद्यार्थियों की पकड़ मज़बूत बन सके, साथ ही विद्यार्थी व्याकरण का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर पाएँ।

इस शृंखला में विद्यार्थियों को ऐसा मंच देने का प्रयास किया गया है, जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ से सोच-समझकर प्रश्नों का उत्तर दे सकें, साथ ही संवाद या चर्चा के द्वारा अपने सहपाठियों का भी दृष्टिकोण समझ पाएँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पुस्तक छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी।

–प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
	अवसर की चूक (चित्रकथा)	5
1.	शक्ति और क्षमा (कविता)	8
2.	विक्रमादित्य का सिंहासन (कहानी)	15
3.	अतिथि देवो भव: (एकांकी)	22
4.	स्नेह-शपथ (कविता)	30
5.	अमरनाथ की यात्रा (यात्रा वृतांत)	36
6.	सरोजिनी नायडू (जीवनी)	44
7.	क्या निराश हुआ जाए? (निबंध)	50
8.	दोहावली (कविता)	58
9.	काकी (कहानी)	65
10.	इब्राहिम गार्दी (कहानी)	71
11.	सम्मान (कहानी)	79
12.	दीवानों की हस्ती (कविता)	87
13.	एनी बेसेंट (जीवनी)	94
14.	भगत सिंह के पत्र (पत्र)	102
15.	आदर्श माता जीजाबाई (कहानी)	108
16.	तात्या टोपे (संवाद)	116
	अभ्यास प्रश्न पत्र-1	125
	अभ्यास प्रश्न पत्र-2	127

अवसर की चूक
(चित्रकथा)

अध्याय

एक बार एक धोबी अपने गधे पर सामान लादकर शहर से लौट रहा था। रास्ते में उसे एक चमकदार पत्थर दिखाई पड़ा। उसने पत्थर को उठाकर गधे के गले में बाँध दिया।

तभी दूसरी तरफ़ से एक जौहरी घोड़े पर सवार होकर वहाँ से गुज़र रहा था, उसकी नज़र गधे के गले में बँधे उस चमकते पत्थर पर पड़ी। वह उस पत्थर को देखते ही समझ गया कि यह कोई साधारण पत्थर नहीं बल्कि हीरा है। उसने धोबी से कहा...

धोबी ने संकोच के साथ कहा...

जौहरी बहुत कंजूस और लालची था। उसने सोचा कि धोबी को कुछ पता तो है नहीं, इसलिए जौहरी यह सोचकर आगे बढ़ने लगा कि धोबी के लिए तो यह सिर्फ साधारण पत्थर है और वह अभी स्वयं मुझे बुलाकर यह पत्थर चार आने में दे देगा।

अभी पहला जौहरी थोड़ी दूर बढ़ा ही था कि वहाँ एक दूसरा जौहरी आ पहुँचा। उसने भी गधे के गले में बँधा पत्थर देखा और पहचान गया कि वो हीरा है। जौहरी बोला...

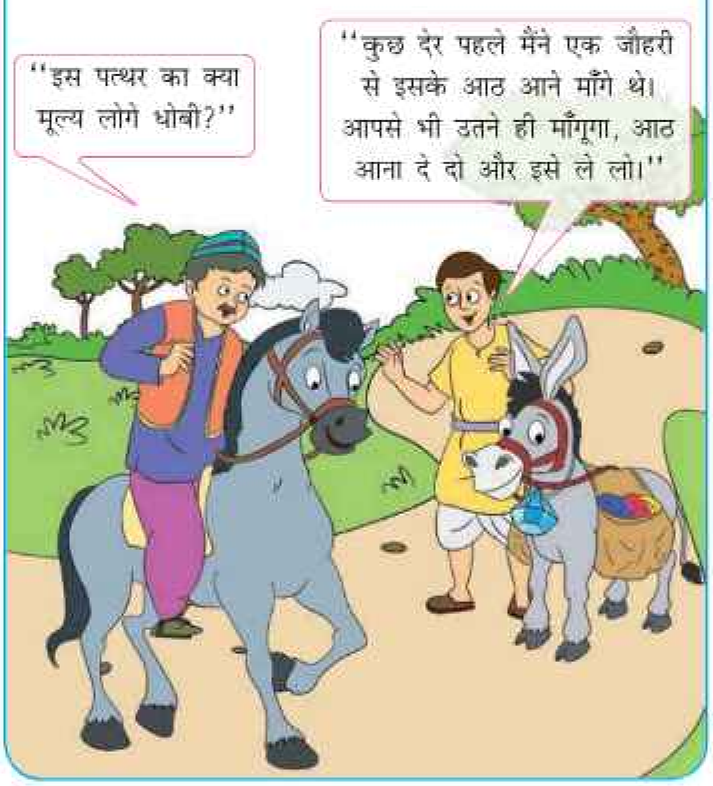

दूसरे जौहरी ने बिना समय गँवाए धोबी को आठ आना दिए और वह कीमती पत्थर हासिल कर लिया।

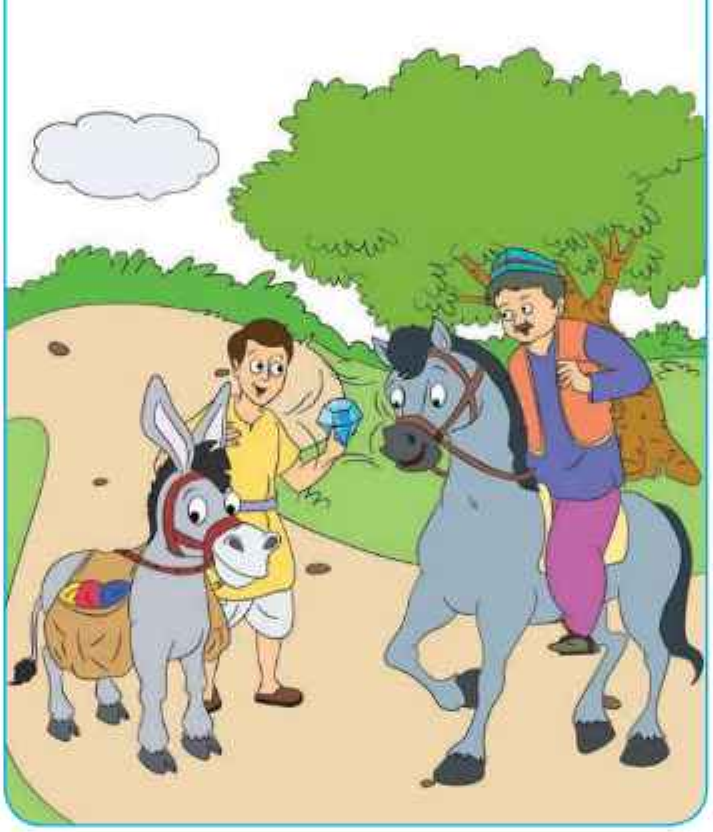

कुछ दूर जाकर पहले जौहरी ने अपना विचार बदला और यह सोचकर लौटने लगा कि वह ''आठ आना देकर ही वह हीरा खरीद लेगा।''

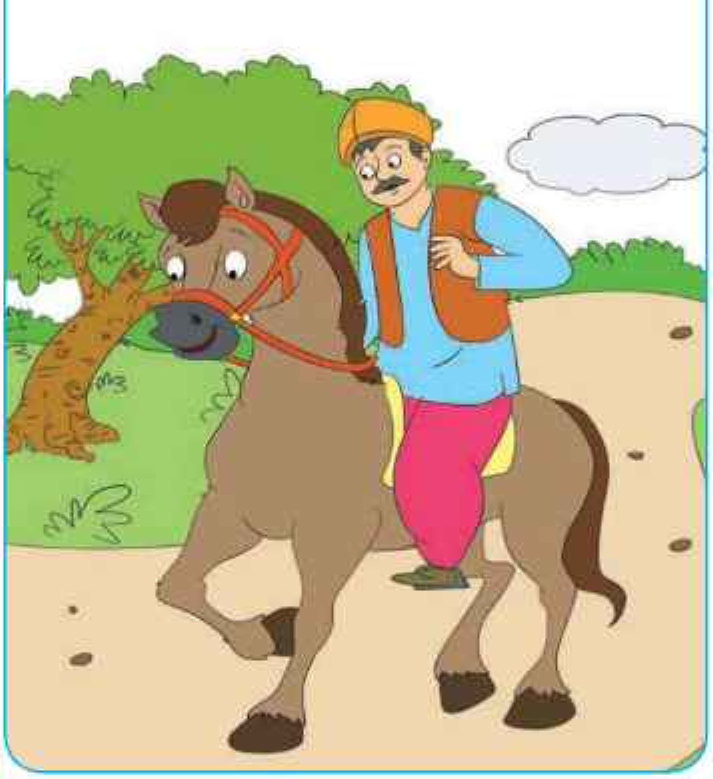

लेकिन जब तक वह धोबी के पास पहुँचा हीरा तब तक बिक चुका था। दूसरे जौहरी के वहाँ से चले जाने के बाद उसने धोबी से कहा..

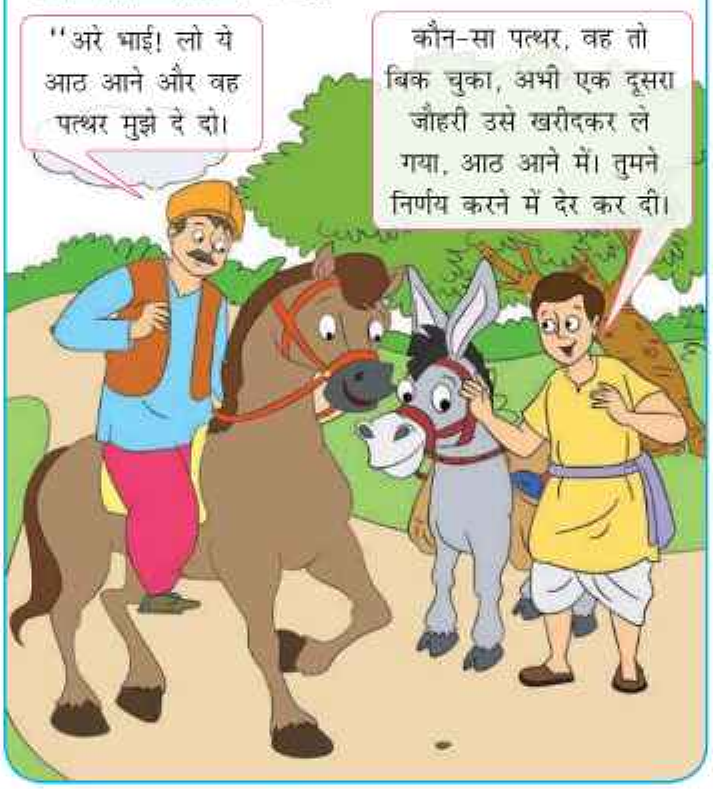

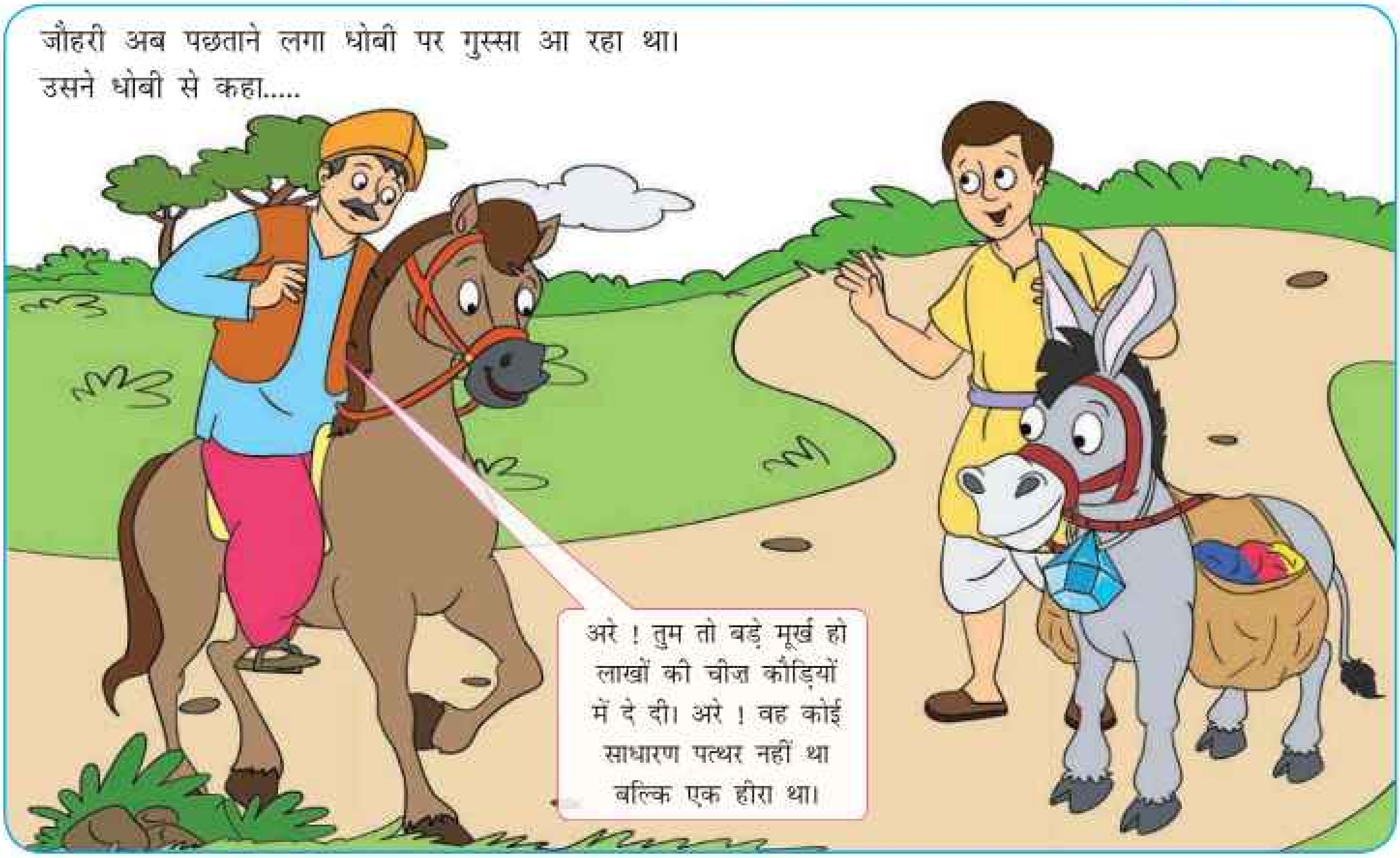

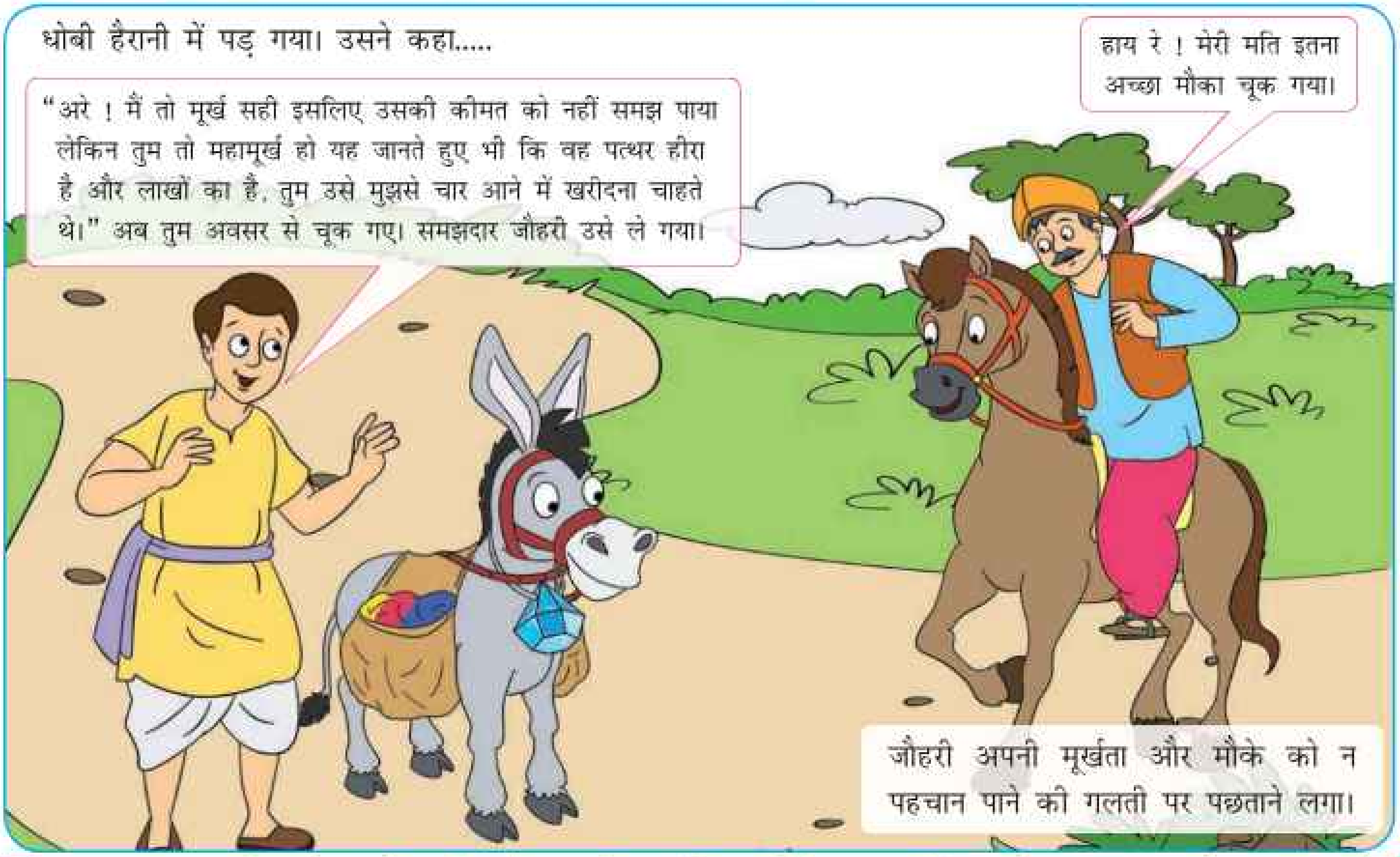

शिक्षा – समय रहते हमें अपने कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए क्योंकि समय बीत जाने पर पछतावा के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगता।

अध्याय 1

शक्ति और क्षमा
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

शक्ति के बिना किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है।

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा।
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे,
कहो, कहाँ, कब हारा।

क्षमाशील हो रिपु-समक्ष तुम,
विनत हुए जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको, कायर,
समझा उतना ही।

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित,
विनीत सरल हो।

तीन दिवस तक पथ माँगते,
रघुपति सिंधु-किनारे।
बैठे पढ़ते रहे छंद,
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

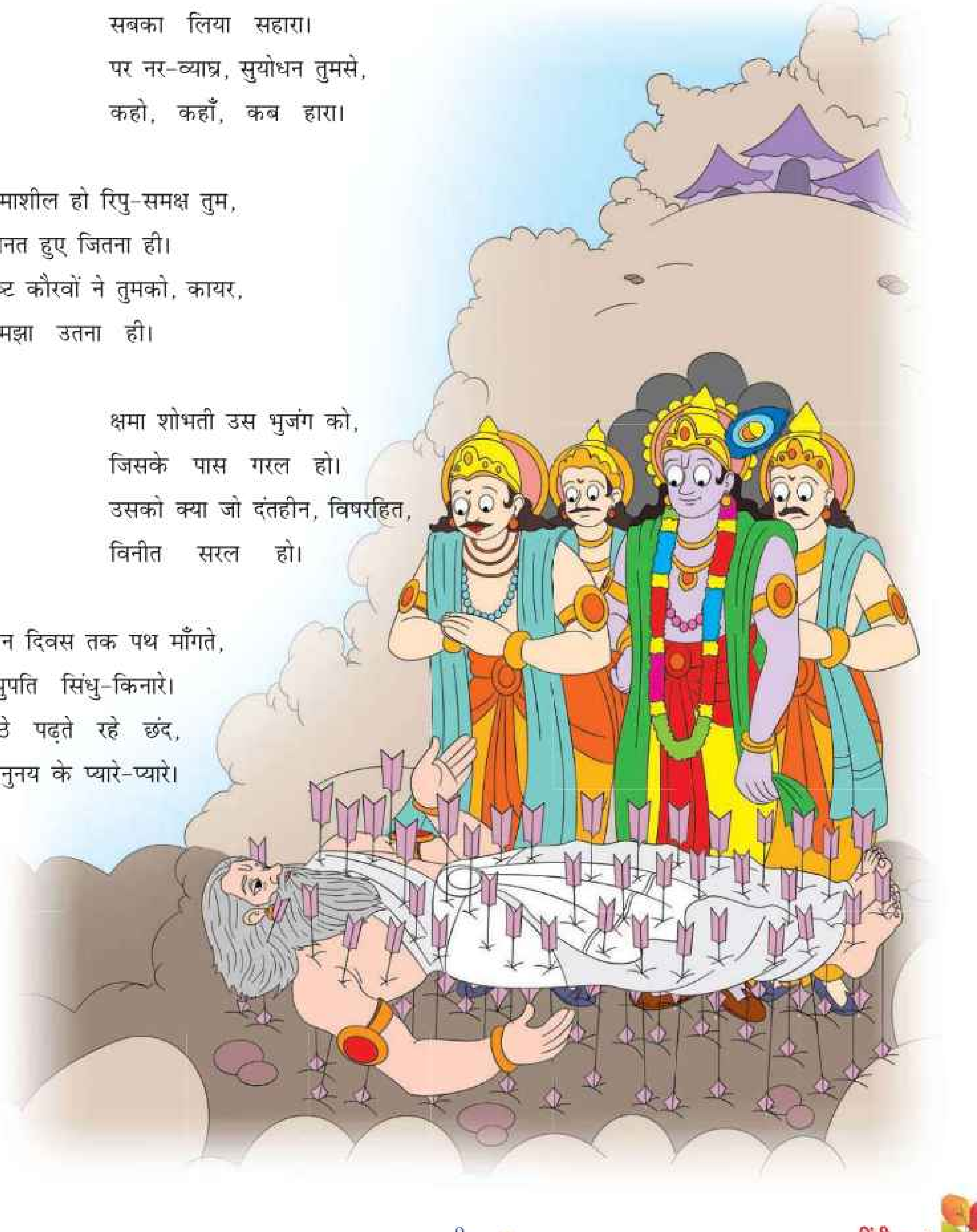

उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।
उठी अधीर धधक पौरुष से,
आग राम के शर से।
सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि,
कहता आ गिरा शरण में।
चरण पूज दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।
सच पूछो तो, शर में ही,
बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन समपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके,
पीछे जब जगमग है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

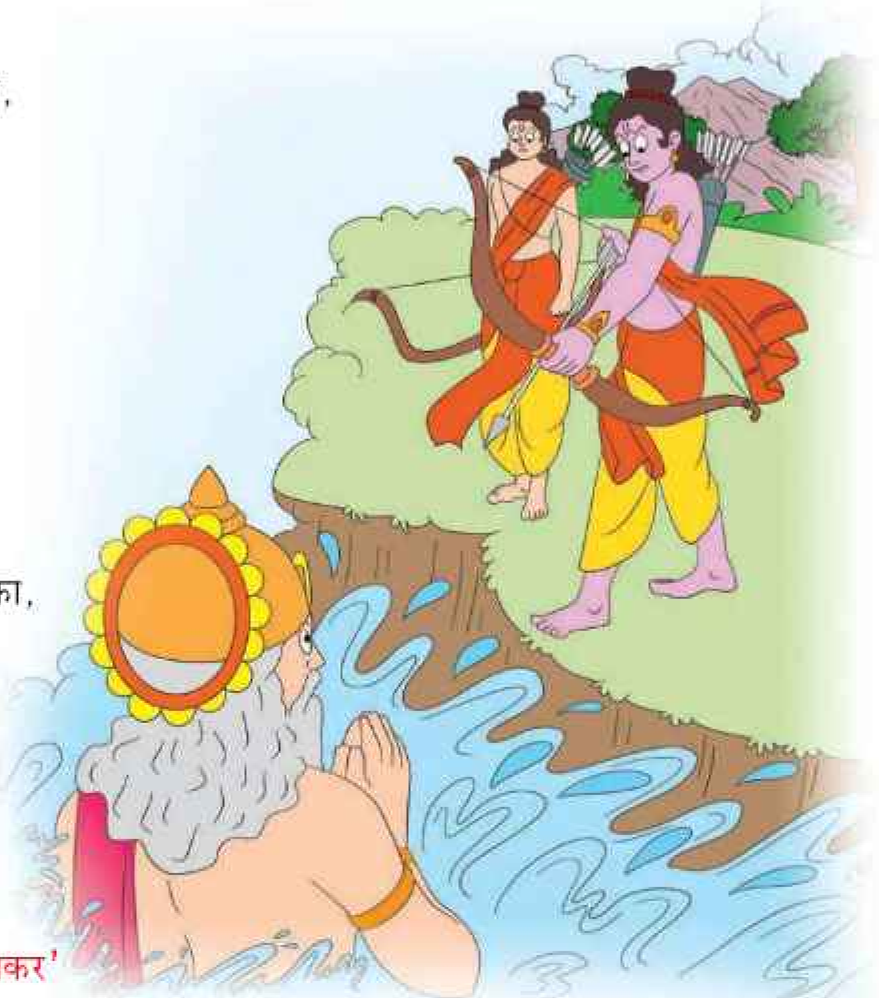

शब्दार्थ

नर-व्याघ्र	= मनुष्यरूपी सिंह	अनुनय	= खुशामद
मूढ़	= मूर्ख	भुजंग	= साँप
शर	= बाण	गरल	= विष
रिपु	= शत्रु	संधिवचन	= सुलह की बातें
नाद	= शब्द		

उच्चारण करें

समपूज्य त्राहि-त्राहि ग्रहण सहनशीलता क्षमाशीलता
दंतहीन अधीर सुयोधन मनोबल

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति को हासिल करने के विषय में बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) प्रस्तुत कविता में रघुपति किस से पथ मांगते हैं?

(ख) पुरुषार्थ की पहचान किन मूल्यों से होती है?

(ग) रघुपति की शरण में त्राहि-त्राहि कर कौन आ गिरा?

(घ) विजय शक्ति की प्राप्ति कैसे संभव है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि क्या है एवं वक्ता की भूमिका का निर्वाहन किसने किया है?

....

(ख) क्षमावान शत्रु यदि सामने हो तो युद्ध का परिणाम क्या होगा?

....

(ग) युधिष्ठिर ने दुर्योधन को किन गुणों का सहारा लेकर हराया?

....

(घ) शत्रु किससे भयभीत होकर नतमस्तक हो जाता है?

....

3. कविता की छूटी हुई पंक्तियाँ पूरी कीजिए।

(क) उतर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।
....
....

(ख) क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
....
....

(ग) सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।

....

....

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) किसके बिना क्षमा आदि गुण शोभित नहीं होते?

☐ धन ☐ राज्य ☐ शक्ति ☐ क्रोध

(ख) जग कब पूजता है?

☐ जब बल दर्प हो ☐ जब जगमग हो ☐ जब विनय हो ☐ जब ये तीनों हो

(ग) तीन दिवस तक सिंधु से किसने पथ माँगा?

☐ समुन्द्र ने ☐ रघुपति ने ☐ दुर्योधन ने ☐ युधिष्ठिर ने

(घ) दुर्योधन-

☐ क्षमाशील था ☐ विनयी था ☐ हिंसक था ☐ स्वार्थी था

5. सही कथन पर (✓) का अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) श्रीराम जी के धनुष पर बाण चढ़ाने से समुद्र त्राहि-त्राहि करने लगा। ☐

(ख) शक्ति के बिना नम्रता और प्रार्थना का कोई आदर नहीं करता। ☐

(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' है। ☐

(घ) प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव प्रलोभन एवं शक्ति है। ☐

6. सही मिलान कीजिए।

(क) भुजंग	शर
(ख) धनुष	सिंधु
(ग) संधि-वचन	गरल
(घ) नर-व्याघ्र	सुयोधन

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव क्या हैं? और क्यों है? सोचकर लिखिए।

....

....

8. दुर्योधन युधिष्ठिर के क्षमा, दया, विनीत और नम्र आदि गुणों को क्या समझता था? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

9. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताइए।

(क) शत्रु – ……… ……… ………

(ख) विष – ……… ……… ………

(ग) बाण – ……… ……… ………

(घ) समुंद्र – ……… ……… ………

10. दिए गए शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए।

(क) नर – .... (च) क्षमा – ....

(ख) दया – .... (छ) शक्ति – ....

(ग) सिंधु – .... (ज) बाण – ....

(घ) रघुपति – .... (झ) त्याग – ....

(ङ) व्याघ्र – .... (ञ) गौरव – ....

11. संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) उल्लास – .... (ख) युधिष्ठिर – ....

(ग) कदापि – .... (घ) दंतहीन – ....

12. दिए गए शब्दों में उपसर्ग पहचानकर लिखिए।

(क) पौरुष – .... (ख) अनुनय – ....

(ग) सुयोधन – .... (घ) अधीर – ....

13. दिए गए शब्दों की वर्तनी को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) दिप्ती – .... (ख) भूजंग – ....

(ग) सकक्षम – .... (घ) गृहन – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

14. श्रीराम जी के उन गुणों को बताइए जिसके कारण उनके बल का दर्प जगमगाता है।

15. दुर्योधन अपने किन दोषों के कारण हार गया था? नाम बताइए।

16. कविता के आधार पर बताइए निम्न प्रकृति किससे संबंधित है?

(क) क्षमावान – .... (ख) नर-व्याघ्र – ....

(ग) मूढ़ – .... (घ) दयालु – ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

17. 'शक्ति और क्षमा' जैसे मूल्यों का सदैव परिस्थिति अनुसार ही उपयोग करना चाहिए। आप किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

अध्याय 2

विक्रमादित्य का सिंहासन
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

चंद्रगुप्त मौर्य

राजा कृष्णदेव राय

सम्राट अशोक

सम्राट मिहिर भोज

- उपरोक्त चित्र में दिए गए राजाओं के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

कहानी का मूल तत्व

सम्राट विक्रमादित्य की तरह हमें भी न्यायप्रिय होना चाहिए।

विक्रमादित्य के नाम से सभी लोग परिचित हैं। वह भारत के गौरवातीत सर्वोत्तम सम्राटों में से एक रहे है। उसका शासनकाल भारतवर्ष के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। विक्रम संवत् का आरंभ उसी से होता है। यद्यपि विक्रमादित्य का नाम इतना प्रसिद्ध है, परंतु आश्चर्य है कि हम उसके जीवन के विषय में कुछ तथ्यपरक जानकारी नहीं रखते।

विक्रमादित्य के विषय में कुछ निर्विवाद बातें लोगों के मन में घर कर गई हैं। जो उसके विषय में प्रचलित कहानियों के माध्यम से खुद को मनोरंजित करते हैं। उसने अपनी प्रजा के साथ निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया। उसे ज्ञानी लोगों से अधिक प्रेम था जिन्हें वह अपने दरबार में विलक्षण प्रतिभा के रूप में रखता था।

ऐसा माना जाता है कि विक्रमादित्य ने कभी किसी निर्दोष को दंडित नहीं किया। न्याय करने में वह कभी धोखा नहीं खा सका। अपराधी को जब विक्रमादित्य के सामने लाया जाता था, तो वह दंड के भय से काँपने लगता था। अपराधी को इस तथ्य का पता होता था कि विक्रमादित्य की आँखें उसके अपराध को पहचान ही लेंगी। लोग अपनी समस्याओं का उत्तम समाधान विक्रमादित्य के माध्यम से ही कर पाते थे। उसके पश्चात् भी यदि भारत में कोई न्यायाधीश अपनी पूर्ण योग्यता से निर्णय सुनाता था, तो उसके बारे में कहा जाता था कि वह विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठा होगा।

विक्रमादित्य ने अपने राज्य की राजधानी उज्जैन को बनाया था। प्राचीनकाल में उज्जैन नगरी कला और संस्कृति का केंद्र थी। परंतु समय के साथ-साथ इस नगरी के महत्व को लोग भूलते गए। जिस न्याय-सिंहासन पर बैठकर विक्रमादित्य न्याय किया करते थे, उसे भी समय के चलते लोग विस्मृत करते गए। उसका स्वर्णिम काल गए जमाने की बात हो गई। विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र अवशेष बनकर रह गया है, जिसके टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए हैं। निकटवर्ती गाँवों के लोग सायंकाल के समय गुजरते हुए ठहर जाते थे। उनमें से एक लड़का सब पशु चरवाहों सहित उसके चारों ओर एकत्र हो जाते और एक साथ घर लौटते थे। उज्जैन के पास गाँवों के चरवाहों के लड़के चारागाह में हँसी-मजाक करके समय गुजारने के अनुभवी थे। वे दिन भर खेलते रहते और मवेशी चर कर अपना पेट भरते रहते थे।

एक दिन बच्चों को खेलने के लिए मनोहारी मैदान मिल गया। ऊबड़-खाबड़ मैदान वृक्षों के बीच स्थित था। मैदान के बीच में स्थित टीला किसी न्यायाधीश के सिंहासन की तरह लग रहा था। एक लड़का दौड़कर सिंहाहन पर जा बैठा और बोला, "लड़कों, मैं अब न्यायाधीश बनूँगा और तुम सब अपने मुकदमे मेरे पास लाओगे। मैं तुम्हारी सुनवाई करूँगा।" दूसरे लड़के ने जब यह तमाशा देखा तो वह झगड़ा करने लगा। प्रत्येक दल ने अपनी-अपनी बात कही। एक ने कहा-"अमुक खेत हमारा है।" और दूसरे ने

कहा–"नहीं, हमारा है। इस प्रकार वे कहते गए। वे सब चाहते थे कि वह इस झगड़े को निपटाए। तभी वहाँ के वातावरण में परिवर्तन हुआ। सभी को विचित्र-सा अहसास हुआ। टीले पर बैठने से पहले जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

वह शांत और गंभीर हो गया था और उसकी बातचीत का ढंग तथा मुखमुद्रा इतने अद्‌भुत और प्रभावशाली हो गए थे, कि शेष लड़के उससे आतंकित हो गए थे। फिर भी उन्होंने सोचा कि यह केवल मज़ाक है और फिर एक नया मुकदमा उसके सामने रखा और एक बार फिर उसने अपना निर्णय सुना दिया। इस प्रकार घंटों तक यह क्रम चलता रहा। न्यायाधीश के सिंहासन पर बैठा हुआ वह उसी गंभीरता से लौटने के समय तक शिकायत सुनकर निर्णय देता रहा और फिर अपने स्थान से नीचे कूदा और दूसरे चरवाहा लड़कों के समान हो गया।

इसके बाद से वह चरवाहे का लड़का इतना प्रसिद्ध हुआ कि सभी पेचीदा झगड़े उसके सामने रखे जाते थे

और बार-बार वैसा ही होता था। जब वह उस स्थान से नीचे उतरकर आता तो उसमें और अन्य लड़कों में कोई अंतर न होता था।

धीरे-धीरे निकट-दूर सभी गाँवों के बड़ी अवस्था के सभी स्त्री-पुरुष अपने झगड़े उस चरवाहे के लड़के के सामने लाने लगे और वहाँ सदैव उन्हें ऐसा निर्णय मिलता था, जिसे दोनों दल मान लेते थे और संतुष्ट होकर चले जाते थे।

अपनी राजधानी में बैठकर जब ऐसी खबरों का आभास राजा के कानों में पड़ा। तो उसने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वह ज़रूर राजा विक्रमादित्य का न्याय सिंहासन होगा। फिर वह विचार मग्न होकर सोचने लगा कि पत्थर पर बैठने मात्र से लड़के में न्यायिक ज्योति आ सकती है, तो हमें क्यों न गहराई में खोदकर सिंहासन ढूँढ लेना चाहिए। तत्पश्चात् मैं भी विवादों का श्रवण करके न्याय निर्णयन करूँगा।

कुदालों और फावड़ों से वह घास का टीला खोदा गया। वह लड़का जो स्वयं न्यायाधीश बनता था, बड़ा दुखी हुआ। उसने ऐसा अनुभव किया जैसे उसकी कोई अति प्रिय वस्तु उससे छीनी जा रही हो। अंत में श्रमिकों ने कोई वस्तु देखी। उन्होंने उसे खोला तो उसके नीचे काले संगमरमर का चौकोर तख्त पाया जो पत्थर के बत्तीस देवदूतों के हाथों और पंखों पर टिका हुआ था। अवश्य ही वह विक्रमादित्य का सिंहासन था। खुशी-खुशी उसे नगर में लाया गया और न्याय-कक्ष में रखा गया। राजा ने अपनी प्रजा को तीन दिन तक उपवास रखने और प्रार्थना करने का आदेश दिया और घोषणा की कि चौथे दिन वह सार्वजनिक रूप से इस सिंहासन पर बैठेगा।

अंत में वह दिन आया। राजा को अपना सिंहासन ग्रहण करते हुए देखने के लिए भारी भीड़ जमा हो गई। इस बड़े कक्ष से होते हुए राजा के साथ राज्य के पुरोहित तथा न्यायधीश भी आए। जब वे सिंहासन के पास आए तो दो पंक्तियों में बँट गए। राजा उनके बीच से गुजरे। जब राजा सिंहासन पर बैठने वाले थे, तो उनमें से एक देवदूत ने बोलना शुरू किया। उसने कहा–"रुको! क्या तुम स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने के योग्य समझते हो? क्या तुमने ऐसे राज्यों पर शासन करने की इच्छा नहीं की, जो तुम्हारे नहीं थे?"

थोड़ी देर तक राजा कोई उत्तर न सोच सका। वह जानता था कि उसका जीवन न्यायपूर्ण नहीं था। बहुत देर तक चुप रहने के बाद वह बोला–"नहीं, मैं इसके योग्य नहीं हूँ।" देवदूत ने कहा–"तो फिर जाओ और तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करो जिससे तुम स्वयं को पवित्र कर सको और सिंहासन पर बैठने योग्य बन सको।" ये शब्द कहकर उसने अपने पंख फैलाए और उड़ गया।

राजा ने पुन: व्रत और प्रार्थना करके स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने योग्य बनाया। परंतु इस बार भी वैसा ही हुआ। दूसरे पत्थर के देवदूत ने पूछा कि क्या उसने कभी दूसरों की धन-संपत्ति लेने की नहीं सोची। राजा ने स्वीकार किया कि उसने ऐसा किया है और इसलिए वह सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है। इस प्रकार जब भी राजा ने सिंहासन पाने की चेष्टा की, उससे किसी-न-किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक उस पत्थर को पकड़े केवल एक देवदूत रह गया। राजा बड़े आत्मविश्वास के साथ सिंहासन के पास गया, क्योंकि उसे लग रहा था कि उस दिन उसे अवश्य ही अपना स्थान ग्रहण करने की अनुमति मिल जाएगी।

परंतु जैसे ही वह सिंहासन के पास पहुँचा, अंतिम देवदूत बोला–"ऐ राजा! क्या तुम्हारा हृदय बच्चे के समान बिल्कुल शुद्ध है? यदि ऐसा है तो तुम वास्तव में सिंहासन पर बैठने योग्य हो।"

राजा ने बहुत धीरे से कहा–"नहीं, नहीं! मैं इस योग्य नहीं हूँ।" यह सुनते ही देवदूत उस सिंहासन को अपने सिर पर रखकर आकाश में उड़ गया।

इस प्रकार विक्रमादित्य का न्याय-सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया।

शब्दार्थ

तथ्य	= आवश्यक बातें जिनसे सूचनाएँ प्राप्त हों	निकटवर्ती	= समीप के, नज़दीक के
मनोहारी	= आकर्षक, मन को अच्छे लगने वाले	निर्णय	= फैसला
मुकदमा	= वाद, विवाद	न्यायाधीश	= न्याय करने वाला

उच्चारण करें

विक्रमादित्य गौरवातीत आश्चर्य न्यायाधीश प्राचीनकाल

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विक्रमादित्य की जीवन गाथा से अवगत कराएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विक्रमादित्य में किस प्रकार की अद्‌भुत योग्यता थी?

(ख) प्रसिद्‌ध सम्राट विक्रमादित्य अपने दरबार में किस प्रकार के लोगों को रखते थे?

(ग) प्राचीनकाल में उज्जैन को किस प्रकार की प्रसिद्धि हासिल थी?

(घ) पत्थर के सिंहासन पर बैठकर चरवाहा किस प्रकार की मुखमुद्रा का अनुसरण कर लेता था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विक्रमादित्य के सम्मुख लाया गया अपराधी किस तथ्य से परिचित होता था?

....

(ख) राजा किस प्रकार की खबरों को सुनकर उत्तेजित हो उठा?

....

(ग) राजा के सिंहासनरूढ़ होने के पूर्व पहले देवदूत ने क्या प्रश्न किया?

....

(घ) अंतिम देवदूत, राजा से प्रश्न करके क्या व्यक्त करना चाहता था?

....

(ङ) सिंहासन के नगर आगमन पर राजा ने क्या घोषणा की?

....

3. उचित शब्दा का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(क) विक्रमादित्य ने कभी किसी .... को दंडित नहीं किया।

(ख) राजा विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र .... बनकर रह गय है।

(ग) .... पर बैठने से जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

(घ) श्रमिकों ने जब अति प्रिय वस्तु को खोला तो उसके नीचे .... काले का चौकोर तख़्त पाया।

(ङ) जब भी राजा .... ने पाने की चेष्ट की उससे किसी न किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा।

4. उचित विकल्प का चयन करके सही (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी कहाँ स्थित थी?

☐ उज्जैन ☐ पचमढ़ी ☐ प्रयाग ☐ अवध

(ख) लड़का कौन से अभिनय को करते हुए चेहरे को सीधा कर गंभीर मुद्रा में बैठ गया।

☐ सिपाही ☐ मंत्री ☐ न्यायधीश ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) चारागाह के पास का खंडहर किस का महल हुआ करता था?

☐ भोज ☐ अशोक ☐ श्रीगुप्त ☐ विक्रमादित्य

(घ) राजा अपने जीवन के बारे में क्या जानता था?

☐ वह कभी सफल नहीं हुआ ☐ वह न्यायपूर्ण नहीं था

☐ वह निरर्थक था ☐ इनमें से कोई नहीं

5. सही वाक्य पर (✓) अथवा गलत वाक्य पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) राजा विक्रमादित्य निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया करते थे। ☐

(ख) टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए थे। ☐

(ग) चरवाहे का लड़का सदैव एक ही भाव भँगिमा में रहा करता था। ☐

(घ) टीले को खोदने के लिए कुछ विशेष प्रकार के यंत्रों का प्रयोग किया गया था। ☐

(ङ) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया। ☐

6. सही मिलान कीजिए।

(क) सम्राट	लड़के की
(ख) चरवाहे का लड़का	सिंहासन
(ग) विचित्र मुख-मुद्रा	बत्तीस
(घ) न्याय का	न्यायधीश
(ङ) देवदूतों की संख्या	विक्रमादित्य

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. सदाचारी एवं दुराचारी व्यक्ति एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न होते हैं? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. दिए गए शब्दों को विच्छेदित करते हुए लिखिए।

(क) न्यायधीश – .... (ख) विक्रमादित्य – ....

(ग) सिंहासन – .... (घ) उज्जैन – ....

9. दिए गए शब्दों का शुद्धीकरण करके लिखिए।

(क) पूरौहित – .... (ख) संसक्रति – ....

(ग) मूखमूदरा – .... (घ) परतीभा – ....

10. दिए गए प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द निर्मित कीजिए।

(क) औटी – ....

(ख) इयल – ....

(ग) ऊ – ....

(घ) आप – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

13. अपने आसपास के वातावरण का अवलोकन करते हुए कोई एक कहानी का लेखन कीजिए।

13. अन्यायी राजा की तुलना में न्यायिक व्यक्ति की अधिक महत्ता होती है। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

14. वर्तमान न्यायपालिका को किस प्रकार वगीकृत किया गया है? लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

15. जहाँ व्यक्ति को निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्यय की आशा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं। आप इस गुण को अपने जीवन में किस प्रकार अनुसरित करना चाहेंगे?

अध्याय 3

अतिथि देवो भवः
(एकांकी)

अध्ययन से पूर्व

एकांकी का मूल तत्व

आत्मत्याग की भावना, पाषाण और वज्र हृदयों को भी मोम-सा कोमल बना देती है।

पहला दृश्य

अरावली का सुनसान वन। एक छोटी-सी सरिता कल-कल करती हुई बह रही है। सरिता के तट पर दो बच्चे खेल रहे थे। उनमें एक का नाम सुंदर और दूसरे का नाम चंपा है।)

सुंदर : क्यों बहन चंपा, हम दोनों राजा की संतान हैं न?

चंपा : हाँ भाई।

सुंदर : तो फिर हम दोनों को आधा पेट खाकर ही प्रतिदिन क्यों सो जाना पड़ता है? तुम तो अपनी कहानियों में कहा करती थीं कि राजाओं के पुत्र बड़े राजभवनों में रहते हैं और उन्हें बहुत अच्छा खाना भी मिला करता है।

चंपा : (उदास होकर) किंतु हम दोनों उन राजाओं की संतान के समान सुंदर नहीं हैं। हमारे और उनके जीवन में जमीन और आसमान का अंतर है।

चंपा : हाँ, राजा की संतान हैं, किंतु उस राजा की संतान हैं, जिसने अपने देश के गौरव के लिए वनों को अपना राजभवन और फल-फूलों को अपना आहार बनाया है।

सुंदर : तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही है, बहन!

चंपा : अभी तुम मेरी इस बात को नहीं समझ सकोगे सुंदर ! जब कुछ सयाने हो जाओगे तब अपने आप समझ जाओगे।?

सुंदर : तुम्हारी इस बात को इस समय मैं समझना भी नहीं चाहता बहन, मैं तो इस समय भूख से व्याकुल हो रहा हूँ। तुम जानती हो, कल मुझे रोटी का एक छोटा-सा टुकड़ा ही खाने को मिला था। अब नहीं रहा जाता बहन। चलो, नदी का दो घूँट जल पीकर ही भूख शांत करें।

चंपा : नहीं सुंदर, आतुर न हो। आज मैं तुम्हें भरपेट रोटियाँ खिलाऊँगी।

सुंदर : भरपेट रोटियाँ खिलाओगी? किंतु रोटियाँ आएँगी कहाँ से? प्रतिदिन एक ही टुकड़ा रोटी तो हम लोगों के हिस्से में आता है। कहीं तुमने अपने हिस्से की रोटियाँ तो नहीं बचा रखी हैं?

चंपा : ये जानकर क्या करोगे सुंदर? तुम्हें केवल रोटियाँ खाने से मतलब है, मैं उन्हें चाहे जहाँ से भी लाऊँ।

सुंदर : किंतु मैं अकेले उन रोटियों को नहीं खाऊँगा बहन! अच्छा चलो, हम दोनों एक साथ बैठकर बाँटकर खाना खाते हैं।

चंपा : अभी जरा ठहरो। सुंदर, देखो मेरे फूलों की माला तैयार हो गई है। पहले मैं तुम्हारे गले में डाल दूँ।

(चंपा फूलों की माला गूँथकर सुंदर के गले में डालती है। सुंदर सहसा चीख पड़ता है और माला तोड़कर भूमि पर फेंक देता है। चंपा आश्चर्य से देखती है, फूलों में एक मधुमक्खी छिपी थी। सुंदर रोने लगता है। चंपा उसे रोटी का लालच दिलाकर झोंपड़ी की ओर ले जाती है।)

दूसरा दृश्य

(**स्थान :** वन के मध्य महाराणा प्रताप की झोपड़ी। उनके द्वार पर एक अतिथि आया है। झोंपड़ी के द्वार पर बहुत बड़ा शिलाखंड पड़ा है। महाराणा प्रताप उदास होकर उसी पर लेटे हुए हैं। महारानी गुणवती पास ही बैठकर उनके उदास चेहरे की ओर देख रही हैं।)

महाराणा प्रताप : अफ़सोस, आज अवस्था यहाँ तक पहुँच गई है।

गुणवती : किंतु चिंता करने से क्या फायदा? जब विपत्ति के मार्ग पर पैर रखा है तो कठिनाइयाँ तो झेलनी ही पड़ेंगी।

महाराणा प्रताप : मैं भूखा रह जाऊँ, मेरे बच्चे रोटियों के लिए तड़प-तड़पकर जान दे दें और तुम भूख-प्यास की ज्वाला में जलकर सदा के लिए मुझसे अलग हो जाओगी, मुझे स्वीकार है, किंतु मुझे यह स्वीकार नहीं है कि मेरी झोंपड़ी में आया हुआ अतिथि भूखा सो जाए।

गुणवती : किंतु झोंपड़ी में तो अन्न का एक भी दाना नहीं है।

महाराणा प्रताप : कुछ भी हो, अतिथि को भोजन कराना ही पड़ेगा।

गुणवती : तो चलिए, हम लोग वन से फल-फूल चुन लाएँ और अतिथि को भोजन कराएँ।

(महाराणा प्रताप और गुणवती, दोनों वन में जाने के लिए तैयार होते हैं। सहसा सुंदर को छाती से चिपकाए हुए चंपा का प्रवेश।)

चंपा : पिता जी, आप व्याकुल न हों। अतिथि को भोजन मैं कराऊँगी।

महाराणा प्रताप : (आश्चर्य से) अतिथि को तुम भोजन कराओगी!

चंपा : हाँ, मैं भोजन कराऊँगी। दो-तीन दिन से मैंने अपने हिस्से की रोटियाँ बचाकर सुंदर के लिए रख छोड़ी हैं। सुंदर सो गया है, इसलिए अब यह नहीं खा सकेगा।

(चंपा दौड़कर झोंपड़ी में जाती है और रोटियाँ लाकर केले के एक पत्ते पर अतिथि के सामने रख देती है।)

चंपा : लीजिए महाराज ! हम गरीबों के पास रूखी-सूखी रोटियों को छोड़कर और आपको मिल ही क्या सकता है?

अतिथि : (रोटियों का टुकड़ा खाकर) रोटियाँ सूखी हैं किंतु इनमें अमृत का स्वाद है बेटी! ऐसी मीठी रोटियाँ तो मैंने जीवन में कभी भी नहीं खाईं।

चंपा : यह आपकी कृपा है महाराज!

अतिथि : किंतु बेटी, क्या मैं तुमसे ये पूछ सकता हूँ कि तुम कौन हो और इस भयानक वन में क्यों इतनी आपदाएँ झेल रही हो?

चंपा : मैं महाराणा प्रताप की पुत्री हूँ महाराज! स्वदेश के गौरव के लिए विपत्तियाँ उठाना महाराणा प्रताप की संतान अपना धर्म समझती है।

अतिथि : किंतु वन में भूख-प्यास की ज्वाला में जलकर तुम अपने देश के गौरव की रक्षा कैसे कर सकती हो, बेटी?

चंपा : केवल अकबर के सामने अपना मस्तक न झुकाकर! इसी में आत्मा को सुख है, इसी में हृदय को संतोष है।

(अतिथि आश्चर्यचकित होकर चंपा की ओर देखता है और रोटियों की प्रशंसा करके झोंपड़ी की ओट में जाकर छिप जाता है।)

तीसरा दृश्य

(**स्थान :** झोंपड़ी का द्वार। चंपा कई दिनों से भूखी है। अतिथि तृप्त होकर झोंपड़ी के द्वार से गया है। चंपा फूली नहीं समाती। वह दौड़ती हुई झोंपड़ी में प्रवेश करती है, किंतु द्वार पर एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ती है। महाराणा प्रताप दौड़कर उसके पास जाते हैं और उसे अपनी गोद में उठा लेते हैं।)

महाराणा प्रताप : क्या अधिक चोट लगी है बेटी?

चंपा : कुछ नहीं पिता जी! आप चिंता न करें। केवल एक हल्की-सी चोट है।

महाराणा प्रताप : (रक्त देखकर) हल्की-सी चोट है, किंतु तुम्हारा तो सिर फट गया है चंपा। ओह! अब यह नहीं देखा जाता! (अपने आपसे)

प्रताप, सचमुच तू बड़ा अभागा है। तेरे ही कारण तेरे बच्चों की आज यह दुर्गति हो रही है। यदि तू अकबर की बात मानकर उससे संधि कर लेता तो आज अरावली के सुनसान वन में तुझे यह भयानक दृश्य न देखना पड़ता।

चंपा : (सचेत होकर) पिता जी, यह आप क्या कह रहे हैं? क्या आप अकबर से संधि कर लेंगे? क्या आप कष्टों से घबराकर अमर सुख को नष्ट कर देंगे? क्या आपने इसीलिए इतने दिनों तक वन के फल-फूल खाकर अपने दिन बिताए?

महाराणा प्रताप : (आँखों में आँसू भरकर) तो फिर क्या करूँ बेटी?

चंपा : प्रतिज्ञा कीजिए पिता जी कि हम कभी भी अपना मस्तक अकबर के सामने नहीं झुकाएँगे।

महाराणा प्रताप : अच्छा बेटी, प्रतिज्ञा करता हूँ कि हम कभी भी अपना मस्तक अकबर के सामने नहीं झुकाएँगे।

चंपा : ठीक है, अब मेरी साधना सफल हुई। अच्छा, अब माता-पिता, दोनों को सदा के लिए प्रणाम....!

(चंपा आँखें बंद कर लेती है। गुणवती जोर से रो उठती है। प्रताप की आँखों में भी जल भर जाता है। तभी झोंपड़ी में अतिथि का असली वेश में प्रवेश।)

अतिथि : महाराणा प्रताप, आप धन्य हैं। आपकी संतानों का आत्मत्याग, पाषाण और वज्र हृदयों को भी मोम-सा कोमल बना देने वाला है।

महाराणा प्रताप : (अतिथि की ओर देखकर) कौन? दिल्ली सम्राट अकबर!

अकबर : आपकी अमृतमयी रोटियों को खाने वाला आपका अतिथि।

(बालिका चंपा के शव को देखकर अकबर की आँखों में भी जल भर आता है। ऐसा जल भर आता है कि वैसा पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में कहीं खोजने पर भी नहीं मिलेगा।)

(परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

सरिता	= नदी	तट	= किनारा
सयाने	= व्यस्क, बुद्धिमान	व्याकुल	= बेचैन
आतुर	= अधीर, उत्तेजित	सहसा	= अचानक, एक दम से
शिलाखंड	= पत्थर का टुकड़ा	अभागा	= जिसकी किस्मत खराब हो
प्रतिज्ञा	= दृढ़-संकल्प	पाषाण	= पत्थर

उच्चारण करें

गूँथकर	तड़प-तड़पकर	स्वीकार	विपत्तियाँ	तृप्त
आश्चर्यचकित	दुर्गति	आत्मत्याग		

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को महाराणा प्रताप के जीवन चरित्र के बारे में समझाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) महाराणा प्रताप की कितनी संतानें थी? नाम बताइए।

(ख) भूख से पीड़ित भाई ने व्याकुल होकर अपनी बहन से क्या बोला?

(ग) फूलों की माला को गले में ग्रहण करने से भाई क्यों चीख पड़ा?

(घ) सूखी रोटियाँ खाकर अतिथि को अमृत समान क्यों महसूस हुआ?

(ङ) भोजन के लिए द्वार पर आने वाला अतिथि कौन था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बहन ने भाई को सरिता जल को ग्रहण करने से क्यों मना किया?

....

(ख) अतिथि को भोजन करने के लिए चंपा ने क्यों कहा?

....

(ग) चंपा के जवाब से अतिथि के आश्चर्य चकित होने का क्या कारण था?

....

(घ) महाराणा प्रताप का चंपा के समक्ष प्रतिज्ञा लेने का कारण लिखिए।

....

(ङ) अतिथि का भाव विभोर होने की क्या वज़ह थी?

....

3. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) सुंदर को अपने राजकुमार होने पर शक था। ☐

(ख) महाराणा प्रताप ने देश के गौरव के लिए वनों को अपना राजभवन बनाया। ☐

(ग) बहन को अपने भाई पर बिल्कुल भी दया नहीं आई, सारी रोटियाँ स्वयं खाली। ☐

(घ) अतिथि दरवाजें से बिना खाए पीए ही लौट गया। ☐

(ङ) चंपा शिलाखंड से टकराकर लहुलुहान हो गई। ☐

4. उचित शब्द का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(क) सुंदर जब कुछ .... हो जाओगे तब अपने आप समझ जाओगे।

(ख) बहन, मैं तो इस समय भूख से .... हो रहा हूँ।

(ग) मैंने अपने हिस्से की .... बचाकर सुंदर के लिए रख छोड़ी है।

(घ) वन में भूख-प्यास की .... में जलकर तुम अपने देश के .... की रक्षा कैसे कर सकती हो?

(ङ) हम कभी भी अपना मस्तक .... के सामने नहीं झुकाएँगे।

5. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन करें।

(क) दोनों भाई-बहन कहाँ पर क्रीड़ा कर रहे थे?

☐ तालाब किनारे ☐ समुद्र किनारे ☐ नदी किनारे ☐ महल में

(ख) खाने के लिए अतिथि को रोटियाँ किसने दीं?

☐ गुणवती ने ☐ चंपा ने ☐ महाराणा प्रताप ने ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) शास्त्रों में अतिथि को किसके समान माना गया है?

☐ राजा के ☐ देवता के ☐ भगवान के ☐ नौकर के

(घ) अतिथि का वेश धारण करके दरवाज़े पर कौन आया था?

☐ मंत्री ☐ सैनिक ☐ राजा ☐ अकबर

(ङ) महाराणा प्रताप की पत्नी का क्या नाम था?

☐ गुणवती ☐ शक्तिवती ☐ धनवंती ☐ लक्ष्मी

6. दिए गए शब्दों को उचित रूप से सुमेलित कीजिए।

(क) अकबर	पत्नी
(ख) महाराणा प्रताप	सुपुत्री
(ग) गुणवती	पुत्र
(घ) चंपा	राजपूत राजा
(ङ) सुंदर	अतिथि

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. "कठिन परिस्थितियाँ इंसान की मानसिक स्थिति को विक्षिप्त कर देती है।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए शब्दों का प्रयोग करके वाक्य निर्मित कीजिए।

(क) दुर्गति – ....

(ख) अतिथि – ....

(ग) व्याकुल – ....

(घ) विपत्ति – ....

(ङ) गौरव – ....

9. दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तित करके लिखिए।

(क) आपत्ति – .... (ख) रोटी – ....

(ग) झोंपड़ी – .... (घ) धर्म – ....

10. दिए गए भावों को प्रकट करते हुए विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग कर एक-एक निर्मित कीजिए।

(क) भय – ....

(ख) हर्ष – ....

(ग) आशीर्वाद – ....

(घ) घृणा – ....

(ङ) स्वीकृति – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. 'महाराणा प्रताप' के जीवन चरित्र का वर्णन कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. अरावली की पहाड़ियों को भारतीय मानचित्र की सहायता से देखिए और पहचानिए कि किस दिशा में स्थित हैं?

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. विपत्तियाँ भी इंसान को उसके दृढ़ संकल्प से नहीं डिगा पाती है। आप इसका अपने जीवन में किस प्रकार अनुसरण करना चाहेंगे?

अध्याय 4

स्नेह-शपथ
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को परिवर्तित कर लेना चाहिए।

हो मित्र या कि वह शत्रु हो,
परिचित हो या परिचय-विहीन;

तुम जिसे समझते रहे बड़ा
या जिसे मानते रहे दीन,
यदि कभी किसी कारण से
उसके यश पर उड़ती दिखे धूल
तो सख़्त बात कह उठने की
तेरी जिह्वा से हो न भूल।

मत कहो कि वह ऐसा ही था
मत कहो कि इसके सौ गवाह,
यदि सचमुच ही वह फिसल गया
या पकड़ी उसने गलत राह-
तो सख़्त बात से नहीं, स्नेह से
काम जरा लेकर देखो;
अपने अंतर का नेह अरे,
देकर देखो।

कितने भी गहरे रहें गर्त
हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट जमाना हो,
हर समय प्यार भा सकता है;
जो गिरे हुए को उठा सके
इससे प्यारा कुछ जतन नहीं
दे प्यार उठा पाए न जिसे
इतना गहरा कुछ पतन नहीं।
देखे से प्यार भरी आँखें

दुस्साहस पीले होते हैं,
हर एक धृष्टता के कपोल
आँसू से गीले होते हैं।
तो सख़्त बात से नहीं
स्नेह से काम जरा लेकर देखो,
अपने अंतर का नेह भला
देकर उसको तो देखो।

तुमको शपथों से बड़ा प्यार,
तुमको शपथों की आदत है;
है शपथ गलत, है शपथ कठिन,
हर शपथ की लगभग आफत है;
ली शपथ किसी ने और किसी के
आफत पास सरक आई।

तुमको शपथों से प्यार मगर
तुम पर शपथें छाई-छाई।
तो तुम पर शपथ चढ़ाता हूँ,
तुम इसे उतारो स्नेह-स्नेह,
मैं तुम पर इसको मढ़ता हूँ
तुम इसे बिखेरो गेह-गेह।

है शपथ तुम्हें करुणाकर की
है शपथ तुम्हें उस नंगे की;
जो भीख स्नेह की माँग-माँग
मर गया कि उस भिखमंगे की।
है, सख्त बात से नहीं
स्नेह से काम जरा लेकर देखो,
अपने अंतर का नेह
उसको तो देकर तुम देखो।

– भवानी प्रसाद मिश्र

शब्दार्थ

करुणाकर	= करुणा करने वाला	जतन	= कोशिश, प्रयास	आपुल	= विपत्ति
गेह	= गृह, घर	अंतर	= हृदय	पतन	= नष्ट हो जाना
यश	= कीर्ति, सम्मान	विहीन	= बिना, रहित	गवाह	= साक्षी, दृश्यकर्ता
स्नेह	= प्यार, प्रेम				

उच्चारण करें

सख़्त दुस्साहस परिचित शपथों भ्रष्ट
करुणाकर धृष्टता स्नेह

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता का मूल भाव समझाएँ। बच्चों को प्रेमपूर्वक रहने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) प्रस्तुत कविता में किस पर धूल उड़ने की बात कही है?

(ख) मित्र तथा शत्रु के अनादर होने पर क्या करना चाहिए?

(घ) धृष्ट व्यक्ति कब समर्पण कर देता है?

(ङ) कविता में कवि ने किसकी शपथ का हवाला दिया है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रेम का प्रभाव किस-किस पर पड़ता है?

....

(ख) किसी व्यक्ति से गलती हो जाने पर उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

....

(ग) कवि ने प्यार की असीमित शक्ति को कैसे सिद्ध किया है?

....

(घ) कविता में शपथ को हर-घर बिखेरने के लिए क्यों कहा है?

....

(ङ) करुणाकर की शपथ धारण करने के लिए कवि क्यों कह रहा है?

....

3. दी गई पंक्तियों को पूरा कीजिए।

(क) तुम जिसे समझते रहे बड़ा, ...,

..................................., ...,

..................................., तेरी जिह्वा से हो न भूल।

(ख) कितने भी हरे रहें गर्त, ...,

..................................., हर समय प्यार भा सकता है,

……………………………, ……………………………,

……………………………, इतना गहरा कुछ पतन नहीं;

(ग) ……………………………, तुमको शपथों की आदत है,

……………………………, ……………………………,

……………………………, आपुल पास सरक आई!

4. दिए गए शब्दों का उचित रूप से मिलान कीजिए।

(क) सख़्त	प्रेम
(ख) गेह	दुश्मन
(ग) नेह	कठोर
(घ) मित्र	दोस्त
(ङ) शत्रु	ग्रह

5. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) कविता में 'सबसे प्यारा जतन' किसे कहा गया है?

☐ धृष्टता को ☐ गिरे हुए को उठाने को
☐ गर्त में गिराने को ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) कवि के द्वारा शपथ को किस प्रकार उतारने के लिए कहा है?

☐ प्रेम पूर्वक ☐ कठोरता से ☐ कायरता से ☐ दृढ़ता से

(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन है?

☐ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ☐ हरिवंशराय बच्चन
☐ मवानी प्रसाद मिश्र ☐ मोहनलाल वर्मा

(घ) हमें किसकी सहायता करनी चाहिए?

☐ दुश्मन की ☐ मित्र की ☐ दोनों की ☐ बड़ों की

(ङ) कविता में प्रयुक्त शब्द 'आफत' से क्या तात्पर्य है?

☐ विपत्ति ☐ आपत्ति ☐ सफलता ☐ कंटकित

ज़रा सोचिए
Critical Thinking

6. 'प्रेम रक्त' व्यक्ति किसी भी कार्य को सुचारु रूप से करवाने में सक्षम होता है।'' इस कथन से आप क्या समझते है? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

7. दिए गए शब्दों से वाक्य का निर्माण कीजिए।

(क) शपथ – ....

(ख) भ्रष्ट – ....

(ग) करुणा – ....

(घ) कठिन – ....

(ङ) परिचित – ....

8. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेदन कीजिए।

(क) परिणाम – .... + ...

(ख) दिगंबर – .... + ...

(ग) भविष्य – .... + ...

(घ) दुष्कर्म – .... + ...

(ङ) पित्राज्ञा – .... + ...

9. दिए गए वाक्यों में कारक को रेखांकित करके लिखिए।

(क) हेमंत ने राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कार पाया।

(ख) बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा जमा किया गया।

(ग) विनय ने फीस माफ़ी हेतु पत्र लिखा।

(घ) विकास अपने भाई की मदद कर रहा है।

(ङ) वरूणा दादा जी के साथ स्कूल गई।

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

10. 'स्नेह से वंचित व्यक्ति का स्वभाव कठोर हो जाता है इस विषय पर कक्षा में संवाद कीजिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

11. मृदु भाषी होना एक जीवन कौशल है। आप इसका अपने जीवन में किस प्रकार अनुसरण करेंगे?

अध्याय 5

अमरनाथ की यात्रा
(यात्रा वृतांत)

अध्ययन से पूर्व

- उपरोक्त चित्रों में देखकर बताइए कि यह भारत के किस राज्यों में स्थित है?

यात्रा वृतांत का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में यह बताया गया है कि लेखक के समान हमें न केवल तन की शुद्धि अपितु मन की शुद्धि के बारे में सोचना चाहिए।

पिछले साल मैं जिस हादसे से होकर गुजरा था, उसका स्मरण आज भी मन में सिहरन पैदा करता है। वह पल मौत से सीधे साक्षात्कार का पल था। मुझे याद नहीं है कि बचपन में कभी घोड़े पर सवार हुआ था, लेकिन भाई लोगों ने मेरी हालत देखकर घोड़े पर चढ़ने के लिए मजबूर कर दिया। करीब साढ़े बारह हज़ार फीट की ऊँचाई थी। सामने बर्फ़ से ढकी शेषनाग झील में अपना मुँह झाँकती ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसी तीन पर्वत चोटियाँ। पहले ही बता दिया गया था कि जैसे-जैसे आप ऊपर जाएँगे, ऑक्सीज़न की कमी होती जाएगी और साँस लेने में तकलीफ बढ़ती जाएगी। लेकिन जब मन में उत्साह होता है तो न ऑक्सीजन की भावी कमी का एहसास सताता है और न डर लगता है, लेकिन जब शरीर की मशीन जवाब देने लगती है, तो फिर परमात्मा याद आता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। महागुनस की चोटी और टट्टू की वह खतरनाक दौड़।

शेषनाग झील की कुछ तस्वीरें पहले देख चुका था। नीली झील का पानी कुछ ऐसा कि उससे निकलने वाली नील गंगा भी खूबसूरत हो उठी है, लेकिन जब उससे आगे चले तो महागुनस की चोटी पर पहुँचने के लिए घोड़े पर चढ़ा दिया गया, क्योंकि ऑक्सीज़न की कमी से जूते का फीता बाँधने के लिए झुकना भी ऐसा लगे जैसे एक मण बोझ उठाकर खड़ा हुआ हूँ। ऐसी हालत में दोस्तों ने सलाह दी, "नंदन जी, आप खतरा मत मोल लीजिए। स्वास्थ्य पहली चीज़ है। आप टट्टू पर सवार हो लीजिए।" इसलिए टट्टू जी की शरण ली।

साढ़े चौदह हज़ार फीट की ऊँचाई की प्रसिद्ध महागुनस की चोटी पार करने के बाद उतार पर चल ही रहा था कि जनाब टट्टू जी रह-रह कर बिदकने लगे। मैंने घोड़े वाले खान से कहा, "खान, तुम्हारा घोड़ा गड़बड़ करता है, मुझे डर लग रहा है।"

लेकिन खान के कान पर जूँ न रेंगी। मेरी जान साँसत में कि नीचे हज़ारों फीट गहरी खाई, अगर जरा-सी गड़बड़ हुई तो हड्डी-पसली ढूँढ़े न मिले। तभी टट्टू ने एक ज़ोर की हिनहिनाहट लगाई और लगा दुलत्ती झाड़कर भागने। सारे यात्रियों में खलबली मच गई। मेरे सामने मौत का काला सन्नाटा। जिंदगी अपने बचाव के लिए किस कदर चिपटती है कि जो घोड़ा मेरी जान लेने पर उतारू था, उसी से बुरी तरह मैं चिपटा जा रहा था। क्षणों की बात थी और मेरा सफाया, लेकिन पता नहीं कैसे क्या हुआ कि मैं ज़मीन पर सही सलामत और खान कराह रहा था। उसे घोड़े की लत्ती लगी थी। दुलत्ती लगती, तो शायद समा कुछ दूसरा ही होता। मैं उतरकर एक मिनट खड़ा रहा- पता नहीं इसलिए कि परमात्मा का धन्यवाद दे रहा था, या इसलिए कि बाबा अमरनाथ को अनुनय-विनय कर रहा था। बहरहाल मेरी अमरनाथ यात्रा सफल होते-होते बच गई। सफल इसलिए कि श्रद्धावान लोग कहते हैं कि तीर्थयात्रा करते हुए यदि प्राण चले जाएँ, तो आदमी सीधे बैकुंठ जाता है। मेरा बैकुंठ का टिकट कैंसिल हो चुका था और लोग मुझे छू-छू कर देख रहे थे। "जाको राखे साइयाँ" का जाप करते लोग गुज़र गए। ऐसे में लोग पाप-पुण्य का हिसाब लगाने लगते हैं। मैं अभी इसी सकते से नहीं उबर पाया था कि मैं खाई की तरफ गिरता तो क्या होता! पाप-पुण्य का हिसाब कैसे जोड़ता?

बहरहाल इस हादसे से मेरी तथाकथित साहसिक यात्रा 'अमरनाथ की यात्रा', अमरनाथ की तीर्थ भावना का पुट भी ले बैठी और मैं स्वभावत: तर्क की कसौटी पर श्रद्धा को भी कस कर देखने वाला कैमरेबाज यात्री ईश्वरीय शक्ति पर आस्था रखकर पैदल आगे बढ़ने लगा। लेकिन आइए, इस व्यक्तिगत हादसे के संदर्भ में आपको शुरू से अपने साथ ले चलूँ।

हुआ यों कि एक दिन एक फोन आया, "नंदनजी, कश्मीर चलिएगा?" "चलूँगा। अभी कश्मीर गया नहीं हूँ। कब चलना है?" मैंने जवाब दिया। "बताऊँगा, प्रेम कपूर और छोटे भी चल रहे हैं।" इस तरह मैं इस महायात्रा का एक यात्री बनकर जुड़ गया था।

जाने के दिन तक सारी तैयारी पक्की की। दिल्ली स्टेशन से जम्मूतवी तक रेल में और फिर बस से पहलगाम। जम्मू तक और भी कई बार जा चुके थे। मगर इस बार की यात्रा का कुछ दूसरा आनंद था। सैलानी मूड में बेर भी लेकर किसी स्टेशन पर खाएँ, तो सेब का मजा दे। जब जम्मू पहुँचे, तो मारे गर्मी के दम निकला जाए। भला हो मेरे जम्मू रेडियो के मित्र वीर सक्सेना का, जो अपने एक दर्ज़न नौज़वान लेखक मित्रों के साहचर्य से दिन भर दिल-ठंडा किए रहे, वरना जम्मू की गर्मी कश्मीर का नाम बदनाम करने पर तुली हुई थी। सुबह की बस के टिकट बुक करा लिए गए थे। रात काटने के लिए बस अड्डे के सामने टूरिस्ट हाऊस में दो कमरे लिए गए। रात आराम से कटी और सुबह तड़के उठकर सामान लेकर बस अड्डे पर जा लगे।

सामान लादा और ड्राइवर साहब पूरे जम्मू शहर का चक्कर लगाते हुए हमें पहलगाम की ओर लेकर चल दिए। जम्मू शहर की परिक्रमा का कारण तब पता चला जब ड्राईवर साहब की पत्नी उन्हें हाथ हिलाकर विदा करने अपने घर से बाहर आई।

जम्मू के आगे छोटे-बड़े टीले पहाड़ियों में बदलने लगे और दोपहर तक पहाड़ियाँ पहाड़ों की शक्ल में ढल गईं। चक्कर खाती हुई बस पटनी टॉप पर आकर रुकी तो हवा का ठंडा झोंका कश्मीर की जलवायु की बानगी देने लगा। पटनी टॉप पर जम्मू कश्मीर सरकार ने पर्यटक निवास बना रखे हैं। हरे-भरे पाईन के सीधे तने खड़े हुए वृक्षों के बीच लाल छतों वाले मकानों की शोभा देखते ही रह जाने लायक थी, मगर बस वाला भी इसी निगाह से बस चलाता तो पहलगाम पहुँचना नामुमकिन हो जाता। दोपहर का खाना पटनी टॉप से उतर कर कुर्द में खाया गया।

इसके बाद की यात्रा दरिया-ए-चिनाब के इलाके की यात्रा है, जो बहुत ही पहाड़ों से घिरा है। फुसफुसे पहाड़ के धँसके दिख रहे थे। थोड़ी-सी बरसात पड़ी नहीं कि पहाड़ ऊपर से धसके और रास्ता जाम। कपूर ने बताया कि एक बार राम बन के इसी इलाके में फँस चुके हैं। अपने राम बस की खिड़की से चिनाब के भयंकर गंदे पानी का उफान मारता बहाव देखकर दंग रह गए थे। यह हाल तो बिन बरसात था। बरसात में तो कहर बरपा होता होगा। मजा यह है कि पूरी कश्मीर घाटी को जम्मू से जोड़ने वाला यही एक ज़मीनी रास्ता है। हवा में आप भले चले जाएँ और दूसरा इसके अलावा कोई ज़रिया नहीं है।

हम ऊपर ही बढ़ते चले जा रहे थे, जब तक जवाहर सुरंग नहीं मिल गई और जवाहर सुरंग पार करने के बाद नीचे झाँक कर देखा तो वेरीनाग हरियाली के खूबसूरत कटोर में झाँक रहा था। कंडक्टर साहब की कृपा थी कि इन्होंने ऐलान कर दिया कि वेरीनाग कौन-कौन देखेगा?

हमारा दल हाथ उठाने में आगे था, हमें तो सभी कुछ देखना था लेकिन कुछ लोग थे, जो अमरनाथ के अलावा

और कुछ देखने को राजी नहीं थे। कंडक्टर साहब ने इसलिए पूछा था कि वेरीनाग जाने का रास्ता पहलगाम के सीधे रास्ते से भिन्न था और उसे अपनी बस अपने बस कारवाँ से अलग ले जानी पड़ती। उसके लिए करीब तीन सौ रुपए अतिरिक्त दिए गए और बस वेरीनाग को मुड़ गई। जहाँ बस रुकी, वहाँ चिनार के घने पेड़ और खूबसूरत बगीचा था। पता चला यह जो नहर बह रही है, यह झेलम का उद्गम स्थल है और उस कुंड को चारों तरफ से पक्का बाँध दिया गया है। चिनाब के पानी के बिल्कुल विपरीत स्वच्छ निर्मल पानी का कुंड है। यह मानने का आज भी मन नहीं करता कि इतना बड़ा दरिया-ए-झेलम इतने शांत कुंड से कैसे निकला होगा, लेकिन हमारे न मानने से क्या फर्क पड़ता है। अगर झेलम का उद्गम स्थल वही है, तो है।

वेरीनाग से जो बस चली, तो हरियाली की गोद में दौड़ती रही। फिर जाने कब एक बहुत ही खूबसूरत नदी के किनारे-किनारे वह पहलगाम जा लगी। जी हाँ, वह खूबसूरत नदी मामूली खूबसूरत नहीं थी। असाधारण तौर पर खूबसूरत भी, नाम है लिद्दर। सच कहता हूँ, मैंने आज तक इतनी खूबसूरत नदी नहीं देखी। क्या पहाड़ी अल्हड़पन और क्या पानी का सफेद बहाव। तेजी ऐसी कि साँप शरमाए और गर्जना ऐसी कि समूचा पहलगाम उसके बिना सूना हो जाए। पहलगाम का दूसरा दिन करीब-करीब यात्रा कार्यालय में ही बीता।

नजमुद्दीन साहब 'छड़ी मुबारक' की तरफ लपके जा रहे थे। हम लोगों की उत्सुकता जागी तो हम भी उनकी जीप पर सवार हो लिए। पहुँचे तो साधुओं का भंडारा जोरों पर था। देश-देशांतर से तो नहीं, प्रदेश-प्रदेशांतर से आए हुए सैकड़ों साधु अपनी-अपनी धुनी रमाए डटे हुए थे। 'छड़ी मुबारक' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग की प्रतीक है और अमरेश्वर शिव से श्रावणी पूर्णिमा को गुफा में जाकर सबसे पहले उन्हीं का मिलन होता है। 'छड़ी मुबारक' आगे-आगे फिर साधुओं का अपार झुंड और इसके बाद देश-देशांतर के लगभग बारह हज़ार यात्री जिनकी सुख-सुविधा के लिए कश्मीर सरकार महीनों पहले से यात्रा की तैयारी करती है-रास्ता साफ कराती है, डाक्टरों, पुलिस और संचार व्यवस्था का बंदोबस्त करती है।

पहाड़ी यात्राओं के जो नियम सीख चला था, उनमें से एक नियम यह भी याद आया कि 'धीरे चलो'। वह भी करके देख लिया, लेकिन थकावट आनी शुरू हुई तो जैसे दौड़ती हुई आई। आधे मील के अंदर-अंदर यह हालत हो गई कि एक शिला की शीतल छाँह ढूँढ़नी पड़ गई। आगे-पीछे देखा तो थोड़ी दूर पर केवल छोटे अपना डंडा खटकाते चले आ रहे थे। हमें सुस्ताता देखकर उनकी भी जान में जान आई। कपूर बहुत पीछे, संतोष कहीं बहुत आगे, अपना पाँचवाँ साथी बैरा, जिसे हमने बहादुर कहना शुरू कर दिया था, हमें ज्यादा थका देखकर नीचे उतरकर नीलगंगा का पानी थर्मस में भर लाया। यात्रियों का कारवाँ ज्यों-का-त्यों जारी था।

धीरे-धीरे हम लोग हँसते-सुस्ताते, बैठते-बतियाते चंदनबाड़ी के नज़दीक आ गए। हमें पहले पड़ाव चंदनबाड़ी में ही रात बितानी थी। रास्ते में देखा गया कि एक ऐसा भी यात्री था, जिसके टाँग थी ही नहीं। बैसाखियों के सहारे यह हमसे ज़यादा तेजी से चल रहा था। इससे हमारी दो सही सलामत टाँगों का स्वाभिमान जागा और रफ़्तार में तेज़ी आ गई।

नीलगंगा के किनारे बसी हुई यह बस्ती धार्मिक दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। कथा के अनुसार एक बार काम-क्रीड़ा और खेल की बातों में भगवान श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों के साथ लग गया। नतीजा यह हुआ कि उनका मुख अंजन के कारण काला हो गया। भगवान सदाशिव ने अपने मुख को काला देखा, तो उसे श्री गंगा (नीलगंगा) में धोया, जिससे गंगा जी का रंग काला पड़ गया। इस जल के स्पर्श

से महापापों का नाश हो जाता है। नीलगंगा के नीले होने का यह धार्मिक रहस्य जानकर हिसाब लगाया कि पहलगाम में लिद्दर (लंबोदरी) की खूबसूरती का रहस्य नीलगंगा की यही नीलिमा है। कुछ आस्थावान यात्री इस पानी की बर्फीली धार में शाम के धुँधलके में गोते लगाते दिखे। चारों ओर पहाड़ी से घिरे समुद्र तल से साढ़े नौ हज़ार फीट की ऊँचाई पर चंदनवाड़ी के मैदान में यात्रियों का कोलाहल, इंतज़ामकारियों की लाउडस्पीकरी ध्वनियाँ और घोड़ों की हिनहिनाहट, सब लहराती नीलगंगा में खो जाती हैं।

अपने टैंट के नंबर का पता लगाकर उसमें बिस्तर जमाए गए। थकावट के मारे बुरा हाल था। अपना पहलगाम वाला परिचित बैरा हममें से किसी को पानी दे रहा था, किसी के लिए चाय ला रहा था, यात्रा के साथ चल रहे 'मोबाइल भोजनालय' से खाना लाकर खाया गया और सारे बंदों को बिस्तरों पर लेटने की देरी थी कि नींद ने दबोच लिया। तड़के आँख खुली तो टैंट के पीछे की रस्सियाँ खुली हुई और छोटे की ऊनी सदरी, चश्मा, जिसके बिना उसकी समूची दृष्टियात्रा भी धुँधली रही और बहादुर की बरसाती जैकेट गायब थी। लाउडस्पीकर पर ऐलान हो रहा था कि 'यात्री मेहरबान से दरख्वास्त है कि वे जल्दी-से-जल्दी चलने की तैयारी करें। आगे चढ़ाई बड़ी कठिन है।'

—कन्हैयालाल नंदन

शब्दार्थ

कहरन	= ठिठुरन, डर से काँपना	स्मरण	= याद
जान साँसत में होना	= बहुत कठिनाई में होना	सन्नाटा	= खामोशी, सुनसान
भोजनालय	= होटल, रेस्टोरेंट	सैलानी	= यात्री
नामुमकिन	= असंभव	अल्हड़पन	= भोलापन, सरलपर
उद्गम स्थल	= ऐसा स्थान जहाँ से किसी चीज़ की शुरूआत होती है।		

उच्चारण करें

गूँथकर तड़प-तड़पकर स्वीकार विपत्तियाँ तृप्त
आश्चर्यचकित दुर्गति आत्मत्याग

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को तीर्थस्थलों के बारे में बताकर उन्हें यात्रा करने के लिए प्रेरित करें। पाठ में दिए गए तीर्थयात्रा को मानचित्र में खोजने के लिए कहें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कश्मीर यात्रा का निमंत्रण लेखक को किस प्रकार मिला?

(ख) ऑक्सीज़न की कमी लेखक को क्या स्मरण कराती है?

(ग) महागनुस की चोटी कितनी ऊँचाई को प्रदर्शित करती है?

(घ) मौसमी परिवर्तन का आभास लेखक को कहाँ हुआ?

(ङ) लेखक ने पहाड़ी यात्रा का कौन-सा नया नियम सीखा?

ज़रा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बस के ड्राइवर द्वारा जम्मू की परिक्रमा करने का क्या कारण था?

....

(ख) 'छड़ी मुबारक' का क्या महत्व है?

....

(ग) नीलगंगा से जुड़ी 'पौराणिक कथा' का वर्णन करें।

....

(घ) रात्रि विश्राम करने के पश्चात् लेखक ने किस प्रकार का ऐलान सुना?

....

3. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) अमरनाथ यात्रा में हुआ हादसा लेखक को किस प्रकार स्मरण कराता है?

☐ सिहरन ☐ डर ☐ अकड़न ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) चंदनवाड़ी चोटी की ऊँचाई कितनी है?

☐ चौदह हज़ार फीट ☐ तेरह हज़ार फीट ☐ सोलह हज़ार फीट ☐ साढ़े नौ हज़ार फीट

(ग) लेखक को किसने सलाह दी कि वह टट्टू पर सवार हो जाएँ?

☐ पुजारियों ने ☐ मित्रों ने ☐ तीर्थयात्रियों ने ☐ इनमें से कोई नहीं

(घ) हरियाली की गोद में बस कहाँ दौड़ रही थी?

☐ अनंतनाग ☐ पहलगाम ☐ पेरीनाग ☐ जम्मू

4. **दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

(क) बर्फ़ से ढँकी .... झील में अपना मुँह झाँकती तीनों पर्वत चोटियाँ हैं।

(ख) पता नहीं कैसे क्या हुआ कि मैं ज़मीन पर सही .... कराह रहा था।

(ग) तीर्थयात्रा करते हुए यदि प्राण चले जाएँ, तो आदमी सीधे .... जाता है।

(घ) राम वन के .... इलाके में फँस चुके हैं।

(ङ) नीलगंगा के जल के स्पर्श से .... का नाश हो जाता है।

5. **दिए गए वाक्यों को उचित रूप से सुमेलित करे।।**

(क) मुझे याद नहीं पड़ता	बुक करा लिए थे।
(ख) सुबह सवेरे उठकर	सामान लेकर बस अड्डे पर जा लगे।
(ग) सुबह की बस के टिकट	कि बचपन में घोड़े पर सवार हुआ था।
(घ) जब जम्मू पहुँचे	सारी तैयारी पक्की थी।
(ङ) जाने के दिन तक	तो मारे गर्मी के दम निकल जाए।

6. **सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।**

(क) लेखक ने पहले भी शेषनाग झील को देख रहा था। ☐

(ख) 'जाको राखे साइयाँ' का जप करते हुए लोग गुज़र गए। ☐

(ग) पहाड़ियों के टीले लेखक को जम्मू से पहले ही मिल गए। ☐

(घ) शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर में स्थित है। ☐

(ङ) लंबोदरी नदी पहलगाम में बहती है। ☐

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. **तीर्थयात्राओं को व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में करता है। क्या आप इससे सहमत है? सोच-समझकर बताइए।**

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. **दिए गए श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए।**

(क) अरि – ....

अरी – ....

(ख) पुर – ....

पूर – ....

(ग) बात – ....

बात – ....

(घ) पथ – ....

पथ्य – ....

(ङ) पास – ....

पाश – ....

9. दिए गए विभक्ति चिह्नों का प्रयोग कर वाक्य निर्माण कीजिए।

(क) में – ....

(ख) पर – ....

(ग) को – ....

(घ) के लिए – ....

10. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेदन कीजिए।

(क) ऑक्सीज़न – ....

(ख) परमात्मा – ....

(ग) श्रद्धावान – ....

(घ) कंडक्टर – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. आप अपनी किसी स्मरणीय यात्रा वृतांत के अनुभव को निबंध रूप में लिखिए।

12. 'ज्ञान एवं अनुभव एक-दूसरे के पूरक हैं।' इस विषय पर कक्षा में संवाद स्थापित कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. भारतीय मानचित्र को स्मरण करते हुए बताइए कि निम्न प्रसिद्ध तीर्थस्थल कहाँ स्थित हैं?

तिरूपति बालाजी केदारनाथ रामेश्वरम पंजा साहिब

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

14. व्यवहारिक, व्यवसायिक जीवन के साथ-साथ आध्यात्मिक जीवन भी मानव की जीवन शैली का एक भाग है। आप अपने लक्ष्य प्राप्ति में इन तीनों का निर्वाहन कैसे करना चाहेंगे?

अध्याय 6

सरोजिनी नायडू
(जीवनी)

अध्ययन से पूर्व

बछेंद्री पाल

इंदिरा गाँधी

मैरीकॉम

साइना नेहवाल

सानिया मिर्ज़ा

सुचेता कुलपति

- इन चित्रों के बारे में जानकारी एकत्रित करें।
- इन सभी ने किस-किस क्षेत्र में प्रसिद्धि हासिल की?

जीवनी का मूल तत्व

व्यक्तिगत, समाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल कर देश सेवा में अपना सर्वस्त्र योगदान देना।

भारत को स्वतंत्र कराने में भारतीय नारियों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। स्वतंत्रता के आंदोलन में उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है। ऐसी नारियों में सरोजिनी नायडू का नाम प्रथम पंक्ति में आता है।

सरोजिनी का जन्म हैदराबाद में हुआ। इनके पिता डॉ. अघोरनाथ चट्टोपाध्याय थे। उन्होंने हैदराबाद में निज़ाम कॉलेज की स्थापना की। वे वर्षों तक इस कॉलेज के प्राचार्य के पद पर कार्य करते रहे। इनकी माता श्रीमती वरदासुंदरी भी सुशिक्षित महिला थीं। वे बंगाली में कविता लिखती थीं।

बालिका सरोजिनी को पुस्तकों से बड़ा प्रेम था। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि केवल बारह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी।

बचपन से ही कविता पढ़ने में उसकी रूचि थी। वह गाती भी बहुत अच्छा थी। जब मधुर स्वर में कविता पाठ करती तो उसके माता-पिता बड़े प्रसन्न होते। सरोजिनी स्वयं भी कविता लिखने लगीं। तेरह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने एक बड़ी और सुंदर कविता लिख डाली। हैदराबाद के निज़ाम तो इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने सरोजिनी को छात्रवृत्ति देकर पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेज दिया।

इंग्लैंड में अपनी पढ़ाई के साथ-साथ सरोजिनी अंग्रेज़ी में कविताएँ भी लिखती रहीं। लोग उनकी कविताओं से बड़े प्रभावित हुए। इंग्लैंड से लौटने पर सरोजिनी ने श्री गोविंद राजलू नायडू से शादी कर ली।

उन दिनों सारे देश में स्वतंत्रता-आंदोलन छिड़ा हुआ था। भला सरोजिनी पीछे कैसे रहतीं। वे भी आंदोलन में कूद पड़ी। उन्होंने अन्य नारियों को भी आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और देश के सभी भागों में घूम-घूमकर जनता को स्वतंत्रता का संदेश दिया। 1932 में महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया।

उस समय सरोजिनी नायडू ने बड़ी कुशलता से नमक सत्याग्रह आंदोलन चलाया। स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सभी ने उनके नेतृत्व में नमक बनाकर आंदोलन को सफल बनाया।

सरोजिनी की योग्यता और देश सेवा से प्रभावित होकर कांग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना। इतनी बड़ी संस्था का अध्यक्ष होना किसी महिला के लिए बड़े सम्मान की बात थी।

सरोजिनी नायडू एक कुशल वक्ता थीं। उनकी वाणी में जादू था। जहाँ कहीं भी वे भाषण देने खड़ी हो जातीं, लोगों की भीड़ टूट पड़ती थी।

सत्याग्रह आंदोलन में कई बार सरोजिनी नायडू को जेल भी जाना पड़ा। बार-बार जेल जाने से उनका स्वास्थ्य खराब हो गया फिर भी वे उत्साह से देश सेवा के काम में लगी रहीं।

जब देश स्वतंत्र हो गया, सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। जिन्हें स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल के नाम से जाना गया।

सरोजिनी नायडू केवल देश-सेविका ही नहीं थीं बल्कि एक प्रसिद्ध कवयित्री भी थीं। उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी हैं, जिन्हें लोग बड़ी रूचि से पढ़ते हैं। वे मधुर स्वर से कविता पाठ करती थीं। यही कारण है कि लोग उन्हें भारत कोकिला के रूप में जानते हैं। आज सरोजिनी नायडू हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी देश की जो सेवा उन्होंने की है उसके लिए वे सदा याद की जाएँगी।

-संकलित

शब्दार्थ

मधुर	= मीठा, अच्छा	छात्रवृत्ति	= शासन द्वारा मिलने वाली राशि
सत्याग्रह	= सत्य के लिए आग्रह करना	कुशलता	= निपुणता/परायनता
वक्ता	= भाषणकार, बोलने वाला	आंदोलन	= अभिमान, संघर्ष

उच्चारण करें

स्वतंत्र प्राचार्य इंग्लैंड छात्रवृत्ति वक्ता
अधयक्ष

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को सरोजिनी नायडू के जीवन के बारे में विस्तार से बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) किस काल के दौरान सरोजिनी नायडू को जेल जाना पडा?

(ख) निजाम कॉलेज के प्राचार्य के रूप में किसने कार्य किया?

(ग) कौन-से आंदोलन में सरोजिनी ने सक्रियता दिखाई?

(घ) हैदराबाद के निजाम कॉलेज के संस्थापक कौन थे?

(ङ) किसके अध्यक्ष के रूप में सरोजिनीने भूमिका निभाई?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सरोजिनी का कम उम्र में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने का कारण लिखिए।

....

(ख) बाल्यकाल के दौरान सरोजिनी किस प्रकार की रूचि रखती थी?

....

(ग) सरोजिनी को एक महिला के रूप में अध्यक्ष क्यों चुना गया?

....

(घ) स्वतंत्रता के बाद सरोजिनी नायडू को कौन-से पद से सम्मानित किया गया?

....

3. उचित शब्द का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(क) स्वतंत्रता के आंदोलन में .... ने पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया।

(ख) .... ने हैदराबाद में निजाम कॉलेज की स्थापना की।

(ग) .... में अपनी पढ़ाई के दौरान सरोजिनी कविताएँ भी लिखती रही।

(घ) .... की योग्यता और देश सेवा से प्रभवित होकर काँग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना।

(ङ) सरोजिनी नायडू को भारत .... कहा जाता है।

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) सरोजिनी नायडू लिखा करती थी

☐ कहानी ☐ लेख ☐ कविता ☐ पत्र

(ख) सरोजिनी नायडू किसके लिए प्रेरणादायक स्त्रोत बनी?

☐ माता-पिता ☐ नारियों ☐ पुरुषों ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) किस आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू जेल गई?

☐ सत्याग्रह ☐ सविनय अवज्ञा ☐ भू-दान ☐ इनमें से कोई नहीं

(घ) किसके अध्यक्ष के रूप में सरोजिनी नामित हुई?

☐ भा. ज. पा. ☐ काँग्रेस ☐ सी. बी. आई. ☐ इनमें से कोई नहीं

5. दिए गए शब्दों का उचित रूप से मिलान कीजिए।

(क) अघोरनाथ चट्टोपाध्याय	सरोजिनी नायडू
(ख) वरदा सुंदरी	सरोजिनी नायडू
(ग) सत्याग्रह	डॉक्टर
(घ) कुशल वक्ता	1932
(ङ) भारत कोकिला	सुशिक्षित महिला

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. सरोजिनी नायडू की देश सेवा से प्रभावित होकर काँग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना। जबकि कई व्यक्ति उस पद के योग्य थे। ऐसा क्यों? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

7. दिए गए शब्दों के द्वारा वाक्य का निर्माण करें।

(क) देशसेवा – ....

(ख) आंदोलन – ....

(ग) कवयित्री – ....

(घ) प्रशंसा – ....

(ङ) कोयल – ....

8. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द निर्मित कीजिए।

(क) कुशल - .... (ख) आवश्यक - ....

(ग) कवि - .... (घ) स्वतंत्र - ....

9. दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदों के लिंग पहचानकर वचन-परिवर्तन कीजिए।

	लिंग	वचन
(क) भारत एक महान देश है।	....	....
(ख) सभी विधाओं के लोग संस्कृति के बारे में सोचें।	....	....
(ग) युवा चित्रकारों से मिलने का मौका आता है।	....	....
(घ) उस दरम्यान मन में यह विचार आया।	....	....

10. दिए गए शब्दों का वर्ण विच्छेदन कीजिए।

(क) सत्याग्रह - ....

(ख) छात्रवृत्ति - ....

(ग) आंदोलन - ....

(घ) प्राचार्य - ....

(ङ) सुशिक्षित - ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

11. सरोजिनी नायडू ने ऐसे कौन-से कार्य किए जिनके कारण उनका नाम भारतीय इतिहास में अमर हुआ? पता करके लिखिए।

12. 'भारत की प्रथम' पाँच क्रांतिकारी महिलाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करके लिखिए।

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

13. सरोजिनी नायडू को कविता लेखन का बहुत शौक था। उनका पहला कविता संग्रह कौन-सा था? बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

14. दकियानूसी बेड़ियों से मुक्त होकर महिलाएँ आसमान की ऊँचाईयों को छू रही है। आप महिलाओं के इस सकारात्मक पथ में किस प्रकार सहयोग करना चाहेंगे?

अध्याय 7

क्या निराश हुआ जाए?
(निबंध)

अध्ययन से पूर्व

निबंध का मूल तत्व

हमारे जीवन जीने का आधार भ्रष्टाचार नहीं शिष्टाचार होना चाहिए।

समाचार की खबरें सुनकर मेरा मन बैठ जाता है। क्योंकि समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि अब ऐसा लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी रहा ही नहीं। हर व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता। जो कुछ करेगा, तो उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। क्योंकि दोष अधिक दिखता है, गुण बिल्लकुल नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवींद्रनाथ टैगार और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा। यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं, झूठ तथा फरेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

लेकिन ऊपर-ऊपर जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए एक जैसे बनाए जाते हैं पर कभी-कभी एक ही नियम सबके लिए सुखकर नहीं होता। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुई है, आगे भी होगी। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष में कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना उचित नहीं बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष में कभी भी उन्हें माना गया, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा

सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के करोड़ो दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सदा पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति सदा आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गए। आदर्शों को मज़ाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए क्षोभ का नतीज़ा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान् और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के परिणाम खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और अध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। और समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और

समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं, जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं। दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना

ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकेंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, ''यह मेरी बहुत बड़ी गलती थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जर सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर तुरंत एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है। बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था। कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में भी था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। उसी समय क्या

देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ''अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया।'' यहीं दूध मिला तो, थोड़ा लेता आया। यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए। कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई। कैसे कहूँ कि लोगों में दया-ममता रह ही नहीं गई। जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ। धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढांढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ। मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

—आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ

दकियानूस = पुराने विचार वाला

कातर मुद्रा = डरे हुए व्यक्ति की मुख मुद्रा

भीरू = डरपोक

अवांछित = अनचाही

दोषोद्घाटन = कमियों को प्रकट करने वाला

परिक्षित = कसौटी पर आजमाया हुआ

निरीह = असहाय

उच्चारण करें

आस्था प्रतिष्ठा विकार विश्वासघात दुर्घटना

श्रमजीवी परिस्थितियों विनम्रता

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका निबंध के माध्यम से बच्चों को जीवन में निराश न होने का सुझाव दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए
Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लेखक का मन क्या सुनकर बैठ जाता है?

(ख) आजकल हर व्यक्ति को किस दृष्टि से देखा जाने लगा है?

(ग) चिंता का विषय कब दिखने लगता है?

(घ) मूर्खता का पर्याय किसे समझा जाने लगा है?

ज़रा लिखिए
Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लोगों की आस्था किन जीवन मूल्यों पर हिलने लगी है?

....

(ख) लेखक हताश न होने का सुझाव क्यों दे रहा है?

....

(ग) आजकल कौन से लोग कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने के अवसर ढूँढते हैं?

....

(घ) लेखन ने कानून और धर्म की व्याख्या किस प्रकार की है?

....

3. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

गुण भ्रष्टाचार नियम-कानून दोष सच्चाई

(क) प्राय: अखबारों में ठगी, डकैती और .... के समाचार भरे रहते हैं।

(ख) जब .... अधिक दिखता है तब .... नहीं।

(ग) .... सबके लिए एक जैसे बनाए जाते हैं।

(घ) दुनिया में .... और ईमानदारी लुप्त हो गई है।

5. सही मिलान कीजिए।

(क) आरोप	कानून
(ख) नियम	विचार
(ग) मनुष्य	प्रत्यारोप
(घ) दकियानूसी	बुद्‌धि

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. 'धर्म कानून से ऊपर है या कानून धर्म से'। कक्षा में इस विषय पर चर्चा करते हुए अपने विचार प्रकट कीजिए।
7. आजकल प्रत्येक व्यक्ति दोषी नज़र क्यों आता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
8. भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में अपनी पकड़ बनाती जा रही है। इस कथनानुसार अपनी सहमति एवं असहमति को कारण सहित व्यक्त कीजिए।
9. आजकल श्रमजीवी **गुजरबसर** में लगे हैं और भ्रष्ट फल-फूल रहे हैं। इस विषय पर कक्षा में संवाद कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

10. दिए गए शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।
   (क) अनुकरण करने योग्य - ....
   (ख) जिसका कोई दोष न हो - ....
   (ग) जो किसी का पक्ष न हो - ....
   (घ) जो नष्ट न हो - ....

11. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद करके लिखिए।
   (क) अधिकार - ....
   (ख) परीक्षा - ....
   (ग) भ्रष्टाचार - ....
   (घ) सच्चाई - ....

12. संधि कीजिए।
   (क) सदा + एव - .... (ख) पर + उपकार - ....
   (ग) नै + इका - .... (घ) अति + आवश्यक - ....

13. दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) अनिवार्य – ....

(ख) आदेश – ....

(ग) आवश्यक – ....

(घ) अभिमान – ....

14. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए।

(क) यहाँ कितना भ्रष्टाचार है। (विस्मयादिवाचक में) ....

(ख) शाम तक वापिस दे जाना। (निषेधवाचक में) ....

(ग) शायद आज नेता आए। (प्रश्नवाचक में) ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

15. आपके साथ हुई किसी ऐसी घटना का वर्णन कीजिए जिसने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया हो।

16. 'मैथिलीशरण गुप्त' जी की निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए।

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ इस अर्थ अहो,
समझो इसको यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को।

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

17. 'ईमानदारी और सच्चाई का कद व्यक्ति एवं प्रत्येक पद से ऊँचा होता है।' आप इन मूल्यों को अपने जीवन में किस प्रकार आत्मसात करना चाहेंगे?

अध्याय 8

दोहावली
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

तरुवर फल नहीं खाता है, सरवर पियत न पान,
कहि रहीम परिकाज हित संपति सबहिं सुजान।

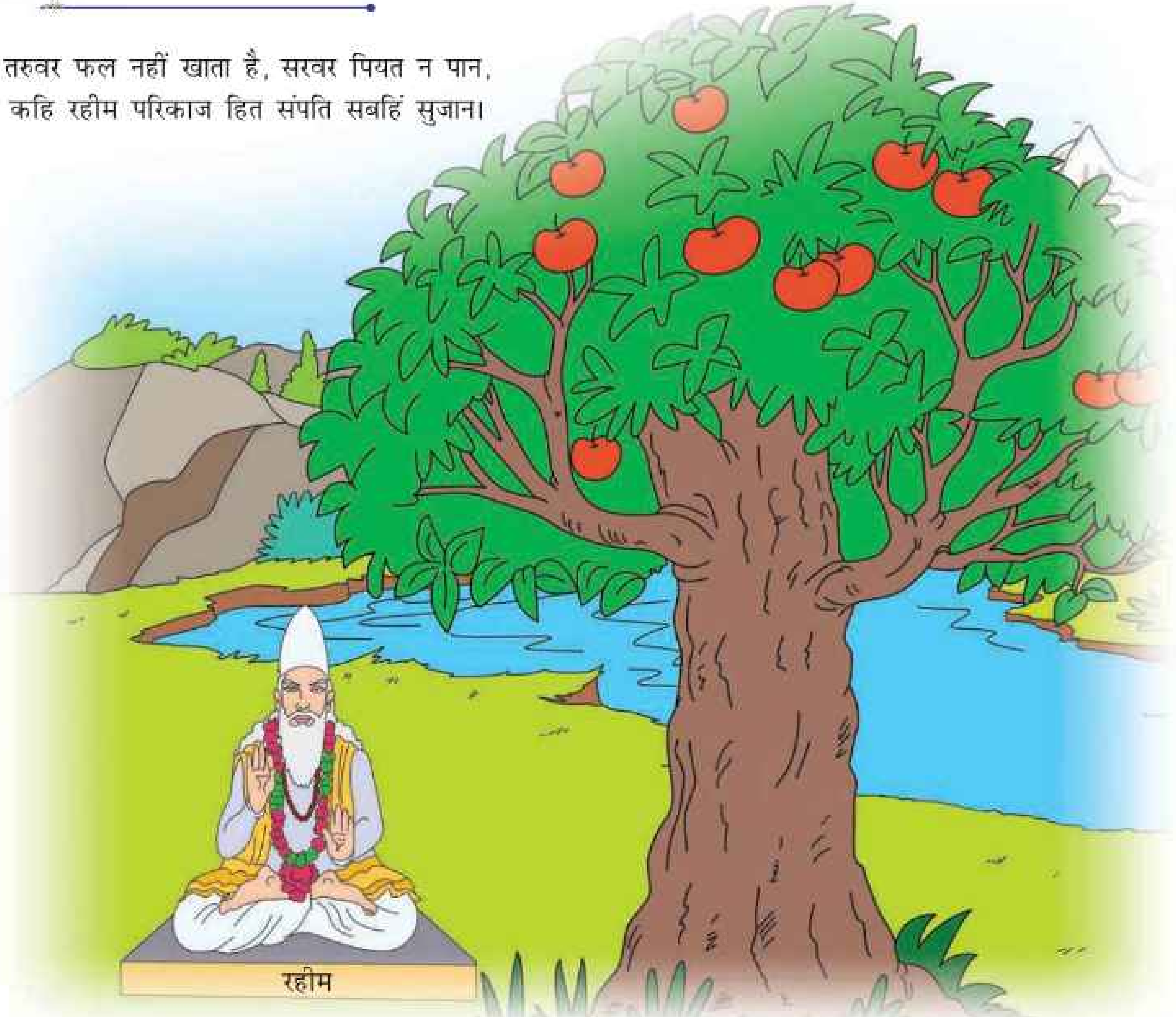

कविता का मूल तत्व

दोहवली के माध्यम से ब्रज भाषा एवं रचना का भावार्थ समझाना।

सूरदास के 10 प्रसिद्ध दोहे

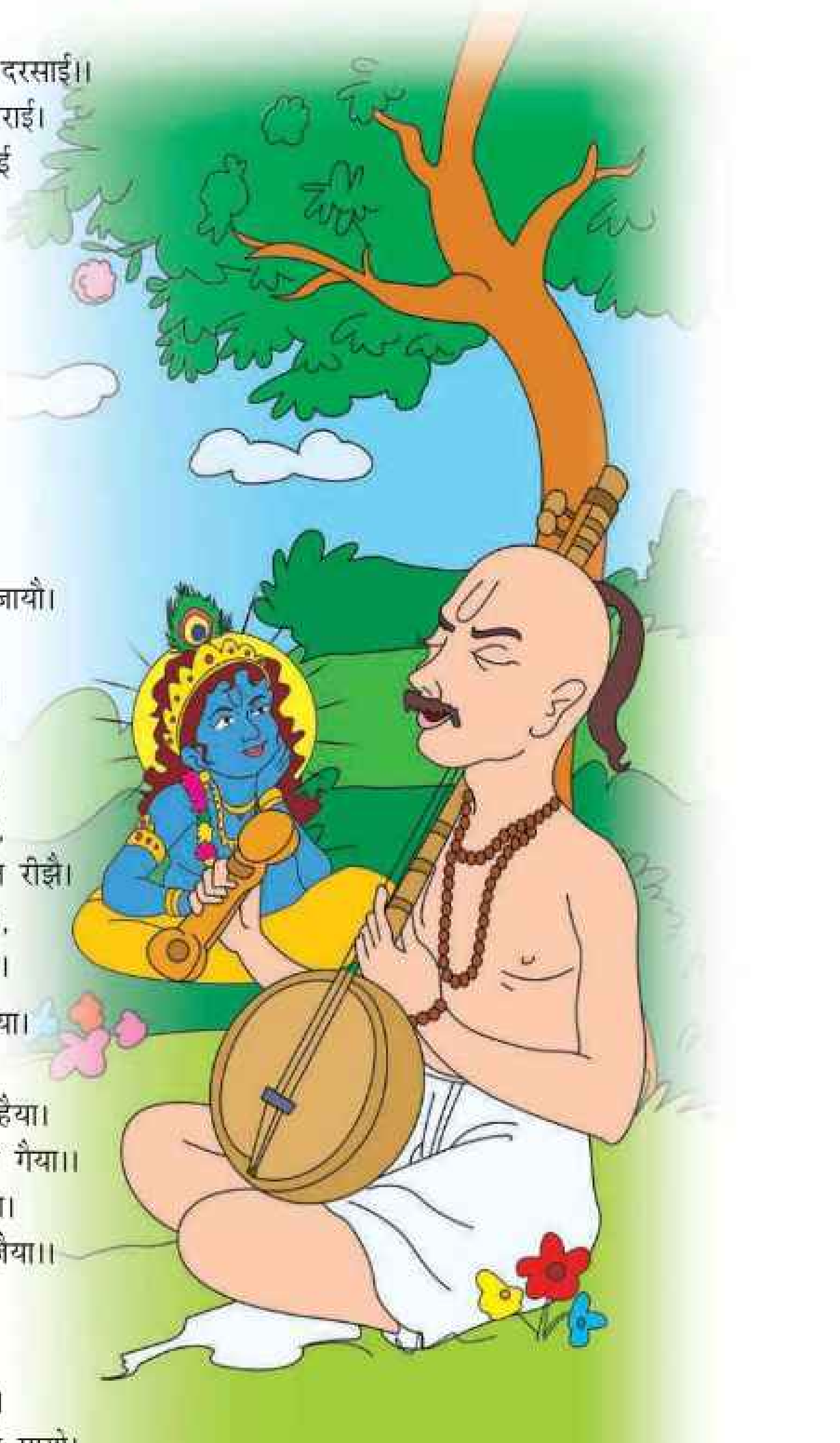

1. चरण कमल बंदो हरी राइ
जाकी कृपा पंगु गिरी लांघे अँधे का सब कुछ दरसाई।।
बहिरो सुनै मूक पुनि बोले रंक चले सर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय बार-बार बंदौ तेहि पाई
खंजन नैन रूप मदमाते।

2. अतिशय चारु चपल अनियारे,
पल पिंजरा न समाते।।
चलि-चलि जात निकट स्रवनन के,
उलट-पुलट ताटंक फँदाते।
'सूरदास' अंजन गुन अटके,
नतरु अबहिं उड़ जाते।।

3. मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ,
मोसौ कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ।
कहा करौं इहि के मारें खेलन हौं नहि जात,
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।
गोरे नन्द जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात,
चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत हँसत-सबै मुसकात।
तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुँ न खीझै,
मोहन मुख रिस की ये बातें, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत की कौ धूत,
सूर स्याम मौहिं गोधन की सौं, हौं माता तो पूत।

4. अरु हलधर सों भैया कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद महर सों बाबा अरु हलधर सों भैया।।
ऊंचा चढ़ी-चढ़ी कहती जशोदा लै-लै नाम कन्हैया।
दूरी खेलन जनि जाहू लाला रे! मारैगी काहू की गैया।।
गोपी ग्वाल करत कौतुहल घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को चरननि की बलि जैया।।

5. मैया मोहि मैं नहीं माखन खायौ।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छीको किहि बिधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर पड़े है, बरबस मुख लपटायो।।
तू जननी मन की अति भोरी इनके कहें पतिआयो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।।
यह लै अपनी लकुटी कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि जसोदा लै उर कंठ लगायो।।

6. मैया मोहि कबहुँ बढ़ेगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भइ यह अजहू है छोटी।।
तू तो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हावावत जैहै नागिन-सी भुई लोटी।।
काचो दूध पियावति पचि-पचि देती न माखन रोटी।
सूरदास त्रिभुवन मनमोहन हरि हलधर की जोटी।

7. जसोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै दुलरावै मल्हावै जोई सोई कछु गावै।।
मेरे लाल को आउ निंदरिया कहे न आनि सुवावै।
तू काहै नहि बेगहि आवे तोको कान्ह बुलावै।।
कबहुँ पलक हरि मुंदी लेत है कबहु अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि करि-करि सैन बतावै।।
इही अंतर अकुलाई उठें हरि जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सुर अमर मुनि दुर्लभ सो नंद भामिनि पावै।।

8. बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी।।
काहे को हम ब्रजतन आवतिं खेलति रहहिं आपनी पौरी।
सुनत रहति स्त्रवननि नंद ढोटा करत फिर माखन दधि चोरी।।
तुम्हरो कहा चोरी हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरई राधिका भोरी।

9. निरगुन कौन देस को वासी।
मधुकर किस समुझाई सौह दै, बूझति सांची न हांसी।।
को है जनक, कौन है जननि, कौन नारि कौन दासी।
कैसे बरन भेष है कैसो, किहं रस में अभिलासी।।
पावैगो पुनि कियौ आपनो, जा रे करेगी गांसी।।
सुनत मौन हवै रह्यौ बावरों, सुर सबै मति नासी।

10. जो तुम सुनहु जसोदा गोरी।
नंदनंदन मेरे मंदिर में आजू करन गए चोरी।।
हो भइ जाइ अचानक ठाढ़ी कह्यो भवन में कोरी।
रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहज मति भोरी।।
मोहि भयो माखन पछितावो रीती देखि कमोरी।
जब गहि बांह कुलाहल किनी तब गहि चरन निहोरी।।
लागे लें नैन जल भरि-भरि तब मैं कानि न तोरी।
सूरदास प्रभु देत दिनहिं दिन ऐसियै लरिक सलोरी।।

रहीम

रहिमन विपदा हू भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।1।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिर-फिर पोइए, टूटे मुक्हातार।।2।।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।3।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तलवारि।।4।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
जोरे ते फिर न जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।5।।

शब्दार्थ

विपदा	= मुसीबत	जगत	= संसार
चटकाय	= झटके से	सकल	= समस्त
संतई	= सज्जनता	सुजन	= स्वजन

उच्चारण करें

अतिशय	करूणामय	स्यामल	नंदनंदन	सकुचि
न्हावावत	त्रिभुवन	रहिमन	मानुष	अनहित

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका दोहावली के माध्यम से सूरदास एवं रहीम का जीवन परिचय देते हुए दोहों का भावार्थ भी बताए।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) नंद पत्नी यशोदा जी किसके बाल स्वरूप का सुख प्राप्त कर रही है?

(ख) सूरदास जी किसके चरण कमलों की वन्दना कर रहे हैं?

(ग) बालकृष्ण माँ यशोदा से किसकी शिकायत कर रहे हैं?

(घ) श्रीकृष्ण जी ने किसका मन मोह लिया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) माँ यशोदा ने श्रीकृष्ण को किस चीज़ा का प्रलोभन दिया?

....

(ख) रहीम ने प्रेम संबंध तोड़ने से क्यों मना किया है?

....

(ग) रहीम ने थोड़े दिन की विपदा को भली क्यों कहा है?

....

(घ) ईश्वर संसार में किस प्रकार व्याप्त है?

....

3. **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।**

(क) संत नहीं छोड़ते।

☐ संतई ☐ शीतलता ☐ क्रोध ☐ संसार

(ख) रहीम के अनुसार मनुष्य को अपने .... की रक्षा करनी चाहिए।

☐ अपमान ☐ सम्मान ☐ दोनों की ☐ किसी की भी नहीं

(ग) रहीम के अनुसार बड़ी चीज़ा को देखकर छोटी चीज़ा की क्या नहीं करनी चाहिए?

☐ उपेक्षा ☐ अपेक्षा ☐ इच्छा ☐ सभी

(घ) रहीम और सूरदास के दोहों की रचना .... भाषा में हैं।

☐ अवधी ☐ ब्रह ☐ भोजपुरी ☐ मैथिली

4. दिए गए दोहों का भावार्थ लिखिए।

(क) दुर्बल को न सताइए, जाकि मोटी हाय।
मुई खाल की स्वाँस सो, सार भसम है जाय।।

(ख) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तरवारि।।

5. सही मिलान कीजिए।

(क) सूरदास	भली
(ख) विपदा	ब्रजभाषा
(ग) वस्तु	कृष्ण भक्ति
(घ) रहीम	त्याग

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. सूरदास जी ने अपने दोहों के माध्यम से किसकी भक्ति बखान किया है और क्यों? विचार कर लिखिए।

7. रहीम जी और सूरदास जी के दोहों में किसप्रकार का अंतर प्राय: देखने को मिलता है? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

8. सूरदास जी ने अपनी रचनाओं में भावनात्मक और कलात्मक छाप किस प्रकार छोड़ी है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

9. दिए गए तत्सम शब्दों को तद्भव रूप में परिवर्तित कीजिए।

(क) गृह – .... (ख) चरित्र – ....

(ग) चतुर्थी – .... (घ) घट – ....

10. दिए गए शब्दों को रूढ़, यौगिक, और योगरूढ़ आधार पर अलग-अलग कीजिए।

जल हाथी रसोईघर दशानन पंकल पेड़ शेर चारपाई महावीर पाठशाला विद्यालय शरणार्थी

(क) रूढ़ – ....

(ख) यौगिक – ....

(ग) योगरूढ़ – ....

11. दिए गए समस्त पदों के समास का नाम बताइए।

समास का नाम

(क) त्रिभुवन – ....

(ख) मनमोहन – ....

(ग) चरण कमल – ....

12. प्रस्तुत पंक्ति में कौन-सा अलंकार छिपा है बताइए-

अलंकार का नाम

(क) पानी गए न ऊबरें, मोती मानुस चून।। – ....

(ख) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों। – ....

(ग) चरण कमल बंदों हरि राई – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

13. 'सूरदास' जी के जीवन परिचय का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

14. 'रहीम' जी मुस्लमान होने के बावजूद श्रीकृष्ण जी के अनन्य भक्त थे। उनकी रचनाओं में कृष्ण भक्ति का स्वरूप दिखाई देता है। जिनमें से उनकी प्रसिद्ध रचना मदनाष्टक है। अन्य प्रसिद्ध रचनाओं का नाम बताइए।

15. 'सूरसागर' सूरदास जी की प्रसिद्ध रचना है अन्य दो रचनाओं के नाम भी बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

16. आत्मा ही परमात्मा का अंश है। अतः सभी जीवों पर दया, क्षमा और सम्मान का भाव रखना चाहिए। क्या आप अपने जीवन में इन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

अध्याय 9

काकी
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

हमें सदैव बच्चों की भावनाओ को समझना और सम्मान देना चाहिए।

एक दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा कि घर भर में कोहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कम्बल पर भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करूण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

लोग जब उसकी माँ को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा। बोला, "काकी सो रही है, इसे इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो? मैं इन्हें नहीं ले जाने दूँगा।"

लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया। काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका। एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही संभाले रही।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है। परंतु यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं, ऊपर भगवान के यहाँ गई है। काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो धीरे-धीरे शांत हो गया परंतु शोक शांत न हो सका। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

एक दिन उसने ऊपर पतंग उड़ती देखी न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। पिता के पास जाकर बोला, "काका, मुझे एक पतंग मँगा दो। अभी मँगा दो।"

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे। "अच्छा मँगा दूँगा," कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गए।

श्यामू पतंग के लिए उत्कण्ठित था। वह अपनी इच्छा किसी तरह न रोक सका। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था। इधर-उधर देखकर उसने पास एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं। एक चवन्नी पाकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया।

सुखिया दासी का लड़का भोला श्यामू का साथी था। श्यामू ने धीरे से कहा, "अपनी जीजी से कहकर चुपचाप एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो, अकेले में लाना, कोई जान न पाए।" पतंग आई। एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी। श्यामू ने धीरे से कहा, "भोला, अगर किसी से न कहे तो एक बात कहूँ।"

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा, "बात तो बड़ी अच्छी सोची, परंतु एक कठिनाई है। यह डोर पतली है। इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए।"

श्यामू गंभीर हो गया। मतलब यह, बात लाख रुपए की सुझाई गई, परंतु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए। पास में दाम हैं नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया माया के जला आए हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं। उस दिन श्यामू को चिंता के मारे पूरी रात नींद तक नहीं आई।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला। ले जाकर भोला को दिया और बोला, "देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे। एक रस्सी छोटी पड़ेगी। जवाहर भैया से मैं एक कागज़ पर 'काकी' लिखवा लूँगा। नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी।" दो घण्टे बाद प्रफुल्लित मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् उग्र रूप धारण किए विश्वेश्वर शुभ कार्य में विघ्न की तरह वहाँ आ घुसे। भोला और श्यामू को धमकाकर बोले, "तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?"

भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया। बोला, "श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।"

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे लगाकर कहा, "चोरी सीखकर जेल जाएगा? अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह समझाता हूँ।" कहकर फिर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली। अब रस्सियों की ओर देखकर पूछा, "ये किसने मँगवाई?"

भोला ने कहा, "इन्होंने मँगाई थी। कहते थे, पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।"

विश्वेश्वर हत्बुद्धि होकर वहीं खड़े रह गए। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उसके कागज़ पर लिखा था– "काकी।"

–सियारामशरण गुप्त

शब्दार्थ

रुदन	= रोना	प्रफुल्लित	= खुश होना
भूमि शयन	= धरती पर लेटना	अकस्मात्	= अचानक
विघ्न	= रूकावट	कोहराम	= शोर शराबा

उच्चारण करें

विश्वेश्वर   रस्सियाँ   मुखबिर   हतबुद्धि   उत्कण्ठित

उपद्रव

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका पाठ के माध्यम से बच्चों की भावनाओं को समझते हुए उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) श्यामू की नींद किस पहर खुली?

(ख) भोला किसका लड़का था?

(ग) श्यामू ने कोट की ज़ेब से क्या निकाली?

(घ) श्यामू ने अपनी पतंग पर क्या लिखा?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) श्यामू आसमान की ओर क्या देखता रहता था?

....

(ख) श्यामू की गंभीरता का क्या कारण था?

....

(ग) श्यामू के उपद्रव मचाने के पीछे क्या वज़ह थी?

....

(घ) श्यामू ने भोला के साथ मिलकर क्या योजना बनाई?

....

3. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

भोला गुरुजनों श्यामू उपद्रव दुखीमन

(क) अकेला बैठा श्यामू .... से आकाश की ओर देखता रहता।

(ख) .... एक ही डाँट में मुखबिर बन गया।

(ग) .... ने भोला को विश्वास दिलाया।

(घ) .... ने घर में .... मचा रखा था।

4. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए।

(क) श्यामू की नींद खुली-

☐ सवेरे ☐ श्याम को ☐ रात को ☐ कभी नहीं

(ख) पतंग लाने के लिए श्यामू की मदद की-

☐ गुरूजनों ने ☐ विश्वेश्वर ने ☐ भोला ने ☐ सभी ने

(ग) भोला लड़का था-

☐ दासी का ☐ विश्वेश्वर का ☐ गुरूजन का ☐ श्यामू का

5. सही कथन पर (✓) का अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) काकी का लोगों ने स्वागत किया। ☐

(ख) पतंग लाने के लिए श्यामू ने भोला की मदद की। ☐

(ग) काकी को नीचे उतारने के लिए श्यामू और भोला ने योजना बनाई। ☐

(घ) जवाहर भैया की मदद से पतंग के कागज़ पर 'काकी' लिखवाया गया। ☐

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. भोला की जगह अगर आप होते तो श्यामू की मदद किस प्रकार करते? सोचकर लिखिए।

7. बच्चों की भावनाओं को समझना कितना महत्व रखता है? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. दिए गए शब्दों के बहुवचन बनाइए।

(क) पतंग - .... (ख) चिंता - ....

(ग) गुरु - .... (घ) खूटी - ....

(ङ) रस्सी - .... (च) लोग - ....

9. दिए गए शब्द के विलोम शब्द बनाइए।

(क) विश्वास - .... (ख) शोक - ....

(ग) प्रफुल्ल - .... (घ) आकाश - ....

(ङ) उग्र - .... (च) ऊपर - ....

10. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द बनाइए।

(क) आकाश – ....

(ख) उदास – ....

(ग) साथी – ....

(घ) मदद – ....

11. दिए गए पुल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाइए।

(क) काका – .... (ख) दास – ....

(ग) भाई – .... (घ) पिता – ....

12. दिए गए जातिवाचक संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

(क) दास – ....

(ख) मित्र – ....

(ग) माता – ....

(घ) मनुष्य – ....

13. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए।

(क) आज मन उदास है। ....

(ख) बुढ़ापे में कई बीमारियाँ घेर लेती है। ....

(ग) छोटे-छोटे बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे हैं। ....

(घ) वह कोट की जेब से पैसे निकालने पहुँचा। ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

14. मित्र के पिताजी के असामयिक निधन पर मित्र को सांत्वना पत्र लिखिए।

15. श्यामू की पतंग को फाड़ने के बाद उसके पिताजी के मन में श्यामू को लेकर किस प्रकार की भावनाएँ जागृह हो रही होंगी? संवाद रूप में कक्षा में चर्चा कीजिए।

16. कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

17. सभी की भावनाओं को सम्मान देना भी उतना ही आवश्यक है जितना की समझना। आप स्वयं की भावनाओं का सम्मान किन परिस्थितियों में करना चाहेंगे और किन में नहीं?

इब्राहिम गार्दी
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

सन् 1761 ई० से .....

सन् 1947 ई० तक .....

अहमद शाह अब्दाली

अंग्रेज शासक

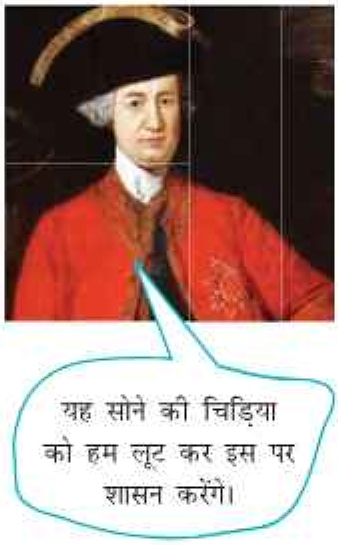

कहानी का मूल तत्व

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।

प्रस्तुत कहानी में मराठों के सेनापति इब्राहिम गार्दी की अपार देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम का सजीव वर्णन किया गया है। अहमदशाह अब्दाली के सारे प्रलोभनों को अस्वीकार करते हुए इब्राहिम गार्दी ने देश के प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति के साथ 'अल्लाह' कहते हुए प्राण त्याग दिए।

सन् 1761 ई. में पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली से मराठे हार गए। मराठों का सेनापति इब्राहिम गार्दी बंदी हुआ। वह अंत तक लड़ता रहा और घायल हो जाने के कारण पकड़ लिया गया।

इस युद्ध में अवध का नवाब शुजाउद्दौला अहमदशाह अब्दाली की ओर से लड़ रहा था। घायल इब्राहिम गार्दी को शुजाउद्दौला के टीले में, जो अहमदशाह अब्दाली की छावनी के भीतर ही था, पकड़कर रख लिया गया।

अहमदशाह अब्दाली को इब्राहिम के नाम से ही घृणा थी। इब्राहिम के पकड़े जाने और शुजाउद्दौला के शिविर में होने का समाचार उसको मिल गया था, इसलिए उसने इब्राहिम को अपने सामने पेश किए जाने के लिए शुजाउद्दौला के पास दूत भेजा।

शुजाउद्दौला इब्राहिम गार्दी की उपस्थिति से इंकार न कर सका। उसने अनुरोध किया, "इब्राहिम काफ़ी घायल हो गया है, अच्छा हो जाने पर पेश कर दूँगा।"

दूत ने अपने शाह का आदेश प्रकट किया, "उसको हर हालत में इसी पल जाना होगा।"

शुजाउद्दौला का प्रतिवाद क्षीण पड़ गया। फिर भी उसने कहा, "इब्राहिम मराठों के दस हज़ार सिपाहियों का सेनापति था। इस समय वह घायल हुआ पड़ा है। कम-से-कम इस वक्त तो उसे नहीं बुलाना चाहिए।"

दूत नहीं माना। उसको अहमदशाह अब्दाली का स्पष्ट आदेश था। शुजाउद्दौला को उस आदेश का पालन करना पड़ा। अहमदशाह के सामने इब्राहिम गार्दी लाया गया।

अहमदशाह ने पूछा, "तुम मराठों की दस पलटनों के जनरल थे?"

उसने उत्तर दिया, "हाँ, था।"

"पहले तुम फ्रांसीसियों के नौकर थे?"

"जी हाँ।"

"फिर हैदराबाद के निज़ाम के यहाँ नौकर हुए?"

"सही है।"

"तुमने निज़ाम की नौकरी क्यों छोड़ दी?"

"क्योंकि निज़ाम के रवैये को मैंने अपने उसूल के खिलाफ़ पाया।"

"तुमने फिरंगी ज़बान भी पढ़ी है?"

"सही है।"

मुसलमान होकर फिरंगी ज़बान पढ़ी। फिर मराठों की नौकरी की। खैर, अब तक जो कुछ तुमने किया, उस पर तुमको तौबा करनी चाहिए। तुमको शर्म आनी चाहिए।

घाव की परवाह न करते हुए इब्राहिम बोला, "तौबा और शर्म! आप क्या कहते हैं, अफगानशाह? आपके देश

में अपने मुल्क से मुहब्बत करने और उस पर जान देने वालों को क्या तौबा करनी पड़ती है? और क्या उसके लिए सिर नीचा करना पड़ता है?"

"जानते हो तुम इस वक्त किसके सामने हो और किससे बात कर रहे हो?" अहमदशाह ने कठोर वाणी में कहा। "जानता हूँ और न भी जानता होता तो जान जाता। पर यह यकीन है कि आप खुदा के फरिश्ते नहीं हैं।" इब्राहिम बोला।

"इतनी बड़ी फ़तह के बाद मैं गुस्से को अपने पास नहीं आने देना चाहता। मुझे ताज्जुब है, मुसलमान होकर तुमने अपनी जिंदगी को इस तरह बिगाड़ा।"

"तब आप यह जानते ही नहीं कि मुसलमान किसको कहते हैं, जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी करे, जो अपने मुल्क को बरबाद करने वाले प्रदेशियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं।"

मुझे मालूम हुआ है कि तुम फिरंगियों के कायल रहे हो। उनकी शागिर्दी में ही तुमने यह सब सीखा है। क्यों? तुम नमाज़ पढ़ते हो?"

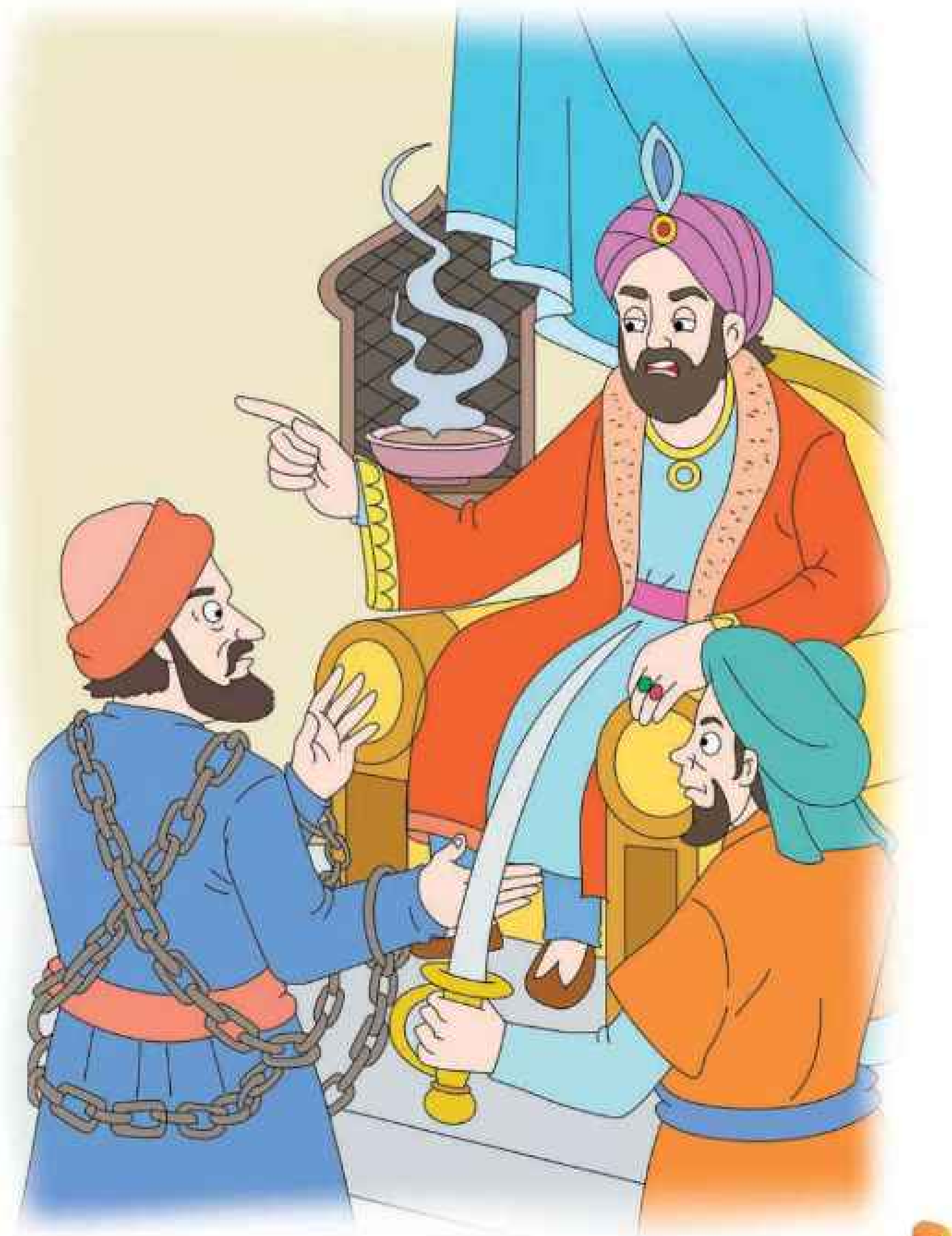

"हमेशा पाँचों वक्त।"

अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्यभरी मुस्कुराहट आई और आँखों में वध की क्रूरता। बोला, "फिरंगी या मराठी ज़बान में नमाज़ पढ़ते होंगे!"

इब्राहिम ने घावों की पीड़ा दबाते हुए कहा, "खुदा अरबी, फारसी या पश्तो ज़बान को ही समझता है क्या? वह मराठी या फ्रांसीसी नहीं जानता? क्या खुदा राम नहीं है? क्या राम और रहीम अलग-अलग हैं?"

अहमदशाह का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। बोला, "क्यों कुफ्र बकता है? तौबा कर नहीं तो टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे।"

"मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने

से रूह के तो टुकड़े होंगे नहीं।" इब्राहिम ने शांत किंतु दृढ़ स्वर में कहा। घायल इब्राहिम के ठंडे स्वर से अहमदशाह की क्रूरता कुछ कुंठित हुई। एक क्षण सोचने के बाद बोला, "अच्छा हम तुमको तौबा करने के लिए वक्त देते हैं। तौबा कर लो तो हम तुम्हें छोड़ देंगे। अपनी फ़ौज में अच्छी नौकरी भी देंगे। तुम फिरंगी तरीके पर कुछ दस्ते तैयार करना।"

कराह में दबे हुए इब्राहिम के होठों पर धीमी हँसी आ गई। अहमदशाह के उस खिलवाड़ को इब्राहिम समाप्त करना चाहता था।

उसने कहा, "अगर छूट जाऊँ तो पूना में ही फिर पलटनें तैयार करूँ और फिर इसी पानीपत के मैदान में उन अरमानों को निकालूँ, जिनको आज निकाल न पाया और जो मेरे कलेजे में धधक रहे हैं।"

"अब समझ में आ गया, तुम असल में बुतपरस्त हो।"

"ज़रूर हूँ, लेकिन मैं ऐसे बुत को पूजता हूँ जो दिल में बसा हुआ है और ख़्याल में मीठा है। जिन बुतों को बहुत से लोग पूजते हैं और आप भी, मैं उनको नहीं पूजता हूँ।"

"हम भी? खबरदार।" "हाँ, आप भी। हर तंबू के सामने मरे हुए सिपाहियों के सिरों के ढेर के इर्द-गिर्द जो आपके पठान और रूहेले सिपाही नाच-नाचकर जश्न मना रहे हैं, वह सब क्या है? क्या वह बुतपरस्ती नहीं?"

"तुम बदज़बान हो। तुम्हारा भी वही हाल किया जाएगा जो तुम्हारे सदाशिवराव भाऊ का हुआ है।"

चकित इब्राहिम के मुँह से निकल पड़ा, "क्यों, उनका क्या हुआ?"

उत्तर मिला, "मार दिया गया, सिर काट लिया गया।"

"उफ़!" घायल इब्राहिम ने दोनों हाथों से सिर थामकर कहा।

अब्दाली को उसकी पीड़ा रुचिकर लगी। बोला, "तुम लोगों का वह खूबसूरत छोकरा विश्वासराव भी मारा गया।"

इब्राहिम की बुझती हुई आँखों के सामने और भी अँधेरा छा गया। उसने कुपित स्वर में कहा, "विश्वासराव? मेरे मुल्क का ताज़! मेरे सिपाहियों के हौसलों का ताज़। उफ़!"

इब्राहिम गिर पड़ा।

अहमदशाह उसके तड़पने पर प्रसन्न था। उसकी निर्ममता ने सोचा, "शहीदी को जीत लिया।"

इब्राहिम ज़रा-सा उठकर भरभराते स्वर में बोला, "पानी।"

अब्दाली कड़का, "पहले तौबा कर।"

जहाँ-के-तहाँ पड़कर इब्राहिम ने कहा, "तौबा? शहीदी कहीं तौबा करता है? तौबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों और निहत्थों का कत्ल करते हैं।"

अब्दाली से नहीं सहा गया। इब्राहिम भी नहीं सह पा रहा था।

अब्दाली ने उसके टुकड़े-टुकड़े करके वध करने की आज्ञा दी।

एक अंग कटने पर इब्राहिम की चीख में से निकला, "मेरे ईमान पर पहली नियाज़।" दूसरे पर क्षीण स्वर में निकला, "हम हिंदू-मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे जो वहशियों और ज़ालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे।"

अंत में मराठों के सेनापति इब्राहिम गार्दी के मुँह से केवल एक शब्द निकला, "अल्लाह" – जिसको फरिश्तों के पंखों और इतिहास के पन्नों ने सावधानी के साथ छिपा लिया।

– वृंदावनलाल वर्मा

शब्दार्थ

विद्रोह	= विरोध	बुतपरस्त	= मूर्ति पूजा करने वाला
नर्ममता	= क्रूरता	कुफ्र	= बुरी बात
बहशी	= जंगली	शगिर्दी	= शिष्य होना
छावनी	= सेना के ठहरने का स्थान	उसूल	= नियम

उच्चारण करें

दस्ता	फिरंगी	खिवाड़	अरमान	कायल
शहीदी	फरिश्ता	धधकना		

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका पाठ के माध्यम से बच्चों को देश के वीरों की कहानी सुनाएँ और उन्हें भी उनके पद्चिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) इब्राहिम गार्दी कौन था?

(ख) मराठों और मुगलों के बीच तीसरा विश्व युद्ध कहाँ लड़ा गया?

(ग) इब्राहिम गार्दी को किस प्रकार की सजा मिली?

(घ) शुजाउद्दौला ने किसके पक्ष से तीसरा विश्व युद्ध लड़ा?

ज़रा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) इब्राहिम गार्दी के अनुसार सच्चा मुसलमान कौन है?

....

(ख) अहमदशाह अब्दाली को इब्राहिम गार्दी से नफ़रत क्यों थी?

....

(ग) इब्राहिम गार्दी ने अब्दाली के आगे तौबा करने से क्यों मना किया?

....

(घ) अंत समय इब्राहिम गार्दी के मुँह से कौन सा शब्द निकला?

....

3. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए।

(क) इब्राहिम गार्दी ने अंत समय में क्या कहा?

☐ अल्लाह ☐ माफ़ी ☐ बिस्मिल्लाह ☐ हे राम!

(ख) पानीपत का तीसरा विश्व युद्ध किस सन् में लड़ा गया?

☐ 1671 ई. ☐ 1761 ई. ☐ 1761 ई. ☐ 1617 ई.

(ग) अब्दाली कौन था?

☐ अवध का नवाब ☐ अफगान लुटेरा शासक

☐ मराठों का सेनापति ☐ रूहेला सरदार

4. किसने कहा, किससे कहा लिखिए।

(क) खुदा अरबी, फारसी या पश्तो ज़बान समझता है क्या?

....

(ख) मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के तो टुकड़े होंगे नहीं।''

....

(ग) ''पहले तुम फ्रांसीसियों के नौकर थे?''

....

5. सही मिलान कीजिए।

(क) सच्ची श्रद्धा	मराठों का सरदार
(ख) शुजाउद्दौला	अवध का नवाब
(ग) इब्राहिम गार्दी	अफगान शासक
(घ) अब्दाली	देश

6. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) तुमने .... ज़ाबान भी पढ़ी है। (फारसी/फिरंगी)

(ख) .... का सेनापति बंदी बनाया गया। (अवध/मराठों)

(ग) .... मेरे मुल्क का ताज़। (विश्वासराव/अब्दाली)

(घ) तुम असल में .... हो। (बुतपरस्त/सैनिक)

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. ''क्या राम और रहीम अलग-अलग है?'' अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

7. ''सच्चा मुसलमान वे नहीं जो पाँच वक्त की नमाज़ा पढ़ता हो, बल्कि वह है जो अपने मुल्क के साथ गद्दारी न करें।'' इस कथन से आप कितने सहमत/असहमत हो और क्यों? कारण बताते हुए लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द बनाइए।

(क) क्रोध – .... (ख) अनुरोध – ....

(ग) पीड़ा – .... (घ) नौकर – ....

(ङ) इच्छा – .... (च) घृणा – ....

9. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) प्राण – ....

(ख) युद्ध – ....

(ग) वध – ....

(घ) पानी – ....

10. दिए गए अकर्मक क्रिया से सकर्मक क्रिया शब्द बनाइए।

अकर्मक क्रिया		सकर्मक क्रिया
(क) लेटना	–	....
(ख) टूटना	–	....
(ग) छूटना	–	....

11. संज्ञा शब्दों से विशेषण शब्द की रचना कीजिए।

संज्ञा		विशेषण
(क) फ्रांस	–	....
(ख) अंत	–	....
(ग) धर्म	–	....

12. वाक्य में कारक पहचानिए और नाम लिखिए।

	कारक
(क) शहंशाह ने गरीबों को बहुत सताया।	....
(ख) अब्दाली ने इब्राहिम गार्दी को बंदी बनाया।	....
(ग) तुम पहले निज़ाम के यहाँ नौकर थे।	....
(घ) मेरे लिए क्या लाए?	....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

13. यदि आप इब्राहिम गार्दी की जगह होते तो क्या करते? कक्षा में चर्चा कीजिए।

14. आप अपने देश के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे? अपने विचार लेख के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. ''राष्ट्रभक्ति'' धर्म और जाति से ऊपर है।'' आप अपने राष्ट्र के प्रति सच्ची श्रद्धा किस प्रकार रखना चाहेंगे?

अध्याय 11

सम्मान
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

लाल बहादुर शास्त्री

डॉ. भीमराव अंबेडकर

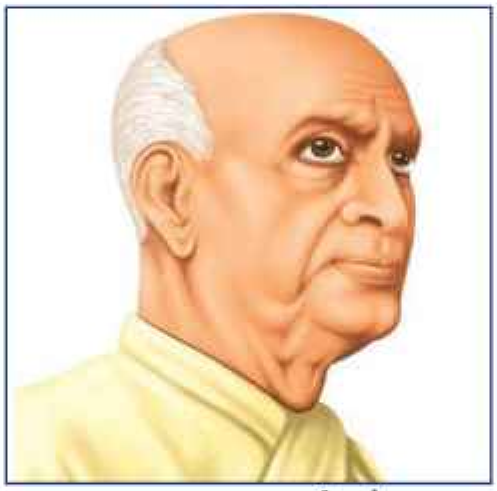

सरदार वल्लभ भाई पटेल

- उपरोक्त चित्र में दिए गए महापुरुषों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में यह बताया गया है कि हमें सदैव सकारात्मक विचार की भावना रखते हुए विकास की ओर प्रगति करना चाहिए।

तान्या गरीब परिवार में पैदा हुई थी। अक्सर वह मन ही मन सोचती, "क्या गरीब होना सचमुच अभिशाप है? क्या एक गरीब परिवार का बच्चा/बच्ची होनहार छात्र/छात्रा नहीं बन सकते? गरीबी का संबंध शरीर से तो हो सकता है, बुद्धि से तो नहीं। फिर इतिहास में न जाने कितने महापुरुषों के उदाहरण हैं, जो गरीबी झेलकर महान बने हैं। सुमन का क्या है, उसके पिता तो धनवान हैं। उसे अपने माता-पिता, कोठी-कार, नौकर-चाकर व पैसे का घमंड हो सकता है, किंतु ईश्वर तो सब कुछ देखता है, उसके कहने से मुझे निराश नहीं हो जाना चाहिए। इसे चुनौती मानना चाहिए और अपनी सफलता को साकार करके दिखाना चाहिए।" वह मन ही मन प्रश्न करती और स्वयं ही उनका हल ढूँढ़ लेती। इस तरह से तान्या एक सकारात्मक विचारों वाली छात्रा थी।

तान्या एक गरीब किसान की पुत्री है, जिनका देहांत हो चुका है। जो अब गाँव के एक पुराने से घर में माँ के साथ रहती है।

तान्या की माँ गरीब जरूर है किंतु विचारों की धनी है। वह तान्या को खूब पढ़ाना चाहती है। वह उसे पढ़ा-लिखाकर उसके पिता का नाम ऊँचा करना चाहती है। इसलिए वह हमेशा तान्या को साहसपूर्ण और प्रेरणादायक कहानियाँ एवं वीरों की गाथाएँ सुनाती है। कभी-कभी तो तान्या कहानी सुनते-सुनते इतनी रोमांचित हो उठती है कि उसी पात्र का अभिनय करने लगती।

तान्या का विद्यालय गाँव से दूर एक कस्बे में है। तान्या गाँव से विद्यालय तक का सफ़र पैदल ही तय किया करती।

तान्या उम्र में तो बहुत छोटी है, परंतु अक्ल के मामले में वह बड़े बड़ों के कान काट लेती है। तान्या व्यक्तिगत गुणों के आधार पर कक्षा के अन्य बच्चों से विशिष्ट थी।

जब फसल पकती तो तान्या नए अनाज की विभिन्न प्रकार की चीज़ें बनाकर लाती। तान्या का स्वभाव न केवल साधारण था, अपितु वह पढ़ाई में भी सबसे अव्वल रहती थी। वह विद्यालय की समस्त गतिविधियों में बहुत बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी तथा हमेशा प्रथम आती थी। सभी लड़कियों को आश्चर्य होता था कि एक पैदल चलने वाली लड़की कैसे सब कार्यों में उनसे आगे निकल जाती है।

संयोग से इस बार तान्या को प्रदेश स्तर पर होने वाले वार्षिक समारोह के लिए चुना गया। समारोह की अध्यक्षता प्रदेश के राज्यपाल को करनी है। इसलिए विद्यालय को महीनों पहले ही सजाना शुरू कर दिया गया।

समारोह में मात्र चार दिन ही शेष रह गए। तान्या ने समारोह में चलने के लिए अपनी माँ को भी तैयार कर लिया था।

एक दिन की बात है, जब तान्या चारा लाने के लिए खेतों पर गई हुई और उसकी माँ घर में खाना बना रही थी। जैसे ही वह चारा लेकर वापस आई, तो अपने दरवाजों पर खड़े हुए लोगों को देखकर चकित हो गई। गाँव के सभी प्रतिष्ठित लोग दरवाजे पर खड़े थे। उनके सामने उसकी माँ भी खड़ी थी। वे आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे।

तान्या ने नम्रतापूर्वक सभी को प्रणाम किया। उसका चेहरा पसीने से सराबोर हो रहा था। इससे पहले कि तान्या की माँ उनके बारे में उसे कुछ बताती, उनमें से एक आदमी बोला, ''बेटी, मैं इस जिले का डी. एम. हूँ। हमें तुम्हारे जैसी होनहार छात्रा पर गर्व है। तुमने कला, संगीत व पढ़ाई में पूरे प्रदेश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। तुमने अपने परिवार, अपने गाँव तथा अपने विद्यालय का ही नहीं बल्कि अपने पूरे प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। परसों प्रदेश के राज्यपाल तुम्हारा व तुम्हारी पूज्य माता जी का सम्मान करेंगे। यह लो आमंत्रण-पत्र।''

तान्या को आमंत्रण पत्र देकर उन सभी ने उसको शाबाशी दी। उसने सभी को प्रणाम किया। इस दृश्य को देखकर माँ की आँखें भर आईं। उन्होंने

तान्या को बाँहों में भर लिया। अंततः ऐसा दिन आ ही गया जिसका सभी को इंतजार था। राज्यपाल ने तान्या को पुरस्कार देते हुए कहा, "मैं तान्या जैसी मेहनती व होनहार छात्रा को देखकर गर्व महसूस कर रहा हूँ।" देश के सभी छात्र-छात्राओं को तान्या के जीवन से सबक लेना चाहिए। इससे बड़ा सम्मान इसकी माँ को दिया जाता है जिन्होंने इसके अंतर्मन में अपनी प्रेरणा का दीया जलाए रखा।" फिर तालियों की गड़गड़ाहट से आस-पास का वातावरण गूँज उठा।

शब्दार्थ

आमंत्रण-पत्र = विशेष स्थान समारोह में आने के लिए पत्र
पुरस्कार = ईनाम
आश्चर्य = हैरानी
अभिशाप = श्राप, शाप
हस्तक्षेप = फेरबदल करना
डी. एम. = जिला महिस्ट्रेट

उच्चारण करें

अभिन्य	रोमांचित	प्रेरणादायक	नम्रतापूर्वक	सर्वोच्च
पुरुस्कार	साहसपूर्ण	समारोह	अध्यक्षता	गड़गड़ाहट

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को इस कहानी का सार बताएँ तथा उन्हें जीवन में शिष्टाचार को अपनाने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) तान्या किस परिवार में पैदा हुई थी?

(ख) तान्या के पिताजी किस व्यवसाय से संबंध रखते थे?

(ग) तान्या कैसे विचारों वाली लड़की थी?

(घ) आमंत्रण पत्र के साथ तान्या के घर कौन आया?

(ङ) तान्या का पुरुस्कार के द्वारा किसने सम्मानित किया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) तान्या की प्रेरणाओं को कौन बल देता था?

....

(ख) तान्या किन गुणों के कारण होनहार छात्रा समझी जाती थी?

....

(ग) तान्या की माँ किस प्रकार की इच्छा रखती थी?

....

(घ) तान्या को आमंत्रण पत्र किसने और क्यों दिया?

....

(ङ) राज्यपाल ने तान्या के सम्मान में क्या कहा?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) तान्या मन ही मन सोचती, क्या गरीब होना सचमुच .... है?

(ख) तान्या कहानी सुनते-सुनते उसी पात्र का .... करने लगती।

(ग) तान्या अक़्ल के मामले में बड़ो-बड़ों के .... काट लेती।

(घ) परसों प्रदेश के राज्यपाल तुम्हारा व तुम्हारी पूज्य माताजी का .... करेंगे।

(ङ) मैं तान्या जैसी मेहनती वे .... छात्रा को देखकर गर्व महसूस हो रहा है।

4. दिए गए शब्दों को उचित रूप से मिलान कीजिए।

(क) चकित	शिक्षा
(ख) रोमांचित	श्राप
(ग) सबक	हैरान
(घ) अभिशाप	उत्साह

5. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) तान्या कहाँ निवास करती है?

☐ तहसील में ☐ शहर में ☐ गाँव में ☐ कस्बे में

(ख) तान्या की माँ किस प्रकार की महिला थी?

☐ पैसों की धनी ☐ जेवरों से धनी ☐ विचारों से धनी ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) समारोह में तान्या तथा उसकी माँ को किसने सम्मानित किया?

☐ शिक्षक ने ☐ प्रधानाध्यापक ने ☐ जिला मजिस्ट्रेट ने ☐ राज्यपाल ने

(घ) तान्या की माँ ने तान्या के अंतर्मन में .... का दिया जलाए रखा।

☐ प्रेरणा ☐ घृणा ☐ भेदभाव ☐ रोमांचं

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. क्या सकारात्मकता व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए प्रेरित करती है? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेदन करके उसके भेदों को बताइए।

(क) महापुरुषों - .... + ... = ...

(ख) विद्यालय - .... + ... = ...

(ग) प्रतिष्ठित - .... + ... = ...

(घ) आमंत्रण - .... + ... = ...

(ङ) सर्वोच्च - .... + ... = ...

8. दिए गए वाक्यों में काल की पहचान कीजिए।

> **कालः** काल का अर्थ होता है 'समय' ऐसी क्रियाएँ जो रही हैं वह वर्तमान काल, जो हो चुकी है वह भूतकाल, तथा जो आगे चलकर होंगी वह भविष्यत काल कहलाऐंगी।

(क) मेरा ग्रह कार्य समाप्त हो गया। ....

(ख) पिताजी समाचार सुन रहे हैं। ....

(ग) मैं कल मैच देखने जाऊँगा। ....

(घ) माँ ने मेहमानों के लिए व्यंजन बनाए। ....

(ङ) देखो, हलवाई मिठाई बना रहा है। ....

9. दिए गए उपसर्गों से दो-दो शब्द निर्मित कीजिए।

(क) दुर - ....

(ख) सु - ....

(ग) अन - ....

(घ) स्व - ....

(ङ) सिला - ....

10. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम की पहचान करके उन्हें रेखांकित करके लिखिए।

(क) किसी को शक हो, तो पूछ लो। ....

(ख) जो बाहर खड़ा है, उसे बुला लाओ। ....

(ग) वह अपने आप घर की ओ चल पड़ा। ....

(घ) जाओ सुमित से पूछो कि इसे क्या चाहिए। ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

12. ''परिश्रम मनुष्य को सबसे बड़ा मित्र होता है'' दिए गए कथन से आप कहा तक सहमत है? अपने अनुभवों के साथ साझा करें।

....

....

....

....

....

....

....

13. समस्याओं से जूझने वाला व्यक्ति ही नए रास्तों की खोज करता है दिए गए कथन से आप क्या समझते हैं? आपस में चर्चा करें।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

14. दी गई वर्ग पहेली में से सार्थक शब्द को पहचान कर लिखिए।

अ	नं	त	सा	र	अ	न	इ
मू	पा	शा	पौ	कृ	द	स	ति
ल्य	श	स्त्र	रा	त	म्य	र्व	हा
छ	ल	ह	णि	ज्ञ	प्रि	व्या	स
सा	प्ता	हि	क	का	ति	प्त	का
त	शा	का	हा	री	श	क	र

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. धैर्य जीवन जीने की एक कला है आप इस कला को किस प्रकार आत्मसात करना चाहेंगे?

अध्याय 12

दीवानों की हस्ती
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

हमें सदैव स्वतंत्र भाव को अनुसरित करते हुए जीवन को जीना चाहिए।

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी।
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?
किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,
दो बात कही, दो बात सुनी;
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुःख के घूँटों को,
हम एक भाव से पिए चले।
हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी-सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।
अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकने वाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं,
हम अपने बंधन तोड़ चले।

-भगवती चरण वर्मा

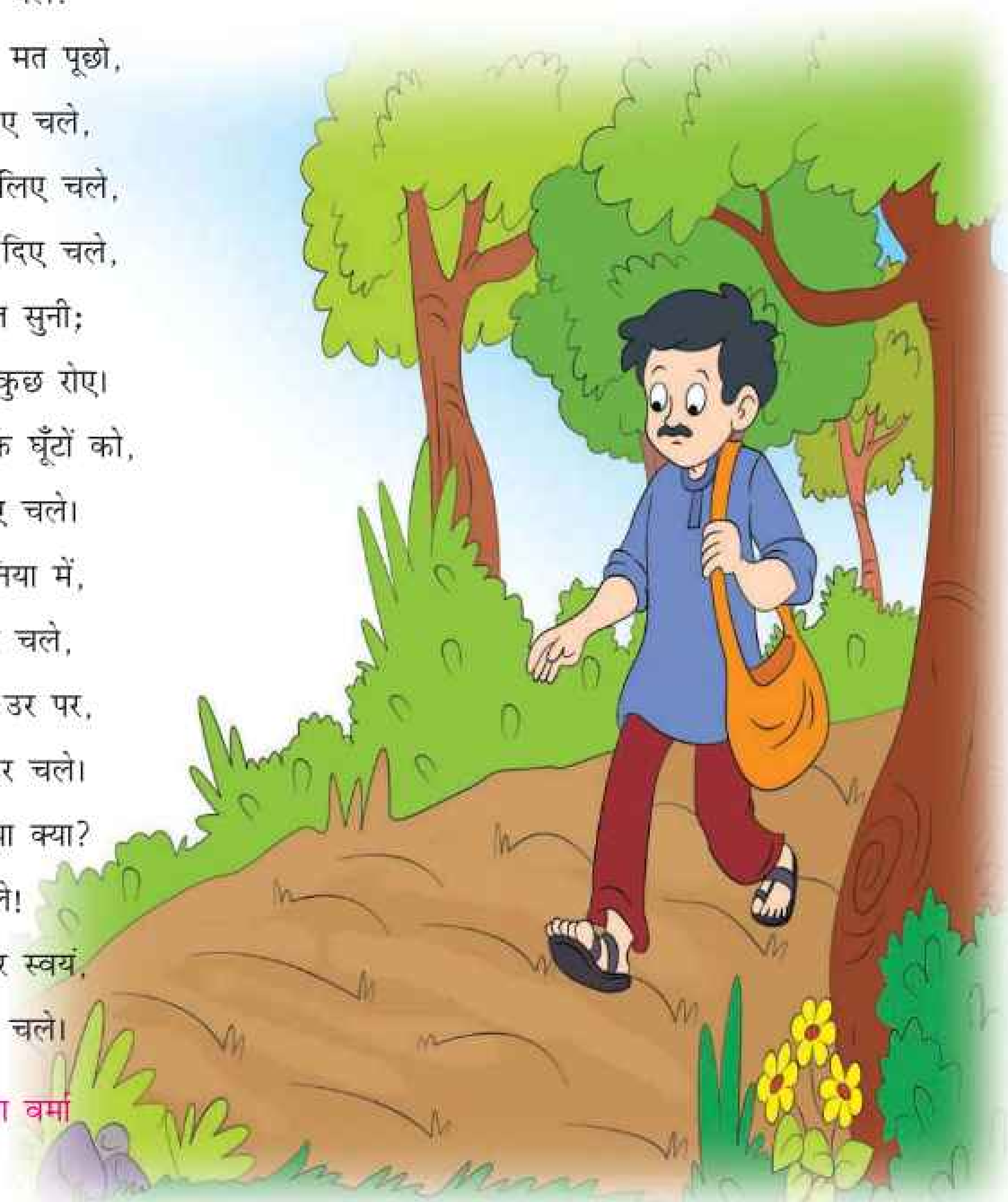

शब्दार्थ

दीवाना - पागल, मस्त, अपनी धुन में खोया रहना वाला
हस्ती - हैसियत
उल्लास - खुशी, हर्ष, उमंग
छककर - मन भरना
स्वच्छंद - आज़ाद, स्वतंत्र
आबाद - कभी नष्ट न हो
स्वयं - खुद

उच्चारण करें

मस्ती आलम भिखमंगो स्वच्छंद असफलता स्वयं बंधन पराया

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता का भावार्थ समझाएँ। बच्चों को अपने लक्ष्य का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) स्वच्छंदता किसे कहा जाता है?

(ख) अभावों में खुश रहने वाले को क्या कहते हैं?

(ग) सुख-दुख के घूँटों को कवि कैसे पी रहा है?

(घ) कवि के द्वारा दुनिया को किस प्रकार प्रदर्शित किया गया है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कवि ने 'दीवाना' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?

....

(ख) ज्ञान को वितरित करने के लिए कवि क्यों प्रेरित कर रहा है?

....

(ग) किस प्रकार के प्रेम को लुटाने की बात कवि के द्वारा की गई है?

(घ) प्रस्तुत कविता में कवि ने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?

3. दी गई पंक्तियों को पूरा कीजिए।

(क) हम दीवानों की क्या हस्ती,

हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

(ख) आँसू बनकर बह चले अभी।

तुम कैसे आए, कहाँ चले?

(ग) किस ओर चले? यह मत पूछो,

जग को अपना कुछ दिए चले।

(घ) आबाद रहें रुकने वाले।

हम अपने बंधन तोड़ चले।

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) 'दीवानों की हस्ती' कविता के रचयिता कौन है?

- हजारी प्रसाद द्विवेदी ☐
- भगवती चरण वर्मा ☐
- राम प्रसाद 'शुक्ल' ☐
- हेमचंद्र गोस्वामी ☐

(ख) प्रस्तुत कविता में 'प्रयुक्त हस्ती शब्द का अर्थ बताइए।

- हैसियत ☐
- दीवाना ☐
- आबाद ☐
- इनमें से कोई नहीं ☐

(ग) किस भार को लेकर कवि चल रहा है?

- सफलता ☐
- असफलता ☐
- परिश्रम ☐
- आलस्य ☐

(घ) दीवाने क्य उड़कर चल रहे हैं?

- पानी ☐
- हवा ☐
- धूल ☐
- इनमें से कोई नहीं ☐

(ङ) प्रस्तुत कविता में कवि क्या पीकर चल रहा है?

- सुख-दुख के घूँट ☐
- असफलता का बोझ ☐
- स्वच्छंद पानी ☐
- इनमें से कोई नहीं ☐

5. दिए गए शब्दों को उनके उचित शब्दों से मिलान कीजिए।

दीवानों की	भार
मस्ती का	घूँट
सुख-दुख के	तोड़ चले
असफलता का	आलम
बंधन	हस्ती

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

6. ''रमता जोगी बहता पानी'' इस कथन से आप क्या समझते हैं? सोच विचार करके लिखिए।

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए रिक्त स्थानों में पाँच विदेशी शब्छों को लिखिए, जिन्हें आप रोज़मर्रा में प्रयोग करते हैं?

विदेशी शब्द – वे शब्द जो अरबी, फारसी, तुर्की भाषाओं से हिंदी में स्वीकृत हुए हैं, उन्हें विदेश शब्द कहते हैं। जैसे- अलमारी, चाकू, डॉक्टर आदि।

....

....

....

....

8. दिए गए समस्त पदों का सामासिक विग्रह कीजिए।

समास : परस्पर दो या दो से अधिक शब्दों के संबंध एवं मेल से बने नए शब्द निर्माण हो समास कहते हैं। जैसे- महात्मा- महान है जो आत्मा।

आपबीती – ....

मृगनयनी – ....

यथासंभव – ....

त्रिवेजी – ....

पंजाब – ....

9. नीचे दिए गए शब्दो के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

तुरंग – ....

शिला – ....

घन – ....

खग – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

हम दीवानों की क्या हस्ती,
है आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलस साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

11. नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

''अपनी ही मस्ती में रहने वाला व्यक्ति जीवन के किन महत्वपूर्ण पक्षों को दर्शाता है? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. प्रस्तुत कविता 'दीवानों की हस्ती' के लेखक भगवती चरण वर्मा है। भगवती चरण वर्मा के अलावा कुद अन्य कवियों का पता लगाइए और उनकी रचनाएँ बताइए।

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. ''लक्ष्य को पाने के लिए इंसान को विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है।'' आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किस प्रकार आत्मार्पित होना चाहेंगे?

अध्याय 13

ऐनीबेसेंट
(जीवनी)

अध्ययन से पूर्व

शिक्षक/शिक्षिका स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी उन महिलाओं के विषय पर चर्चा करें जिन्होंने शिक्षा क्षेत्र में भी सराहनीय योगदान दिया।

ऐनीबेसेंट

सावित्री बाई

सरोजनी नायडू

जीवनी का मूल तत्व

ऐनीबेसेंट का स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए योगदान का परिचय बच्चों को प्रदान करना।

भारत का 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जिसे अंग्रेज़ों ने विद्रोह (गदर) कहा, इंग्लैंड की पार्लियामेंट में तूफ़ान मचा दिया। अंग्रेज़ किसी भी दशा में 'सोने की चिड़िया' को हाथ से नहीं निकलने देना चाहते थे।

उन्हीं दिनों एनीबेसेंट ने एक पुस्तक लिखी– 'इंग्लैंड, इण्डिया एंड अफगानिस्तान'। यह पुस्तक 1879 में पहली बार लंदन में प्रकाशित हुई। इसमें बताया गया कि किस प्रकार एक व्यापारी कंपनी भारत की स्वामिनी बन बैठी। यह पहला अवसर था, जब इंग्लैंड के एक नागरिक ने इतने स्पष्ट और तीखे शब्दों में इंग्लैंड की साम्राज्यवादी नीतियों का भंडाफोड़ किया था।

एनीबेसेंट ने बताया कि जब भारत की निर्धनता की बात सोचते हैं तो आँखों के सामने जोंकों का दृश्य आता है, जिन्होंने भारत का धन चूसा है। अंग्रेजों की भारत-विजय की कहानी बहुत घिनौनी है। अब, आपके मन में यह जानने की उत्सुकता हो रही होगी कि यह एनीबेसेंट थीं कौन?

अक्टूबर 1847 में लंदन में एक बच्ची का जन्म हुआ था। उसका बचपन का नाम एनीवुड था। वह अपने आपको आयरिश कहलाना अधिक पसंद करती थी, क्योंकि उसकी माँ आयरिश थीं। एनी अपनी माँ से बहुत प्यार करती थीं।

एनी के पिता एक बड़े विद्वान थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। जब एनी केवल पाँच वर्ष की थी, पिता की मृत्यु हो गई। एनी की माँ उसे हैरो स्कूल में पढ़ाना चाहती थीं। उस स्कूल के प्रिंसिपल की सहायता से यह संभव हुआ।

वैसे एनी की शिक्षा नियमित रूप से किसी स्कूल में शुरू नहीं हुई। मिस मेरियट के घर पर रहकर उन्हीं के द्वारा एनी की पढ़ाई हो सकी।

दिसम्बर 1867 में एक पादरी फ्रैंक बेसेंट के साथ एनी का विवाह हुआ। पति-पत्नी की इच्छाओं और भावनाओं में ज़मीन-आसमान का अंतर था। फिर भी जीवन जैसे-तैसे चलता रहा। वह दो बच्चों की माँ भी बन गईं, परंतु दोनों बच्चे निरंतर बीमार रहने लगे। 1873 ई. में केवल 26 वर्ष की आयु में एनीबेसेंट घर से निकाल दी गईं और वह सच्चाई की खोज में आगे बढ़ चली।

1874 ई. में एनी बेसेंट चार्ल्स ब्राडलेघ की एक संस्था 'नेशनल सेकुलर सोसायटी' में सम्मिलित हुईं। एनीबेसेंट ने पूरे देश में . घूम-घूमकर धर्म और राजनीति पर भाषण दिए। उन्होंने 1887 में मजदूरों के लिए आठ घंटे कार्य-दिवस और बेरोज़गारी की समस्या पर जमकर संघर्ष किया।

1889 का वर्ष उनके जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हुआ। उनके जीवन ने उस समय नया मोड़ लिया जब उन्हें ऐसा लगा कि उनके भटकते मन को शांति मिल गई है। वे 'थियोसोफिकल सोसायटी' की सदस्य बन गईं।

भारत में इसकी स्थापना 1879 ई. में मैडम ब्लेवट्स्की और आलकोट ने मिलकर की थी।

इस संस्था के उद्देश्य थे–

– विश्वबंधुत्व की स्थापना।

– आर्य और पूर्वी धर्म, भाषा और विज्ञान के अध्ययन को बढ़ावा देना।

एनीबेसेंट 16 नवम्बर, 1893 को भारत पहुँची। एनी के लिए भारत एक ऐसी पवित्र भूमि थी, जिसका महान धर्म, विश्व के सब धर्मों का मूल था। उनकी दृष्टि में भारत-भूमि सब संस्कृतियों का केंद्र थी। वह अपने सपनों के भारत को अपनी माता मानकर आई थीं। वह भारत में जहाँ भी गई, लोगों ने उनका बहुत सम्मान किया पर भारत की दुर्दशा देखकर एनी हैरान रह गई।

डॉ. भगवानदास के साथ मिलकर एनी ने वदे, उपनिषद्, रामायण आरै महाभारत का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अन्य धर्मों के बारे में भी बहतु पढा़ आरै समझा। वे कहती थीं – "धर्म तो परमात्मा तक पहुँचने का माध्यम है। जेसै नदियाँ समुद्र में जा मिलती है, वसै ही धर्म भी प्रभु के प्राप्ति का मार्ग है।"

शिक्षा के क्षेत्र में एनीबेसेंट ने इंग्लैंड में बहुमूल्य योगदान दिया था। भारत में भी शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने सराहनीय काम किया। उन्होंने यह बात भली प्रकार समझ ली थी कि भारतवासी जब तक पूरी तरह शिक्षित न हो जाएँगे, तब तक वे परतंत्रता की बेड़ियाँ नहीं तोड़ सकेंगे। एनीबेसेंट ने प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया। प्राचीन भारत में शिक्षा पर राज्य का कोई अंकुश नहीं होता था। विश्वविद्यालय शिक्षा के मंदिर थे। शिक्षक जब किसी भी दरबार में जाते थे तो राजा सिंहासन से उतरकर उनका आदर करते थे। वह कम-से-कम शुल्क लेकर अधिक-से-अधिक बच्चों को शिक्षा दिलाना चाहती थी। अपनी नई शिक्षा में वह पूर्व और पश्चिम के अच्छे आदर्शों को मिलाना चाहती थी। उन्होनें 7 जुलाई, 1908 ई० में वाराणसी के एक छोटे से घर में अपने सपनों के शिक्षा-केंद्र की स्थापना की। रिचडर्स ने उसके पहले प्रिंसिपल तथा हैरी बेनबेरी पहले हेडमास्टर बने। भारतीय समाचार-पत्रों में इस प्रयास

की भरपूर प्रशंसा हुई। 1885 ई. में मबुंई में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना हो चुकी थी। एनीबेसेंट भी भारत के स्वतत्रंता आंदोलन से जुड़ चुकी थी।

1917 ई. में कांग्रेस का अधिवेशन कोलकाता में हुआ। एनीबेसेंट इस सम्मेलन में कांग्रेस अध्यक्ष चुनी गईं। यह किसी भी स्वतंत्रता सेनानी के लिए बहुत बड़ा सम्मान था। इस सम्मेलन में चार हज़ार सदस्य आए थे। एनीबेसेंट उस समय संसार की मानी हुई वक्ता थीं। उन्होंने कहा था– "आप लोगों ने मुझे जो सम्मान दिया है, उसके प्रति मेरी कृतज्ञता शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती। आपके उपहार को मैं मातृभूमि की सेवा में अर्पित करना चाहती हूँ। मेरे पास जो भी है और मैं जो भी हूँ, वह सब कुछ मैं भारत माता की बलिवेदी पर चढ़ाती हूँ। हम सब मिलकर शब्दों में ही नहीं, बल्कि कर्तव्य द्वारा 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष करेंगे।"

'होमरूल' की बात सबसे पहले 1895 में बाल गंगाधर तिलक ने उठाई थी। 1914 ई में एनीबेसेंट ने होमरूल को कार्यरूप में लाने के लिए लोगों को तैयार करना आरंभ कर दिया। एनीबेसेंट भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थीं। 'होमरूल' का काम सुचारु ढंग से चलाने के लिए एनीबेसेंट ने एक साप्ताहिक पत्र 'कॉमनवेल्थ' शुरू किया। उन्होंने इसके पक्ष में जगह-जगह भाषण दिए। उनके लेखों से अंग्रेज़ शासक विचलित हो उठे। पत्र को ज़ब्त कर लिया गया तथा दो हज़ार रुपए जुर्माना जमा करने को कहा गया। होमरूल का नारा भारत के सब शिक्षित लोगों ने अपना लिया। कांग्रेस और लीग दोनों को इस आंदोलन ने जीत लिया। एनीबेसेंट का जगह-जगह पर सम्मान किया गया। जिस घोड़ागाड़ी में बैठकर एनीबेसेंट जाती थीं, नौजवान उस गाड़ी से घोड़ों को अलग कर देते थे और उस गाड़ी को अपने कंधों पर खींचकर सभा तक ले जाते थे। चारों ओर एनी बेसेंट की जय-जयकार होने लगी।

1929 ई॰ में एनीबेसेंट 'बुडापेस्ट यूरोपियन कांग्रेस' तथा 'शिकागो वर्ल्ड कांग्रेस' की अध्यक्षता करने गईं परंतु

1931 के आरंभ से ही वे अस्वस्थ रहने लगीं। फिर भी उन्होंने चेन्नई में थियोसोफिकल सोसायटी का केंद्र बनाया और उसे सँवारने में लग गईं। जून के महीने में उनके घुटने में चोट लगी। इसके बाद वे कभी न उठ सकीं। 20 सितम्बर, 1933 को वे इस संसार से विदा हो गईं।

उनका नाम भारतीय इतिहास में सदा अमर रहेगा।

वे चाहती थीं – "हम सब बच्चे भारतवासी बनकर जिएँ और भारतवासी बनकर ही मरें।"

ऐसा बनकर ही हम उनकी स्मृति को सदवै बनाए रखने में सफल हो सकेंगे यही उनके लिए सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

शब्दार्थ

स्वामिनी - मालकिन

परतंत्रता - गुलामी

अर्पति - भेंट

स्मृति - याद

विश्व-बंधुत्व - संसार का भाईचारा

निर्धनता - गरीबी

विचलित - अस्थिर

उच्चारण करें

अध्ययन   बहुमूल्य   कार्यरूप   श्रद्धांजलि

साम्राज्यवादी   पार्लियामेंट   विश्वबंधुत्व

शिक्षण संकेत–

शिक्षक/शिक्षिका जीवनी के माध्यम से बच्चों को उनके शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान के बारे में भी बताए।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) ऐनीबेसेंट का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) ऐनीबेसेंट क्या चाहती थी?

(ग) ऐनीबेसेंट द्वारा रचित पुस्तक का क्या नाम था?

(घ) ऐनीबेसेंट सन् 1874 ई. में किस संस्था के साथ जुड़ी?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भारत के बारे में ऐनीबेसेंट के क्या विचार थे?

(ख) भारत में धर्म के विषय पर ऐनीबेसेंट क्या सोचती थी?

(ग) ऐनीबेसेंट स्वतंत्रता संग्राम से क्यों जुड़ गई थी?

(घ) ऐनीबेसेंट का विवाहिक जीवन कैसा था?

3. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) ऐनीबेसेंट ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दिया। ( )

(ख) ऐनीबेसेंट द्वारा रचित पुस्तक फ्रांस में प्रकाशित हुई। ( )

(ग) ऐनीबेसेंट का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ। ( )

(घ) ऐनीबेसेंट ने पूर्वी व पश्चिमी शिक्षा को मिलाना चाहा। ( )

4. दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) ऐनीबेसेंट .... सोसायटी की सदस्य बन गई। (संस्था/थियोसोफिकल)

(ख) .... के क्षेत्र में ऐनीबेसेंट ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। (शिक्षा/पुस्तक)

(ग) ऐनीबेसेंट को स्वतंत्रता संग्राम में .... का अध्यक्ष चुना गया। (भाजपा/कांग्रेस)

(घ) उन्होंने इंग्लैंड की .... नीतियों का भांडाफोड़ किया। (मार्कसवादी/साम्राज्यवादी)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भारत का स्वंत्रता संग्राम कब हुआ?

(i) सन् 1857 ☐ (ii) सन् 1858 ☐ (iii) सन् 1839 ☐ (iv) सन् 1859 ☐

(ख) ऐनीबेसेंट के बचपन का नाम था-

(i) आयरिश ☐ (ii) एनीवूड ☐ (iii) हेनरी ☐ (iii) कोई भी नहीं ☐

(ग) ऐनीबेसेंट ने .... के साथ मिलकर वेद, उपनिषद्, रामायण आदि का अध्ययन किया

(i) डा. सर्वपल्ली राधाकृष्ण ☐ (ii) डॉ. भीमराव अम्बेडकर ☐

(iii) डॉ. भगवानदास ☐ (iv) डॉ. कृष्णामूर्ति ☐

(घ) ऐनीबेसेंट द्वारा शुरू किए जाने वाले पत्र का नाम था-

(i) पार्लियामेंट ☐ (ii) होमरूल ☐

(iii) कॉमनवेल्थ ☐ (iv) वन्दे मात्रम् ☐

6. वाक्यांशों का मिलान कीजिए।

(क) उन्हीं दिनों ऐनीबेसेंट ने	(i) एक बच्ची का जन्म हुआ था।
(ख) अक्टूबर 1874 में लंदन में	(ii) एक पुस्तक लिखी।
(ग) ऐनी की माँ उसे	(iii) के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।
(घ) 1889 का वर्ष उनके जीवन	(iv) हैरा स्कूल में पढ़ना चाहती थी।

7. दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) श्रद्धांजलि - ....

(ख) स्मृति- ....

(ग) सम्मेलन - ....

(घ) शिक्षित - ....

(ङ) आंदोलन - ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

8. अंग्रेजों के लिए भारत 'सोने की चिड़िया' क्यों था? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर लिखिए।

....

....

....

....

9. अंग्रेजों की भारत विजय की कहानी बहुत घिनौनी है। ऐनीबेसेंट ने ऐसा क्यों और किसके लिए कहा? कक्षा में चर्चा करते हुए लिखिए।

....

....

....

....

10. 'शिक्षित भारत ही परतंत्रता की बेड़िया तोड़ सकेगा।' ऐनीबेसेंट की इस विचारधारा के पीछे क्या उद्देश्य था? सोचकर कक्षा में संवाद कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

11. दिए गए उपसर्गों से सार्थक शब्द बनाइए।

(क) अ – ....

(ख) प्र – ....

(ग) नि – ....

(घ) अनु – ....

12. दिए गए शब्दों में सही भाववाचक संज्ञा शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।

(क)	सोना,	चिकित्सक,	इंसान,	फ़कीरी
(ख)	बुढ़ापा,	भला,	खटास,	संदरता
(ग)	प्रगतिशील,	स्मृति,	भक्ति,	भातृत्व
(घ)	काला,	दुष्टता,	तपस्वी,	झुकाव

13. दिए गए शब्दों में सही भाव

समस्त पद	समास का नाम
(क) शताब्दी-	....
(ख) पराधीन -	....
(ग) देशभक्ति -	....
(घ) देश-विदेश -	....

14. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताइए।

(क) विद्या - ....

(ख) स्वतंत्रता - ....

(ग) सभ्यता - ....

(घ) बचपन ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

15. 'भारतीय समाज में नारी' विषय पर अनुच्छेद लेखन कीजिए

16. ऐनीबेसेंट के अलावा अन्य किन महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया? उनके विषय पर जानकारी एकत्रित कर कक्षा में चर्चा कीजिए।

17. ऐनीबेसेंट की 5 उपलब्धियों के नाम लिखिए जो उन्होंने अपने जीवन कालम में हासिल की?

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

18. शिवाजी एग प्रसिद्ध मराठा शासक थे। उनसे संबंधित कुछ प्रमुख तथ्य बताइए।

(क) ऐनीबेसेंट की मृत्यु - ....

(ख) होमरूल लीग की स्थापना - ....

(ग) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष - ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

19. हमारी विचारधारा ही हमारे व्यक्तित्व को निर्मल बनाती है। ऐनीबेसेंट की विचारधारा ने अंग्रेज़ों का तख़्ता पलट कर रख दिया। आप किस तरह की विचारधारा द्वारा स्वदेश को जागृत करना चाहेंगे?

अध्याय 14

भगत सिंह का पत्र
(पत्र)

अध्ययन से पूर्व

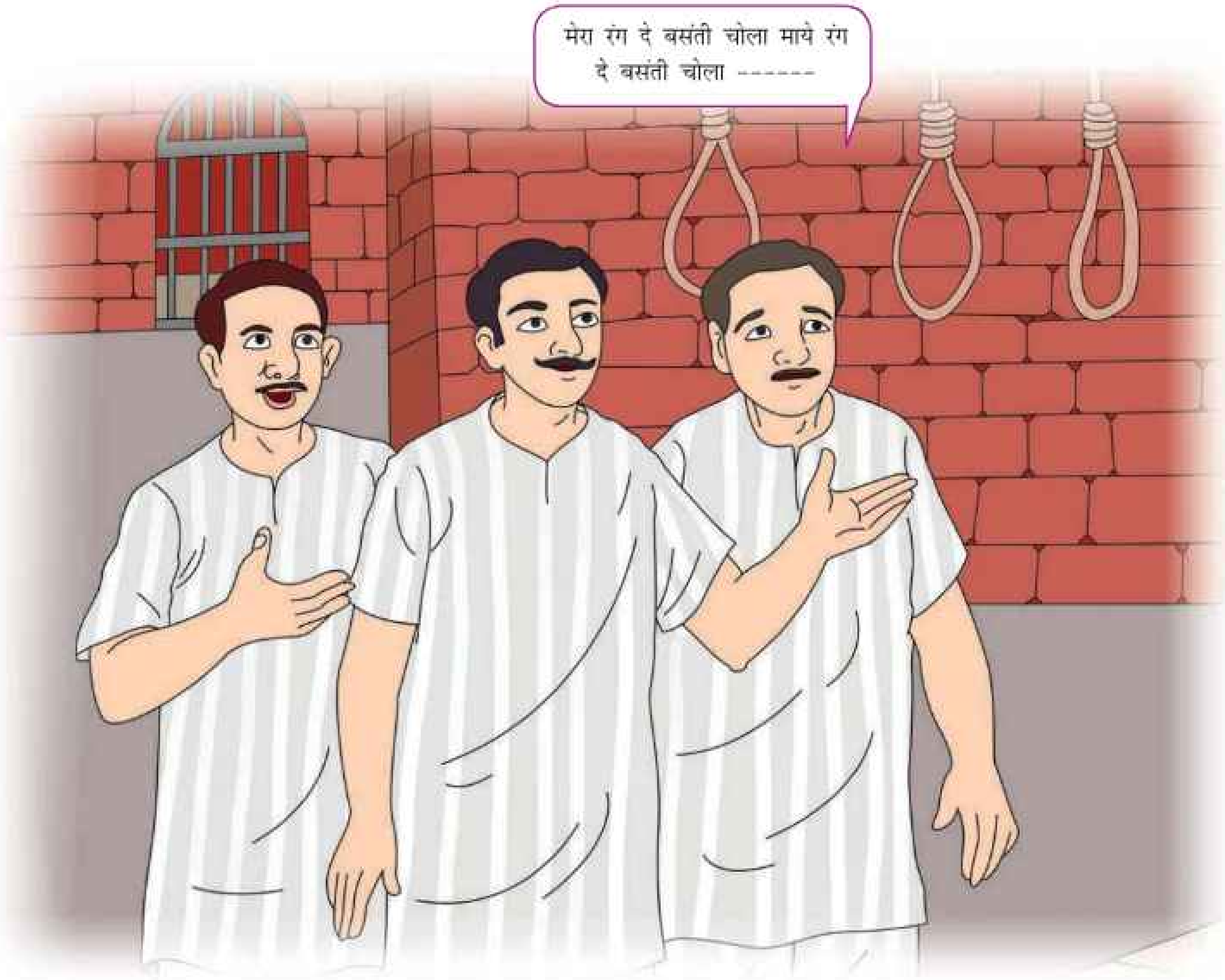

पत्र का मूल तत्व

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को मातृभूमि पर न्यौछावर के लिए प्रोत्साहित करें।

पूज्य पिताजी,

नमस्ते!

मेरी ज़िंदगी मकसदे-आला यानी आज़ादी-ए-हिंद के उसूल के लिए वक्फ़ हो चुकी है। इसलिए मेरी ज़िंदगी में आराम और दुनियावी ख़ाहिशात बायसे-कशिश नहीं हैं।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था, तो बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते-वतन के लिए वक्फ़ कर दिया गया है। लिहाज़ा मैं उस वक्त की प्रतीक्षा पूरी कर रहा हूँ।

उम्मीद है, आप मुझे माफ़ी फरमाएँगे।

आपका ताबेदार,
भगत सिंह

दिल्ली जेल

26 अप्रैल, 1929

पूज्य पिता जी महाराज,

वंदे मातरम्!

अर्ज़ यह है कि हम लोग 22 अप्रैल को पुलिस की हवालात से दिल्ली जेल में मुंतकिल कर दिए गए थे और इस वक्त दिल्ली जेल में ही हैं। मुकदमा 7 मई को जेल के अंदर ही शुरू होगा। ग़ालिबन एक माह में सारा ड्रामा खत्म हो जाएगा। ज़्यादा फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है। मुझे मालूम हुआ कि आप तशरीफ लाए थे और किसी वकील वगैरह से बातचीत की थी और मुझसे मिलने की कोशिश भी की थी, मगर तब सब इंतज़ाम न हो सका। कपड़े मुझे परसों मिले। मुलाकात आप जिस दिन तशरीफ़ लाएँ, हो सकेगी। वकील वगैरह की कोई खास ज़रूरत नहीं है। दो-एक अमूर पर थोड़ा-सा मशविरा लेना चाहता हूँ। मगर यह कोई खास अहमियत नहीं रखते। आप ख्वामख्वाह ज़्यादा तकलीफ़ न कीजिएगा। अगर आप मिलने के लिए आएँ तो अकेले आइएगा। वालिदा साहिबा को साथ न लाइएगा। ख्वामख्वाह वो रो देंगी और मुझे भी कुछ तकलीफ़ ज़रूर होगी।

घर के सब हालात आपसे मिलने पर मालूम हो सकेंगे।

हाँ, अगर हो सके तो गीता रहस्य, नेपोलियन की मोटी सवानह जो आपको मेरी कुतुब में मिल जाएँगी, अंग्रेज़ी के कुछ आला नॉवेल लेते आइएगा। वालिदा साहिबा, भाभी साहिबा, माता जी (दादी जी) के चरणों में नमस्कार। रणवीर सिंह और कुलतार सिंह को नमस्ते। बाबू जी (दादा जी) के चरणों में नमस्ते अर्ज़ कर दीजिएगा। इस वक्त पुलिस-हवालात और जेल में हमारे साथ निहायती अच्छा सलूक हो रहा है। आप किसी किस्म की फिक्र न कीजिएगा। मुझे आपका एड्रेस मालूम नहीं है, इसलिए इस पते (कांग्रेस दफ्तर)पर लिख रहा हूँ।

आपका ताबेदार

शब्दार्थ

यज्ञोपवीत - जनेऊ संस्कार
मुंतकिल - स्थानांतरण
बायसे-कशिश - आकर्षक
खिदमत - सेवा
अमूर - विषयों
ख्वाहिशात - इच्छाएँ
ख्वामख्वाह - बेकार में

उच्चारण करें

अहमियत हवालात निहायत फिक्र
उसूल खिदमते-वतन सवानह

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को भगत सिंह का जीवन परिचय देते हुए उनके अन्य पत्रों के बारे में भी बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भगत सिंह ने पत्र किसके नाम लिखा था?

(ख) भगत सिंह ने किस जेल से पत्र लिखा?

(ग) 'आपका ताबेदार' भगतसिंह ने किसको कहा?

(घ) भगत सिंह के साथ जेल में कैसा सलूक किया जा रहा था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भगत सिंह ने अपने पिता से कौन-सी पुस्तकें लाने का अनुरोध किया था?

....

(ख) भगत सिंह ने अपने पत्र को किसके पते पर भेजा?

....

(ग) भगत सिंह ने जेल में किसको साथ न लाने को कहा?

....

(घ) भगत सिंह किस वक्त की प्रतीक्षा कर रहे थे?

....

3. किसने कहा, किससे कहा?

(क) उम्मीद है आप मुझे माफ़ी फरमाएँगे।

....

(ख) आप ख्वामख्वाह ज्यादा तकलीफ न कीजिएगा।

....

(ग) इस वक्त जेल में हमारे साथ अच्छा सलूक हो रहा है।

....

4. उचित कथन पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भगत सिंह ने पिता से गीता उपदेश मंगवाएँ। ( )

(ख) भगत सिंह पर मुकदमा 26 अप्रैल 1929 को हुआ। ( )

(ग) भगत सिंह अपना घर स्वयं छोड़ने के लिए मजबूर हुअ? ( )

(घ) भगत सिंह ने अपने पत्र में 'महात्मा गाँधी को 'बापू जी' कहा। ( )

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) शिवाजी का राज्याभिषेक कब हुआ?

6 जून 1674 ☐ 10 मई 1780 ☐

5 जून 1520 ☐ 3 फरवरी 1674 ☐

ज़रा सोचिए Critical Thinking

5. भगत सिंह पर किस घटना के आरोप में मुकदमा चलाया जा रहा था? जिसके कारण उन्हें कारावास और मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

....

....

6. भगतसिंह ने अपने दूसरे-पत्र में क्या लिखा होगा? शिक्षक/शिक्षिका के साथ चर्चा करते हुए अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।

(क) कोशिश- ....
(ख) उसूल- ....
(ग) ज़रूर- ....
(घ) हालात- ....
(ङ) तकलीफ़- ....
(च) वकील- ....

8. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) अच्छा- ....
(ख) खास- ....
(ग) फ़िक्र- ....
(घ) ज़िन्दगी- ....
(ङ) उम्मीद- ....

9. दिए गए शब्दों के वाक्य बनाइए।

(क) ज़िन्दगी -

(ख) प्रतीक्षा -

(ग) माफ़ी -

(घ) उम्मीद -

10. दिए गए शब्द समूहों में उचित स्थान पर विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए।

(क) पं नेहरू डॉ. अंबेडकर और प्रो सी वी रामन भारत के महापुरुष हैं।

(ख) मेरा बचपन क्या यह कल की बात है।

(ग) गाँधी जी ने यंग इंडिया दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया।

(घ) मनुष्यत्व को मानो पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो।

11. दिए गए संधि-विच्छेद से शब्द बनाइए।

(क) सत्य + आग्रह – ....

(ख) मातृ + ऋण – ....

(ग) परि + ईश – ....

(घ) परम + ईश्वर – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

12. दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(क) बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था।

....

....

(ख) मेरी ज़िन्दगी चुनकर आराम और दुनियावी बायसे-कशिश नहीं हैं।

....

....

(ग) गालिबान एक माह में सारा ड्रामा खत्म हो जाएगा।

....

....

13. अपने भाई को एक पत्र लिखिए, जिसमें भगतसिंह की जीवनी के कुछ अंश हो।

14. भगतसिंह ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका किस तरह अदा की? कक्षा में चर्चा करते हुए जानिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

15. मातृभूमि के लिए कुर्बान होना मूल सिद्धांत होना चाहिए। आप मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी भूमिका किस तरह अदा करना चाहेंगे?

अध्याय 15

आदर्श माता जीजाबाई

(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

अहिल्याबाई होल्कर

झलकारी बाई

रानी दुर्गावती

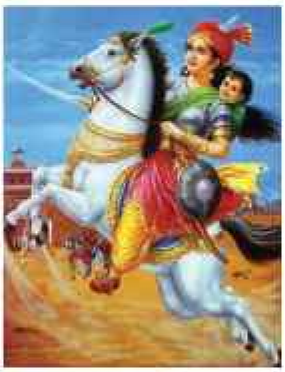

रानी लक्ष्मीबाई

रजिया सुल्तान

सावित्री बाईफुले

- उपरोक्त चित्र में दर्शाई गई इन महिलाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करें।
- इन महिलाओं का समाज के कल्याण में क्या योगदान था?

काहानी का मूल तत्व

जीजाबाई का जीवन परिचय एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व को दर्शाता है। हमें भी इनके पदचिन्हों का अनुपालन करना चाहिए।

बालक जैसे जैसे बड़ा होता है तो उसी प्रकार उसका चरित्र का निर्माण होता हें, जिसके लिए उसकी माँ की भूमिका अहम होती है। वह जिस ढ़ाँचे में उसे निर्मित करना चाहे उसी ढ़ाँचे में परिवर्तित कर देती हैं। ऐसी ही आदर्श माता जीजा बाई थीं। उन्होंने अपने पुत्र शिवाजी को इस प्रकार प्रेरित किया कि वह मराठा साम्राज्य को मज़बूती से खड़ा कर सकें। जीजाबाई देवगिरि के यादव लखूजी जाधवराव की पुत्री थी। जो कि अहमदनगर के निजामशाह के दरबार में प्रभावशाली सरदार थे।

जाधवराव की सेना में मालोजी भोंसले नामक एक साधारण सैनिक था। एक बार होली के अवसर पर जाधवराव के यहाँ उनके बहुत-से सैनिक एकत्रित थे। मालोजी के साथ उनका पाँच वर्ष का पुत्र शाहजी भी था, जो बड़ा सुंदर था। जाधवराव ने इस बालक को बड़े प्रेम-से अपनी गोद में बैठा लिया। उसी समय उनकी तीन वर्ष की पुत्री जीजाबाई भी वहाँ आ गई। उन्होंने उसे गोद में उठा लिया। दोनों बालक वहाँ रखा हुआ अबीर-गुलाल उठाकर एक-दूसरे पर छिड़कने लगे। जाधवराव बालकों की इस क्रीड़ा को देखकर हर्ष-विभोर हो उठे उनके मुँह से निकला- "यह जोड़ी कितनी सुंदर है!"

जाधवराव ने यह बात हँसी में कही थी; परंतु वे उठकर खड़े हो गए और बोले, "आप सब लोग साक्षी हैं। आज से मालोजी हमारे समधी हुए।" उत्सव समाप्त होने के बाद जब जाधवराव ने अपनी पत्नी को यह बात सुनाई तो वह क्रोध में आकर पति से बोली "इस साधारण सिपाही के पुत्र के साथ मेरी पुत्री का विवाह नहीं हो सकता।" दूसरे दिन जाधवराव ने मालोजी को नौकरी से निकाल दिया। मालोजी अपने गाँव को लौट आए और खेती करने लगे।

कालातंर में मालोजी धनी आरै सम्पन्न हो गए। इस संबंध में एक कथा प्रसिदध् है। एक दिन मालोजी ने एक विशाल सर्प को बिल से बाहर आते हएु और थोड़ी देर बाद फिर उसी में घुसते हएु देखा। उन्होंने सुन रखा था कि सर्प ज़मीन में गड़े हएु धन की रक्षा करता है; अत: उन्होंने उस बिल को खोदना शरूु कर दिया। उसमें उन्हें स्वर्ण- मुद्राओं से भरी लोहे की सात कड़ाहियाँ मिली। इस धन से उन्होंने बहतु से तालाब-कुएँ बनवाए और बहुत से मंदिरों का जीणार्देधार करवाया। थोड़े ही दिनों में मालोजी की ख्याति इतनी फैली कि निज़ामशाह ने उन्हें अपना सेनापति बनाया आरै उन्हें शिवनेर, चाकड़, सूपा आदि की जागीर दे दी। अब निजामशाह के कहने से जाधवराव ने अपनी पुत्री जीजाबाई का

विवाह मालोजी के पुत्र शाहजी भोंसले के साथ कर दिया। इस विवाह में स्वयं निज़ामशाह भी उपस्थित थे।

उन दिनों मराठों की स्थिति सही नहीं थी। वे कभी दिल्ली के मुगल सम्राट की तरफ से तो कभी मुगलों से लड़ते थे। निज़ामशाह सुलतान के द्वारा धोखे से जीजाबाई के पिता और भाई का वध भी किया गया था। ऐसे दु:खी जीवन के साथ जीजाबाई शिवनेर के दुर्ग में रहा करती थीं। दुर्ग की अधिष्ठात्री देवी से वह हमेशा प्रार्थना करती थीं कि वह ऐसे पुत्र रत्न की प्राप्ति चाहती हैं जो मराठा राज्य की स्थापना करने में सफल हो।

10 अप्रैल, सन् 1627 ई० को जीजाबाई ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया, जिसका नाम शिवाई देवी के नाम पर ही उन्होंने शिवाजी रखा। यही बालक आगे चलकर छत्रपति शिवाजी के नाम से विख्यात हुआ और उसने अपनी माता के स्वतंत्र महाराष्ट्र राज्य के स्वप्न को पूरा किया।

माता जीजाबाई बड़े प्रेम से बालक शिवाजी को पूर्वजों के शौर्य और देश के प्राचीन वैभव की कहानियाँ सुनातीं और उनके हृदय में साहस, वीरता और महत्वाकांक्षा की भावनाएँ भरतीं। रामायण और महाभारत की कहानियाँ शिवाजी बड़े चाव से सुनते। फलस्वरूप कथा-पुराण सुनने और देवताओं में आस्था रखने में उनकी प्रवृत्ति बाल्यकाल से ही हो गई थी। इस प्रकार माता जीजाबाई की शिक्षा पाकर शिवाजी का धर्मनिष्ठ, मातृभक्त एवं महत्वाकांक्षी वीर युवक के रूप में विकास हुआ।

लगभग बारह वर्ष की उम्र में शिवाजी अपने पिताजी शाहजी तथा माताजी जीजाबाई के साथ बीजापुर गए। जहाँ उनके पिताजी सुलतान के मुख्यमंत्री के रूप में पद्स्थ थे। उस समय तक शिवाजी को माता जीजाबाई की शिक्षाओं ने इतना प्रभावित किया कि उन्हें बीजापुर का दरबारी जीवन पसंद न आया। उन्हें सुलतान को झुककर सलाम करना बिल्कुल भी अच्छा नही लगता था।

वे माता जीजाबाई से आकर दरबार की बातें और अपने पिता की आलोचना करते। माता जीजाबाई उनके स्वतंत्र विचारों की सराहना करतीं और उन्हें अलग राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करतीं, जिससे आत्मसम्मान की रक्षा हो सके। शाहजी ने देखा कि बालक शिवाजी को दरबारी जीवन पसंद नहीं है, तो उन्हें जीजाबाई के साथ पूना भेज दिया। पूना में रहकर शिवाजी स्वतंत्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे और वहीं उन्होंने अपनी माता से जागीर-प्रबंध की शिक्षा ग्रहण की।

माता जीजाबाई की प्रेरणा से शिवाजी ने छोटे-छोटे किले जीतकर स्वतंत्र महाराष्ट्र राज्य स्थापित करने का प्रयास प्रारंभ कर दिया। इससे उनकी ख्याति फैल गई और आस-पास के शासक उनसे डरने लगे।

एक बार माता जीजाबाई ने शतरंज के खेल में शिवाजी को मात दे दी। शिवाजी ने अपनी पराजय स्वीकार की और कहा, "माँ, आप इस जीत के लिए मुझसे कुछ भी माँग लें।" माँ बोली, "अगर देना ही चाहते हो तो मुझे सिंहगढ़ का दुर्ग दो।" सिंहगढ़ का पहाड़ी दुर्ग मुगलों के हाथ में था और वह अजेय समझा जाता था। उदयभानु नामक एक राजपूत सरदार मुगलों की ओर से उसका प्रबंध करता था। उदयभानु के पास बहुत बड़ी मुगल सेना थी, यह शिवाजी को भली-भाँति ज्ञात था। अत: उन्होंने अपने मित्र तानाजी मालसुरे के पास संदेश भेजा कि माता जीजाबाई तुरंत बुला रही हैं। तानाजी अपने पुत्र के विवाह की तैयारी में लगे थे, परंतु जीजाबाई का संदेश पाते ही वे चल पड़े। यह ज्ञात होने पर कि उन्हें सिंहगढ़ जीतना है, अपने छोटे भाई सूर्याजी को लेकर उन्होंने एक हजार सैनिकों के साथ सिंहगढ़ को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें उदयभानु और तानाजी दोनों मारे गए। किला मराठों के हाथ आ गया। शिवाजी को दुर्ग पर अधिकार हो जाने का हर्ष तो हुआ,

परंतु तानाजी की मृत्यु के समाचार से उनका हृदय विदीर्ण हो गया। वे माता जीजाबाई के पास जाकर रूँधे हुए कंठ से बोले, "गढ़ आला, पण सिंह गेला" अर्थात् गढ़ तो आ गया पर सिंह चला गया। माता जीजाबाई को भी तानाजी की मृत्यु से पुत्र-वियोग का-सा दुःख हुआ।

जीजाबाई ने शिवाजी को स्त्री मात्र का आदर करने की शिक्षा दी थी। इसीलिए शिवाजी ने अपने सैनिकों को विशेष रूप से आज्ञा दे रखी थी कि युद्ध में कभी भी स्त्रियों को बंदी न बनाया जाए और यदि कभी शत्रु-पक्ष की कोई स्त्री मिल जाए तो उसे सम्मानपूर्वक उसके संरक्षकों के पास भेज दिया जाए। जब शिवाजी के सेनापति आबाजी सोनदेव ने कल्याण प्रदेश के शासक मुल्ला अहमद की सुंदर पुत्र-वधू को बंदी बना लिया, तो शिवाजी ने उस बंदिनी में अपनी माँ के ही दर्शन किए और उसे बड़े आदर के साथ उसके ससुर के पास भेज दिया। धर्म के संबंध में जीजाबाई बड़ी उदार हृदया थीं और उनकी इस उदारता की शिवाजी पर पूरी छाप थी। वे भी सब धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने यह आज्ञा दे रखी थी कि कभी युद्ध में किसी मस्जिद को क्षति न पहुँचाई जाए और कुरान शरीफ़ का उचित सम्मान किया जाए। 6 जून, 1674 ई० को शिवाजी का छत्रपति शिवाजी के रूप में रायगढ़ के दुर्ग में बड़ी धूमधाम के साथ राज्याभिषेक हुआ। उस समय 'शिवराज की जय', 'छत्रपति शिवाजी की जय' के साथ-साथ 'माता जीजाबाई की जय' का गगन-भेदी नाद भी गूँज उठा।

शिवाजी के राज्याभिषेक के बारह दिन बाद अस्सी वर्ष की आयु में जीजाबाई का देहांत हो गया। एक स्वतंत्र महाराष्ट्र साम्राज्य की स्थापना का उनका स्वप्न पूरा हो चुका था।

शब्दार्थ

- हर्ष-विभोर अत्यंत प्रसन्न होना
- दुर्ग – किला
- ख्याति – प्रसिद्धता
- जीर्णोद्धार – पुराने भवनों की मरम्मत
- अधिष्ठात्री – स्वामिनी
- आस्था – विश्वास, भरोसा
- अजेय – जिसको जीता न जा सके
- वियोग – विछोह, दूर होना
- बंदी – कैदी
- क्षति – हानि

उच्चारण करें

कालांतर	जीर्णोद्धार	अधिष्ठात्री
प्रोत्साहित	धर्मनिष्ठ	मातृभक्त

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कहानी से मिलने वाली प्रेरणा के बारे में बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) जीजाबाई कौन थी?

(ख) मालोजी भोंसले किस पद पर कार्यरत थे?

(ग) अधिष्ठात्री माता शिबाई देवी का मंदिर किस जगह स्थित था?

(घ) ताना जी की मृत्योपरांत जीजाबाई के मुख से क्या वचन निकले?

(ङ) जीजाबाई का व्यक्तित्व किस प्रकार का था?

ज़रा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) जीजाबाई ने अपने सुपुत्र का लालन पालन किस प्रकार किया?

....

(ख) सिंहगढ़ के दुर्ग पर शिवाजी ने किस प्रकार विजय प्राप्त की?

....

(ग) माता जीजाबाई शिवाई देवी से क्या कामना करती थी?

....

(घ) जीजाबाई को आदर्श माता क्यों कहा गया?

....

3. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) शिवाजी का राज्याभिषेक कब हुआ?

6 जून 1674 ☐ 10 मई 1780 ☐

5 जून 1520 ☐ 3 फरवरी 1674 ☐

(ख) जीजाबाई को पुत्र-रत्न की प्राप्ति कब हुई?

8 अप्रैल 1630 ☐ 3 मई 1628 ☐

10 अप्रैल 1627 ☐ 2 जनवरी 1530 ☐

(ग) मालोजी भोंसले का वध किसने करने दिया था?

शिवाजी ☐ निज़ामशाह ☐ जाधवराव ☐ तानाजी ☐

(घ) सुल्तान के दरबार में शाहजी कौन से पद पर कार्यरत थे?

सेनापति ☐ मंत्री ☐ मुख्यमंत्री ☐ राज्याधिकारी ☐

(ङ) कौन- से राज्य का दरबारी जीवन शिवाजी को रास न आया?

दिल्ली ☐ पूना ☐ बीजापुर ☐ इनमें से कोई नहीं ☐

4. दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) बालक के चरित्र निर्माण .... की भूमिका अहम होती है।

(ख) .... देवी के आशीर्वाद से जीजाबाई को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

(ग) .... मे रहकर शिवाजी स्वतंत्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे।

(घ) सिंहगढ़ पर चढ़ाई के दौरान .... अपने पुत्र के विवाह की तैयारी कर रहे थे।

(ङ) शिवाजी के राज्याभिषेक के .... दिन बाद जीजाबाई का देहांत हो गया।

5. दिए गए शब्दों का उचित रूप से मिलान कीजिए।

मालोजी भोंसले	उदयभानु
सिंहगढ़ का शासक	शिवाजी के पिता
जीजाबाई	जाजाबाई के पुत्र
शाहजी भोंसले	आदर्श माता
तानाजी	साधारण सैनिक

ज़रा सोचिए Critical Thinking

6. जाधवराव की पत्नी ने मालोजी के पुत्र के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने से मना कर दिया था। ऐसा क्यों? सोच-समझकर बताइए।

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

7. दिए गए शब्दों में से विशेषण तथा विशेष्य शब्दों को चुनकर लिखिए।

साधारण सैनिक विशाल बहुत श्रेष्ठ

ज़्यादा सभी कड़वा सुगंधित

विशेषण	विशेष्य
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

8. दिए गए रिक्त स्थानों में द्वित्व व्यंजन के दो-दो उदाहरण लिखिए।

द्वित्व व्यंजन – जब व्यंजन अपने आप को दो बार दोहराएँ यानी पहले स्वर रहित व्यंजन के बाद वही स्वर युक्त व्यंजन आता है तब वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है। जैसे– कच्चा, पक्का आदि।

त् + त ....

म् + म ....

क् + क ....

द् + द ....

9. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्दों को अलग करके लिखिए।

बर्हिगमन – .... + ...

अंतर्राष्ट्रीय – .... + ...

दुष्कर्म – .... + ...

आविष्कार – .... + ...

पुनर्निर्माण – .... + ...

10. अनेक शब्दों को पहचान करके एक शब्द बनाएँ।

(क) जिस पर विश्वास किया जा सके। ....

(ख) जिससे कोई आशा न रह गई हो। ....

(ग) जो प्रशंसा के योग्य हो। ....

(घ) सदा सत्य का आचरण करने वाला। ....

(ङ) जिसे जीता न जा सके। ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. ''आधुनिकता के इस दौर में मातृत्व सुख में क्षय का आभास प्रतीत होता है। क्या आप इससे सहमत है, कक्षा में चर्चा कीजिए।

....

12. शास्त्रों में स्त्री को जगत जननी कहा गया है। ऐसा क्यों? उदाहरण स्वरूप लेखन करें।

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. शिवाजी एक प्रसिद्ध मराठा शासक थे। उनसे संबंधित कुछ प्रमुख तथ्य बताइए।

(क) शिवाजी का साम्राज्य भारत के किन-किन राज्यों में स्थित था?

(ख) शिवाजी की शासन व्यवस्था को किस नाम से जाना जाता था?

(ग) किस मुगल सम्राट ने शिवाजी को बंदी बनाकर रखा था?

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

14. माता-पिता पूजनीय होते हैं। स्वयं को उनके सामने आदर भाव से व्यक्त करना चाहिए। आप इन विचारों के साथ स्वयं को किस प्रकार अभिव्यक्त करना चाहेंगे?

अध्याय 16

तात्या टोपे
(संवाद)

अध्ययन से पूर्व

(दृश्य-एक)

(घोड़ों के टापों की आवाज़, धीरे-धीरे घुड़सवार एकत्र हो जाते हैं, टापों की आवाज़ के साथ-साथ तात्या टोपे की जय का नारा लगता है।)

रावसाहब पेशवा – कई दिनों से फिरंगी हमारा पीछा कर रहे हैं पर आज पहली बार उनसे पीछा छुड़ाकर हम शांति से एकत्र हुए हैं। अब कुछ सोचने का अवसर मिला है। आगे क्या करना है, इसके बारे में सोचा जाए।

एक सरदार – मैं महारानी के साथ बराबर अंग्रेज़ों से लड़ता रहा। मैं अब भी लड़ने को तैयार हूँ पर महारानी के वीरगति प्राप्त हो जाने तथा नाना साहब के लुप्त हो जाने के बाद क्या यह उचित होगा कि हम आगे लड़ें? अंग्रेज़ों की प्रबल सेना के विरुद्ध हम सौ-दो-सौ वीर क्या कर सकते हैं? सेनापति! आप ही बताइए।

तात्या टोपे – राजनीति तो यही कहती है, जो तुम कहते हो। पर प्यारे भाई! राजनीति से भी बढ़कर एक और नीति होती है। मैं तो उसी का अनुयायी हूँ। (ज़ोर से) सरदार! क्या तुम समझते हो कि राजनीतिक दाँव-पेच के लिए मैं झाँसी से निकल आया हूँ? नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे तो अब आशा है कि यदि भारत की जनता मेरा साथ दे तो मैं उन गोरों को सागर पार करा सकता हूँ।

यदि ऐसी आशा न होती तो मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था, झाँसी के युद्ध में शहीद हो जाना चाहिए था। (तलवारों की झनझनाहट के साथ तात्या टोपे की जय की आवाज़)

सरदार – सेनापति! मैं पूर्ण रूप से आपके साथ हूँ पर मेरा मन कुछ ऐसा कहता है कि इस समय अंग्रेज़ों की चढ़ती है, भारतीयों में एकता नहीं है, इसलिए सफलता की आशा बहुत थोड़ी है।

तात्या टोपे – मेरे प्यारे भाई! हमेशा सफलता से ही प्रत्येक बात को कूता नहीं जाता। मैं तो इस संबंध में सोचता हूँ कि यदि हम सौ-दो-सौ आदमी कुछ नहीं कर सकते, तो घर लौटकर भी हम क्या कर लेंगे? इससे तो अच्छा है कि हम एक उदाहरण प्रस्तुत कर जाएँ, जिससे बाद में स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाले प्रेरणा लें। मैं तो गीता के उस वचन में विश्वास करता हूँ कि लड़ते हुए मरेंगे तो स्वर्ग प्राप्त होगा और यदि जीत जाएँगे तो स्वतंत्र भारत के दर्शन होंगे। किसी दशा में भी हमें अपने झंडे को झुकाना नहीं चाहिए।

रावसाहब पेशवा – हमारी शक्ति कम है, इस बात को देखकर हमें अब अंग्रेज़ों के सम्मुख युद्ध नहीं करना है।

हम तभी लड़ेंगे जब समझेंगे कि शत्रु हमारी ओर से सचेत नहीं है। हमें अपनी शक्ति की रक्षा करनी है, साथ ही राजाओं और जनता से संपर्क स्थापित करना है। हमें ....
....

(एक घोड़े की टाप की आवाज़)

दूत – (आकर घबराहट में) सेनापति! अंग्रेज़ों की एक टुकड़ी बहुत ही पास आ गई है।

तात्या टोपे – मैं ऐसी आशंका कर रहा था। अंग्रेज़ जानते हैं कि हम लोगों पर ही उनके साम्राज्य का वर्तमान और भविष्य लटक रहा है। हम भी तैयार हैं, सब लोग तैयार हो जाएँ, अच्छा चलो, भारत माता की जय ....।

(प्रस्थान)

अंग्रेज़ – वैल जासूस टुम अम को किडर लाया। किडर लाया। इडर टो कोई भी नई अय।

जासूस – (घबराहट में बोलता हुआ) हुज़ूर! अभी तो यहीं थे। देखिए न चारों तरफ की झाड़ियाँ घोड़ों से रौंदी हुई हैं। यह देखिए घोड़े की एक नाल। अभी वे यहीं थे।

अंग्रेज़ – यह लो टुम अपनी बख्शीश (गिनने में पाँच रुपयों की आवाज़) क्विक मार्च। (घोड़े की टापों की आवाज़)

(दृश्य-दो)

रावसाहब पेशवा – यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। कई दिनों से भागते-भागते हमारी सेना इतनी थक गई है कि अब वह भाग नहीं सकती। सेनापति! अब क्या राय है?

तात्या टोपे – अब भाग नहीं सकते तो लड़ेंगे। मैंने तो यही सीखा है। किसी भी हालत में खड़े-खड़े शत्रु के हाथों में आत्मसमर्पण नहीं करना है। यदि भाग्य ने यही तय कर रखा है कि हमें शहीद होना है तो उसके लिए प्रस्तुत हैं।

रावसाहब पेशवा – शत्रु की सेना के पास चार तोपें भी हैं। सेना के पास और भी शस्त्र मालूम होते हैं। वह हमारी ओर बढ़ रही है।

तात्या टोपे – पर क्या! चलो और शत्रु पर टूट पड़ो।

रावसाहब पेशवा – ठहरिए, देखिए सामने शत्रु-सेना ठहर गई। उसमें से एक व्यक्ति, जो निहत्था है, हमारी तरफ आ रहा है। शायद वह कुछ संदेश ला रहा हो।

सरदार – शायद वह यह संदेश ला रहा हो कि हम बिना लड़ाई के आत्मसमर्पण कर दें।

तात्या टोपे – ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं तो कहता हूँ कि आगे बढ़कर लड़ाई आरंभ कर दी जाए।

रावसाहब पेशवा – नहीं, सेनापति जी! ठहरिए। दूत अवध्य होता है। (चिल्लाकर) सुनो जी दूत! तुम किसलिए आ रहे हो? यदि इसलिए आ रहे हो कि हमें लड़ाई से रोकना चाहते हो तो वहीं से लौट जाओ। हम भी तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहे हैं।

दूत – (पास आता हुआ) हम आपको लड़ाई से रोकने तो आए हैं पर जैसे आप समझते हैं वैसे नहीं (पास आकर) तात्या टोपे की जय। मैं आपको प्रणाम करता हूँ वीरवर! यह न समझिए कि केवल आपके ये अनुयायी ही आपके साथ हैं। आज समुद्र से हिमालय तक लाखों भारतवासी देश को स्वतंत्र देखना चाहते हैं। हमारी सेना आपकी है, आज्ञा दीजिए। (एड़ियों को पटक कर सलामी देता है) मैं सलामी देता हूँ।

तात्या टोपे – आओ, आओ तुम मेरे भाई हो। तुम्हारे जैसे वीरों के भरोसे पर ही मैंने इतने बड़े शासन से युद्ध ठाना है। नहीं तो हम दो-चार सौ आदमी क्या कर सकते हैं?

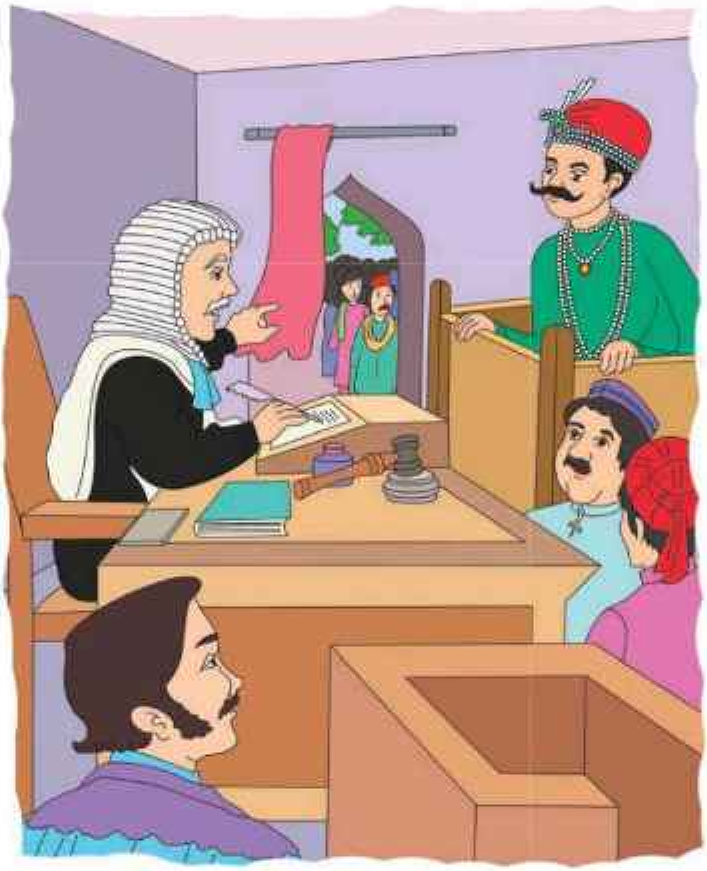

रावसाहब पेशवा – यहाँ कोई अंग्रेज़ सेना नहीं है, नहीं तो चलकर पहले उसी को खत्म कर लें।

दूत – नहीं, यहाँ कोई अंग्रेज़ सेना नहीं है पर जल्दी ही एक बड़ी सेना आ जाएगी। उनके आने के पहले ही हमें कुछ सोच लेना पड़ेगा।

तात्या टोपे – हमें अपनी शक्ति नष्ट नहीं करनी है। पहले बूँद-बूँद सागर बन जाने दो, फिर हम पहाड़ को भी ढहा देंगे। चलो, हम लोग अपने और भाइयों से मिलें। वे प्रतीक्षा कर रहे होंगे। स्वतंत्र .... भारत माता की जय ।

(घोड़ों की टापों की आवाज़ दूर तक जाती है, फिर उधर से "स्वतंत्र भारत माता की जय। तात्या टोपे की जय।" की आवाज़ें आती हैं।)

(दूत धोखा देकर तात्या को अंग्रेज़ अधिकारी के सामने ले जाता है)

(दृश्य तीन)

(पर्दा उठता है, अदालत में तात्या और जज)

जज – तुमने सरकार को धोखा दिया। इसका न्याय होगा।

तात्या टोपे – यह न्याय का तमाशा क्यों कर रहे हो? मैं जानता हूँ कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने के कारण मुझे फाँसी होगी। फिर यह ढोंग क्यों? मैं न तो कोई न्याय चाहता हूँ और न इस मुकद्मे में कोई भाग लेना चाहता हूँ।

जज – नहीं तुम्हारे साथ न्याय होगा, तुम को जो कुछ कहना हो, कहो।

तात्या टोपे – अरे अंग्रेज़ ! न्याय के नाम को बदनाम मत करो। मैं हार गया, मुझे सीधे से फाँसी दे दो।

न्याय तो तब होगा जब हमारे देशवासी जागेंगे। मैं तो मर जाऊँगा, पर देर या सवेर न्याय होकर रहेगा। मैं तुमसे न्याय नहीं चाहता।

जज – महारानी का राज्य तो अमर रहेगा, क्योंकि यह कानून और इंतजाम पर खड़ा है।

तात्या टोपे – निराधार, कोई भी साम्राज्य हमेशा नहीं रहा। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि कभी-न-कभी तुमको यहाँ से बोरिया-बिस्तर बाँधकर भागना ही पड़ेगा।

जज – तुम्हें फाँसी की सजा इसलिए सुनाई जाती है क्योंकि तुमने महारानी के राज्य के खिलाफ बगावत किया।

तात्या टोपे – यह और बात है कि इस समय तुम प्रबल हो और मुझे फाँसी दे रहे हो पर दोष हमारा नहीं है।

हम तो तुम्हारे देश पर चढ़ाई करने नहीं गए, तुम्हीं हज़ारो ं मील से हमारे देश पर अत्याचार करने और उसे लूटने के लिए आए हो। मै ंने तो केवल अपनी क्षुद्र शक्ति से उसे रोका। मैं असफल रहा, इस कारण तुम मुझे फाँसी दे रहे हो। पर याद रखना, एक दिन तुम यहाँ से निकाले जाओगे और भारत स्वतंत्र होगा। स्वतंत्र भारत की जय। भारत माता की जय।

जल्लाद – लो जल्दी करो, देर हो रही है। लुहार! जल्दी से कैदी की बेड़ियाँ काट दो।

तात्या टोपे – बेड़ियाँ काटने की क्या आवश्यकता है? मेरे मन को तो तुम और तुम्हारे स्वामी कभी बेड़ी नहीं पहना सके। रहा शरीर, वह तो तुम लोगों का कैदी ही है।

जल्लाद – मैं यह सब कु छ नहीं जानता। फँासी के पहले बेड़ी काटने का रिवाज़ है। लुहार! जल्दी करो।

(बेड़ियाँ काटने की आवाज़ .... अंत में बेड़ियाँ काटकर अलग कर दी जाती है)

तात्या टोपे – कभी इसी प्रकार हमारी भारत-माता की बेड़ियाँ कटेंगी। स्वतंत्र भारत की जय! भारत माता की जय!

जल्लाद – लाओ मैं तुम्हारे गले में फंदा डाल दूँ।

तात्या टोपे – मैं खुद गले में फंदा डाल देता हूँ। लो .... यह फंदा डालता हूँ, स्वतंत्र भारत की .... जय .... जय।

(तख़्ता गिरने की आवाज़। राष्ट्रीय संगीत)

शब्दार्थ

निहत्था	=	खाली हाथ	प्रबल	=	भारी
बख़्शीश	=	घूस	सचेत	=	सावधान
आशंका	=	संदेह	ढोंग	=	दिखावा
			वीरगति	=	शहीद होना

उच्चारण करें

अनुयायी साम्राज्य आत्मसमर्पण विरुद्ध

बग़ावत मुकदमे क्षुद्र

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को तात्या टोपे के जीवन और उनके स्वतंत्रता संग्राम के विषय में जानकारी प्रदान करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) तात्या टोपे को गीता के कौन से वचन में विश्वास था?

(ख) शत्रु की सेना के पास चार क्या थी?

(ग) लाखों देशवासी भारत को कैसा देखना चाहते हैं?

(घ) किसकी सेना का व्यक्ति निहत्था आगे बढ़ रहा था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) तात्या टोपे भारतीय जनता का सहयोग क्यों चाहते थे?

....

(ख) तात्या टोपे के गले में फंदा किसने और क्यों डाला?

....

(ग) राव साहब पेश्वा युद्ध को टालने के पक्ष में क्यों थे?

....

(घ) तात्या टोपे ने लड़ते हुए किसकी प्राप्ति की बात कही थी?

....

3. किसने कहा, किससे कहा?

(क) भारतीयों में एकता नहीं है, इसलिए सफलता की आशा बहुत थोड़ी है?

....

(ख) लड़ते हुए मरेंगे तो स्वर्ग प्राप्त होगा और जीत जाऐंगे तो स्वतंत्र भारत।

....

(ग) वह हमारी ओर बढ़ रही है।

....

(घ) मैं आपको प्रणाम करता हूँ वीर।

....

4. सही जोड़े बनाओं

(क) स्वतंत्र	संपर्क
(ख) जनता	साम्राज्य
(ग) अंग्रेज़	बेड़िया
(घ) कैदी	भारत

5. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए।

(क) तात्या टोपे के गले में फंदा किसने डाला?

☐ अंग्रेज़ ☐ ज़ल्लाद ☐ पेशवा रॉव ☐ स्वयं तात्या टोपे

(ख) जासूस ने घोड़े की क्या देखी?

☐ नाल ☐ पूँछ ☐ पट्टा ☐ रस्सी

(ग) चार तोपें थी–

☐ अंग्रेज़ों के पास ☐ दूत के पास

☐ तात्या टोपे के पास ☐ पेशवा के पास

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. सरदार को ऐसा क्यों लगता था कि वह असफल हो जाऐंगे? अपने विचारों को लिखकर प्रकट कीजिए।

....

....

....

....

....

7. भारतीयों में एकता नहीं है इसलिए सफलता की आशा कम है। गुलाम भारत की क्या यही सच्चाई थी या कुछ और? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

8. वर्तमान समय का भारत किस प्रकार की बेड़ियों में जकड़ा पड़ा है? सोचकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

9. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) वीरगति को प्राप्त होना- ....

(ख) लोहे के चने चबवाना - ....

(ग) दाँत खट्टे करना - ....

(घ) प्राण मुँह को आना - ....

10. दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर सही विराम-चिह्न का प्रयोग कीजिए।

(क) लोग कहने लगे भई वाह तुम तो उस्ताद हो

(ख) अरे तुमने तो कमाल ही कर दिया

(ग) वही तो नहीं जो यहाँ खड़ा था

(घ) तुम यहाँ से जा तो नहीं रहे

11. सही क्रियाविशेषणों पर (✓) का अथवा गलत क्रियाविशेषणों पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) राजा प्रजा का **सेवक** है। ( )

(ख) आप **धीरज** रखिए। ( )

(ग) **जब** आवश्यकता हो बुला लो। ( )

(घ) **इतनी** शीघ्रता ठीक नहीं। ( )

12. दिए गए शब्दों का समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए।

	समास	समास-विग्रह	समास का नाम
(क)	शोकमग्न	....	....
(ख)	सत्याग्रह	....	....
(ग)	राजा-रंक	....	....
(घ)	तिरंगा	....	....
(ङ)	आजीवन	....	....

जरा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

13. तात्या टोपे के विषय में (10-15) पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

14. स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों की एक सूची तैयार कर उनके बारे में विस्तारपूर्वक लिखिए।

....

....

....

15. 'आज़ादी और गुलामी' यदि आपस में बात कर पाते तो, क्या बात करते? कक्षा में आपसी चर्चा कीजिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

16. 'स्वतंत्रता राष्ट्र की सबसे बड़ी धरोहर है।' आप इस धरोहर को कायम रखने के लिए क्या करना चाहेंगे?

अभ्यास प्रश्न पत्र-1

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) युधिष्ठिर ने दुर्योधन को किन गुणों का सहारा लेकर हराया?

(ख) महाराणा प्रताप की कितनी संताने थी?

(ग) स्वतंत्रता पश्चात् सरोजनी नायडू को किस पद से सम्मानित किया गया?

(घ) ऐनीबेसेंट द्वारा रचित पुस्तक का नाम बताइए।

(ङ) जीजाबाई को आदर्श माता क्यों कहा जाता है?

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) "......................." इब्राहिम गार्दी के मुँह से निकला अंतिम शब्द था।

(ख) भगत सिंह ने पिता को लिखे पत्र में स्वयं को उनका .... बताया।

(ग) तानाजी की मृत्यु पश्चात् शिवाजी के मुँह से निकला .... पर सिंह गया।

(घ) कभी इसी प्रकार हमारी भारत-माता की .... कटेंगी।

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) तीन दिवस तक सिंधु से किसने पथ माँगा?

☐ समुन्द्र ने ☐ रघुपति ने ☐ दुर्योधन ने ☐ युधिष्ठिर ने

(ख) सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी कहाँ स्थित थी?

☐ पुणे ☐ उज्जैन ☐ राजस्थान ☐ प्रयागराज

(ग) 'स्नेह-शपथ' कविता के रचयिता कौन हैं?

☐ द्वारिका प्रसाद द्विवेदी ☐ रामचंद्र शुक्ल

☐ भवानी प्रसाद मिश्र ☐ निराला जी

(घ) चंदनवाड़ी चोटी की ऊँचाई कितनी है?

☐ अठारह हज़ार ☐ पन्द्रह हज़ार ☐ चौदह हज़ार ☐ इनमें से कोई नहीं

4. रेखांकित क्रियाविशेषण अव्ययों के भेदों के नाम लिखिए।

(क) मैं आपको <u>अभी</u> बताऊँगा। ....

(ख) वह धीरे-धीरे सुबकने लगा। ....

(ग) वह भीतर गया पर वापस नहीं आया। ....

(घ) इधर-उधर मत देखो, पढ़ लो। ....

5. उचित मिलान कीजिए।

(क) भारत कोकिला	(i) उदयभानु
(ख) शुजाउद्दौला	(ii) राजपूत राजा
(ग) महाराणा प्रताप	(iii) अवध का नवाब
(घ) स्वतंत्र	(iv) भारत
(ङ) सिंहगढ़ का शासक	(v) सरोजनी नायडू

6. निर्देशानुसार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा का भेद लिखिए।

(i) रामायण – .... (ii) हँसी – ....

(iii) लड़का – .... (iv) दूध – ....

(ख) संधि कीजिए।

(i) प्रति+एक – .... (ii) महा+ईश – ....

(iii) उत्+लास – .... (iv) मन:+बल – ....

(ग) वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(i) व्यर्थ = ... + ... + ... + ... + ...

(ii) ज्ञान = ... + ... + ... + ... + ...

7. दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) आँखों में धूल झोंकना

....

(ख) हक्का-बक्का रह जाना

....

(ग) खून-पसीना एक करना

....

(घ) आप भले तो जग भला

....

अभ्यास प्रश्न पत्र-2

नाम .... कक्षा .... अनुक्रमांक ....

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) रहीम ने थोड़े दिन की विपदा को भली क्यों कहा है?

(ख) श्यामू के उपद्रव मचाने के पीछे क्या वज़ह थी?

(ग) तात्या टोपे भारतीय जनता का सहयोग क्यों चाहते थे?

(घ) विजय शक्ति की प्राप्ति कैसे संभव है?

(ङ) राज्यपाल ने तान्या के सम्मान में क्या कहा?

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) विक्रमादित्य ने कभी किसी .... को दंडित नहीं किया।

(ख) .... की योग्यता और देश सेवा से प्रभावित होकर काँग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना।

(ग) दुनिया में .... और ईमानदारी लुप्त हो गई है।

(घ) .... एक ही डाँट में मुखबिर बन गया।

3. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) समारोह में तान्या तथा उसकी माँ को किसने सम्मानित किया?

☐ शिक्षक ने ☐ प्रधानाध्यापक ने ☐ जिला मजिस्ट्रेट ने ☐ राज्यपाल ने

(ख) भोला लड़का था–

☐ दासी का ☐ विश्वेश्वर का ☐ गुरुजन का ☐ श्यामू का

(ग) किस भार को लेकर कवि चल रहा है?

☐ सफलता ☐ असफलता ☐ परिश्रम ☐ आलस्य

(घ) शिवाजी का राज्याभिषेक कब हुआ?

☐ 6 जून 1674 ☐ 10 मई 1780 ☐ 5 जून 1520 ☐ 3 फरवरी 1674

4. निर्देशानुसार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द
(i) पर्यावरण	–	....	....
(ii) उत्कर्ष	–	....	....

(ख) इक, आहट प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए।

(i) इक – ....

(ii) आहट – ....

(ग) दो-दो पर्यायवाची लिखिए।

(i) अतिथि – ....

(ii) आनंद – ....

(घ) वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(i) जिसकी आयु लंबी हो – ....

(ii) जानने की इच्छा – ....

(iii) जिसे जीता न जा सके – ....

(iv) सदा सच बोलने वाला – ....

(ङ) दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) लोहे के चने चबाना

....

(ii) खून खौलना

....

(iii) दिन-रात एक करना

....

(iv) कठिन परिश्रम करना

....

(च) दिए गए वाक्यों को बदलकर लिखिए।

(i) आप अंदर आइए और बैठ जाइए। (सरल वाक्य)

....

(ii) आपने कठिन परिश्रम किया और उत्तीर्ण हो गए। (मिश्र वाक्य)

....